भैया, अएलै अपन सोराज

नाटक संग्रह

नाटककार

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशक

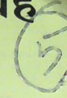


जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान

जनकपुरधाम

भैया, अएलै अपन सोराज

नाटक संग्रह



रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'





अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन: २०६७ के अवसर पर

जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित

नेपालीय मैथिलीक लोकनाट्यधर्मी शेक्सपीयर 'भ्रमर'क ई नाटक-संग्रह साहित्य प्रेमी आ' नटकिया दूनू लेल ध्यातव्य । एकरा कीनिकऽ पढ़ू आ' मंचपर खेलाउ । अपूर्व आनन्द भेटत । फिल्मक जतेक कादो माथमे जमा होयत से सभटा कमलाक धारमे धुलि जायत । कमलामे फुलाइत नाट्यकमलपर संगीत-नृत्य प्रस्तुत करैत बहुमुखी रचनाशील 'भ्रमर'क साहचर्य्यक सुख भेटत । ओ एक्के संग गाम-घर, जनकपुरधाम आ' राजधानी काठमाण्डोसँ जुड़ल रहलाह अछि आ' कर्मठता कतेक छनि तकर उदाहरण अछि 28 वर्षसँ लगातार प्रकाशित होइत समाचारपत्र 'गामघर' । हिनक लेखनमे गामघरक संस्कृति सुरभित अछि ।

नाटक पाठक आ' संस्कृत-अंग्रेजीनिष्ठ शिक्षक लेल नहि, दर्शक लेल होइत अछि– ई ख्याल आलोचककेँ नहि रहैत छनि । एहि संग्रहमे देल गेल चन्द्रेशजीक विवेकपूर्ण समीक्षा पाठक लेल वरदान सिद्ध होयत । नाटक माने जे मंचित हुए । भ्रमर विद्वान विविधतामण्डित नटकिया (अभिनेता, निदेशक, मंचसंचालक) छथि । कलाकार साहित्यकार बहुआयामी व्यक्तित्व, नचैत वक्तव्य, मुक्तहृदय भाषण... एखन विकृत फिल्मी युगमे सभ्यता-संस्कृतिकेँ बचेबाक लेल एहेन रचनाकेर आवश्यकता जे स्थानीयताकेँ टी.भीं.पर देखाय विश्वमे अपन विशेषता सिद्ध करत । सिनेमा तऽ रोग-भोगक बजार भऽ गेल अछि । आब पुनः विश्व मूल सभ्यता-संस्कृतिक खोज करऽ लागल अछि, जाहिसँ एशिया-अफ्रीकाक हीनभावना समाप्त होमय लागल अछि ।

'भ्रमर' सभ फूलपर तऽ बैसिते छथि, संगीतमय गुंजार सेहो करैत छथि । माधुर्य मैथिलीक विशेषता, कियैक तऽ ई ह्रस्व प्रधान भाषा थिक; संगहि नेपालक नर्तित हुलसित वातावरण, प्राकृतिक हृदयस्थली, चमकैत नयन, सामाजिक विषमतासँ चकराइत मोन हमरा बुझने नवशैलीमे सभक मंचन हो तऽ इतिहासे नहि व्यवहार बनि जायत । हम हिनका छात्र जीवनसँ जनैत छी– डा० धीरेन्द्रक ध्वजकेँ हिमशिखर धरि लऽ जयबाक हिनक अनुपम जीवनयात्रा पर सेहो नाटक लिखल जाए। तखन, मैथिलीकेँ बूझि पड़तैक जे 'भैया, अएलै अपन सोराज' । तथास्तु ।

–सोमदेव

26/12/2010



रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

जन्म : २००८ साल, साओन, बघचौड़ा, जि. धनुषा

शिक्षा : एम.ए. (त्रि.वि.वि.) पी-एच.डी. (मानद)

सम्प्रति : सदस्य, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमाण्डू, नेपाल

प्रकाशित कृति :

काव्य : बन्न कोठरी औनाइत धुआँ (कवितासंग्रह) : २०२९ साल, नहि, आब नहि (दीर्घकविता) २०३६ साल, मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल), अप्पन अनचिन्हार (कवितासंग्रह) : १९९० ई., भयो अब भयो (अनुवाद) बस, अब नही (अनुवाद)२०६७।

कथासंग्रह : तोरासंगे जएबौ रे कुजवा (कथासंग्रह) १९८४ ई., हुगली ऊपर बहैत गंगा (कथासंग्रह) २०६५

नाटक : रानी चन्द्रावती : २०४५ साल, एकटा आओर वसन्त : २०५२ साल, महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक : २०५४ साल, भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू (नेपाली अनुवाद) २०६४, भैया, अएलै अपन सोराज(नाटक संग्रह)२०६७।

शोध : जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू : २०५६ साल, राजकमलक कथासाहित्यमे नारी : २०६४ साल, लोकनाट्य : जट-जटिन : २०६४ : Cultural Heritage of Janakpur : २०६२ साल, मैथिली लोक संस्कृति (आलेख-संग्रह, नेपाली) २०६६।

विविध : आजको धनुषा : २०३९ साल, जनकपुर लोकचित्र : २०४६ साल, समयको अन्तराल पछयाउँदै (नेपाली), २०६६,ठेकान पर (विचार-संग्रह)।

सम्पादन : मैथिली पद्यसंग्रह : (नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान) : २०५१ साल, लाबाक धान (कवितासंग्रह) २०५१ साल, त्रिशूली (माथुरद्वारा लिखित खण्डकाव्य) २०४९ साल, नेपालक मैथिली पत्रकारिता : २०४४ साल, मैथिली लोकनृत्य : भावभंगिमा एवं स्वरूप (नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान) २०६१, अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल : २०६५ साल, हम और तुम (हिन्दी कवितासंग्रह) : २०६६ साल, मैथिली नाटक संग्रह, २०६६ साल।

पत्रकारिता : नेपालक प्रथम मैथिली साप्ताहिक 'गामघर'क सम्पादन-प्रकाशन : २०३९ सालसँ अद्यपर्यन्त, दैनिक जनकपुर एक्सप्रेसक सम्पादन-प्रकाशन विगत कयक वर्ष सँ, अर्चना, आंजुर आ ने.प्र.प्र.क मैथिली पत्रिका आंगनक प्रधान सम्पादक। नेपाली, हिन्दी, मैथिली, अंग्रेजी पत्र-पत्रिकामे आलेख प्रकाशित होइत रहैत अछि।

सम्मान : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानद्वारा प्रदत्त प्रथम 'मायादेवी प्रज्ञापुरस्कार' द्वारा सम्मानित : २०५२ साल, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गाद्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान, शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा 'शेखर सम्मान', ने. मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुरद्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान, मधुरिमा नेपालद्वारा 'मधुरिमा सम्मान' आदि दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त।

सम्पर्क : १।५५५, सरस्वती सदन, जनकपुर, फो.नं. ०४१-५२०२६७, ९८५४०२०८८९

हाल : मैतीदेवी, काठमाण्डू, फो.नं. ०१-४४४४९६८, मो. ९८४११६४७७०

ISBN NO- 978-99946-818-3-9

भैया, अएलै अपन सोराज

नाटक संग्रह

नाटककार

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशक



जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान

जनकपुरधाम

भैया, अएलै अपन सोराज

नाटककार : रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'



प्रकाशन वर्ष : २०६७ साल पुस ७ गते

: २२ दिसम्वर, २०१०

प्रति : ५००

मोल : नेपाली - रु.३००।-

भारु - रु.२००।-

संस्थागत - रु.500।-

वितरक

- रेलवे बूक स्टाल, जनकपुर
- शेखर प्रकाशन, पटना

मुद्रक - प्रिंटवेल, दरभंगा

ISBN No. - 978-99946-818-3-9

Bhaiya, Ailai Apan Soraj

(Drama Collection)

By

Ram Bharos Kapari 'Bhramar'

Mobile : 9841164470, 9854020889

email : rbkapari@hotmail.com

मैथिली नाटक लेखनक पीड़ा

कथा, कविता, उपन्यास किंवा लेख आदि लोक छपएबाक हेतु लिखैत अछि। पाठक पढ़ए आ एकटा विचार, चिंतन तकरा सम्बन्धमे विकसित होइक। लेखक ताहीमे तिरपीत रहैत अछि। मुदा, नाटकक सम्वन्धमे ई बात नहि। नाटक पढ़बासं बेसी देखबाले' लिखल जाइत अछि। लोक देखए आ ताहिपर चिंतन करए।

मुदा, नेपालक आधुनिक कालमे ई सौभाग्य नेपालक नाटककार लोकनिकें खास नहि भेटलनि जे ओ नाटक लिखथि आ तकर मंचन भऽ सकैक। एकर सम्पूर्ण संभावना कोनो एक नाटककारक ईर्द-गीर्द घूमैत रहि गेलैक। जे लिखबाक हिम्मतो कएलक तकरा एना कऽ लताराल गेलै, ओहो अपन प्रतिभा, ओजकें वलि पर चढा हुले-हुलेमे लागि गेल। परिणाम भेलै जे नेपालक माटि-पानिक व्यथा-कथा, जीवन-यापन, लोक-व्यवहार, रीति-नीतिसँ भरल नाटक जे अबितैक से नहि आबि पएलकै आ हम सभ अपने आप अपनाकें 'अयोग्य', 'असक्षम' 'स्तरहीन' नाटककारक आस्पद पबैत रहलहुँ। एहि लगभग दू दशकक सुनियोजित अभियानसँ नेपालमे नाटककारक कोनो स्तर नहि छैक से प्रमाणित करबाक खूब प्रयास भेल, एखनो जारी अछि।

तेहने सन अवस्था, अभियानक प्रखर 'चलखेल'क बीचमे हमरा नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान (तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान)क हेतु श्रद्धेय तत्कालीन उपकुलपति डा. ईश्वर वरालक आग्रह पर एकटा नाटक लिख' पड़ल-**एकटा आओर वसन्त**। २०५० सालमे एक सप्ताहमे तैयार कऽ प्रज्ञामे प्रदर्शनक हेतु पठाओल गेल। ओ नाटक कोना स्वीकृत भेल, कोना एत्त हड़बड़ीमे तैयारी कएल गेल, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्रमे सकिय महिला सरस्वती चौधरी कोना महिला पात्रक अभावें राताराती प्रमुख भूमिकामे मंचपर उतारल गेलीह, कोना सर्वश्रेष्ठ अभिनेताक पुरस्कार बलराम राय प्राप्त

कएलक - सभ कथा अपना ठाममे अछि। एकरा बादे हमर नाटक लेखनक क्रम शुरु भेल जे एखनो दोगदागमे चलैत रहैत अछि।

हमर कतेको नाटकक मंचन भेल अछि। भाषान्तरमे सेहो मंचन कएल गेल अछि। नेपाली अनुवाद रेडियो नेपालसँ प्रसारित भेलापर अनेको प्रशंसाक फोन आएल छल। मुदा, किछु गोटेकें एखनो हमरा सभक नाटक अरघैत नहि छन्हि। स्तरहीन बुझाइत छन्हि तँ ई नाटकक नहि, दृष्टिदोष मात्र कहल जा सकैछ। सत्य तँ ई थिकै जे लेखन त' एकटा कला छैक, सौन्दर्य छै। जकर फूट-फूट आनन्द होइछ, भाव होइछ। केओ ककरो प्रभावित वा प्रताड़ित नहि करैछ, बरु सौन्दर्यमे समष्टिकरण क' ओकर शोभाकें आर बढबैत छैक। हम तँ ओहन कलाकारकें सदैव सम्मान कर' चाहैत छी। मैथिलीमे बड़ थोड नाटककार छथि-हम सभके समानरूपें आदर करैत छियनि। प्रयोग आ विस्तृतिकरणक जे अपेक्षा, आहलाद नव नाटककार लोकनिमे छन्हि। ओ ओहि विधाकें आम दर्शकसँ आर नीक जकाँ जोड़लकैक अछि। ई नीक संकेत अछि।

हमर अधिकांश नाटक सभ एहि संग्रहमे राखल अछि। 'मिथिलामिहिर'मे तीन दशक पूर्व छपल 'भरल खत्ताक मरम' हमर नाटक एहिमे नहि अछि। चन्द्रेशजी सेहो ओकर चर्च नहि कएलनि अछि। वास्तवमे गामक मलाह जातिमे अशिक्षासँ उबजैत अस्त-व्यस्तता, ओकरा सभक परम्परागत माछ मारबाक धंधामे अबैत-जाइत मंदी, गाम-गाममे पनिआओक कारणे ठीका-पट्टाक झंझटि आदिक चित्रण कएल गेल अछि। हमरा गाममे तहियो साठिघर मलाह छलैक। कहबाक जरुरति नहि जे एहि नाटकक कथ्यक उत्स की छल हयत। तहिना छोट-छोट नाट्य आलेख सभ सुखी जीवनक रहस्य, यजमान, देवव्रत,ममता आदि सभ छपल छल। मुदा, जीवनसँ जुड़ल नवशैली-शिल्पक नाटकक क्रम 'एकटा आओर वसन्त, सँ प्रारंभ भेल अछि।

एहिसं पूर्व प्रकाशित 'महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक शीर्षकक नाटक पुस्तकमहक महिषासुर मुर्दावाद नाटक एम.ए.क कक्षामे पढौनीमे राखल गेल अछि। पोथी भेटि नहि रहल छैक। लागल ओकरा पुनर्मुद्रण करी से किए ने नव कलेवरमे अपन आओर दू गोट नाटक 'आ बौधुबाजि उठल'

आ 'सूली पर इजोत' जे एम.ए.मे पढाइ होइत छैक कें शामेल करैत एम्हर लिखाएल तीन गोट नव नाटकसभके एक्के ठाम गांथि पाठकक सोझां राखि देल जाए। सर्वसुलभताक संग अपनो एकटा नव पुस्तक बजारमे आबि जाएत। तकरे परिणाम थिक ई 'भैया, अएलै अपन सोराज'।

हम युवा पीढ़ीक पढ़क्कर, अक्षर चेतनासँ युक्त हस्ताक्षर चन्द्रेशकें आग्रह कएलियनि जे संग्रहित नाटक सभपर एकटा समीक्षकीय टिप्पणी लिखि दिऐक जे पाठकक संगहि विद्यार्थी सभकें सेहो उपयोगी होइन्ह। भाइ चन्द्रेश अपन स्वभावक अनुकूल हमर आग्रहकें कनेक विशेषे गंभीरतासँ लेलन्हि अछि आ ई टिप्पणी उपलब्ध करौलनि अछि। एकरालेल हम आभारी छियनि।

हम चाहब प्रदर्शनक बाट नहि छेकाओ। ई जारी रहत त' अवस्से नव-नव नाटक आ नाटककार सभ अएताह, आ एहिना मां मैथिलीक भण्डारकें श्रीवृद्धि करैत रहताह।

दीआवाती:२०६७ **रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'**
मैतीदेवी, काठमाण्डू

विषय-सूची

भैया, अएलै अपन सोराज

परम्परा, प्रगति आ प्रयोगक नाटककार 'भ्रमर'

नेपालीय भैथिली नाट्य-साहित्यक क्षेत्रमे नाटकक दु:स्थिति देखि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क मोन औनाइत की रहल जे चिन्तन ओ उद्भावनाक क्षेत्रमे नाट्य-लेखनक यात्रा आरम्भ कयल। ई सत्य थिक जे नेपालक मल्लकालीन युगमे नाटकक विकास चरमोत्कर्ष पर रहल। मुदा, बादमे चलिकऽ नाटकक दु:स्थिति भऽ गेल। तेँ भ्रमरक लेखन एही तापमे तपिकऽ नेपालीय मैथिली साहित्यकेँ गति आ दिशा देबाक क्रममे नाट्य-लेखन दिस अग्रसरित भेल। ओना, ई सत्य अछि जे भ्रमरसं पूर्बहु नाटक लिखल गेल, कैकटा मंचितो भेल मुदा वास्तविकता ई अछि जे आधुनिक नाटककेँ सही सोच आ दृष्टिक संग सर्जनाक परिर्वतनकारी लय हिनक लेखनीक क्षमता ओ ऊर्जस्विता थिक। ओ मन्चकेँ देखैत, पात्रानुकूल भाषामे नवीन युगक नव यथार्थकेँ उभारिकऽ क्रान्तिक सूत्रपात ओहि ढङ्गे कयल जे उपेक्षित वर्गक पीड़ा ओ बोलकेँ अभिव्यक्ति देल। हिनक मोनक उपजामे अन्तर्ध्वनित सत्य उभरिकऽ पाठक ओ दर्शकक सोझाँ की आयल जे नव संस्कार ओ संवेदना लऽ प्रस्फुटित भेल। ईहो सत्य थिक जे हिनक पूर्वक नाटक परम्परान्वेषी रहल, मुदा क्रमिक विकासक क्रममे बादक नाटक नव कथ्य ओ शिल्पमे नव अर्थवत्तासँ युक्त नव विचार-भूमि लऽ आयल। हिनक नाटक लघु होइत अछि, बुझी तँ एकाङ्की।

ईहो स्पष्ट कऽ देब आवश्यके जे मैथिली जगतमे प्रवेश करिते मिथिला-मैथिलीक प्रति अनुराग-भाव भ्रमरक हृदयमे उफान की मारैत छल जे ओ आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाक भण्डार भरय लगलाह। पहिने कविता, कथा, आलेख आ टिप्पणी इत्यादिक उपरान्त प्राय: सभ विधामे ओ लेखनी चलोलनि। ओ मात्र लिखलनि नहि, अपन उपस्थितिबोध दर्ज करोलनि। एहिमे हिनक दूटा कारक तत्व प्रमुख रहल अछि- (१) मिथिला-मैथिलीक प्रति प्रेम (२) सामाजिक कुव्यवस्थाक प्रति विद्रोह-भाव। एहिमे दुनू भाव ऊपरा-ऊपरी। दोसर कनेक बेसिए एहि हेतु जे

आक्रोशक लपलपाइत भाव बेसिए खूजिकऽ उभरि आयल। कारण अछि, सामन्ती व्यवस्थाक प्रति विद्रोह। जातिगत असमानता होअय वा धार्मिक भेद-भाव। किएक तँ ई दुनू कोनो ने कोनो प्रकारेण जाति ओ धर्मक नामक पर समाजक मुँहपुरुषक देहमे तेनाकऽ नाग-नागिन जकाँ गछारल अछि जे बात-बातमे बिख्ख-वमन करैत अछि। चालि-व्यवहार ओ रंग-ढंग सभमे एहन लोक अपन वर्चन स्थापित करबाक लेल कखनो कोनो उकबा उठाकऽ घीन वसात की बहबैत अछि जे समाजिक समरसता दूषित भऽ जाइत अछि। मुट्ठी भरि ई समाज अपन कथनी ओ करनीमे छल-क्षुद्रमक गन्ध घोसियाबैत, लोककेँ एक-दोसरसँ फुटकाबैत आपसी सौहार्द्रकेँ मटियामेट करबा पर तुलल अछि। मनुक्खक आचरण ओ व्यवहारक प्रभाव देखा-देखी होइत अछि। किएक तँ एक-दोसरक क्रिया-व्यवहारकेँ देखैत सामाजिक व्यवस्थाक अर्न्तगत अपन क्रिया-व्यवहारकेँ अपनबैत अछि। यैह सभ बातकेँ भ्रमर नीक जकाँ जनैत-बुझैत रचनात्मक क्षमता ओ आधुनिक प्रयोग करैत नव शिल्पमे नव ढङ्गे नाटक प्रस्तुत कयलनि। हिनक रचनाक विषय मनुक्खक जीवन थिक। एहिमे क्रान्तिक सुगवुगी अछि तँ वैचारिक दृष्टिएँ नव समाजक निर्माणक भविष्य-दृष्टि। परम्परा, विचार आ संवेदनाक रसायनमे लेखनीकेँ डुबाकऽ भ्रमर अपन लेखकीय- शक्तिक उपयोग लोकमे नव जागरण अनबाक उद्देश्यैँ कयल अछि जे लोक जागत तँ नव समाजक निर्माण होयत। तँ सामाजिक विकारकेँ हटबैत लोकमनमे भावप्रवण संवेदनशीलताक रस प्लावित करैत लोकजीवनक व्यापक चित्र उपरुथापित कयल अछि।

भ्रमर प्रायः मैथिलीक सभ विधामे लिखलनि, निस्सन्देह हिनक काव्य-क्षेत्र विस्तृत अछि आ दोसर स्थान पर कथा। नाटक लेखन- क्षेत्रमे ओ संघर्षरत छथि आ विकासक क्रममे दनादन सचेतन भावेँ नाटक लेखन दिस उन्मुख भेलाह अछि। ओना हिनक सम्पादकत्वमे प्रकाशित नेपालसँ प्रकाशित पहिल आ तत्कालीन एकमात्र मैथिली समाचार पत्र 'गामघर' साप्ताहिकक वार्षिक विशेषाङ्क-'रानी चन्द्रावती' पौराणिक- ऐतिहासिक नाटक वर्ष - ७, अङ्क - १, २०४५ साल , कातिक ४ गते वृहस्पति तदनुकूल २० नवम्बर १९८८ मे आयल अछि। जहिया ई नाटक लिखायल तहिया नव युगक चुनौती आ संघर्ष अपन जुआनी पर छल। ओना कोनो युगक चुनौती युगबोधक काल परिप्रेक्ष्यमे अपन औकाति देखबैत महत्ता सिद्ध करबिते अछि आ युगान्तरकारी रचनाकार भविष्यकेँ अकानैत वर्तमानक चुनौती स्वीकारिते छथि। यैह सचढ़ दृष्टि सजग रचनाकारक परिचायक थिक जे जीवन दृष्टि आ विश्वदृष्टिकेँ

समाहित कऽ अपन सृजन-क्षमताकेँ गुणवत्ता ओ अर्थवत्ता प्रदान करैत अछि। भ्रमरक ओहि कालखण्डक कवितामे युग सत्यक अनुगूंज अछि। मुदा, 'रानी चन्द्रावती' नाटकमे परम्परागत कथ्य ओ प्राचीनकालक धरोहरकेँ नाटकक रूपमे दऽ पाठकक सोझाँ अनलनि। प्रजावत्सल चन्द्रपुर राजक महाराजक प्रजाक जीवन-रक्षक निमित्त आकांक्षा अछि। मुदा, योगीक कथनानुकूल पन्द्रहम दिन महाराजक मृत्युक वरण हेतनि। जखनकि अकालग्रस्त यज्ञ-अनुष्ठान करबाक लेल मास दिन अछि। तात्पर्य जे अधिया मासमे महाराजक निधन। महाराजक विपुल चिन्ता जे यज्ञ नहि कऽ सकब। प्रजाक चिन्ता जे 'हमरा सभक हेतु अकालोक मारिसँ पैघ अछि सम्राटक मृत्युक मारि (१८)'। तात्पर्य जे 'ई एक जनमे जन-जन मिलल अछि (१९)' महाराजकेँ देह त्यागबाक ने कोनो गम अछि आ ने दुःख। कारण ओ जनैत-बुझैत छथि जे देह नश्वर थिक। मुदा, 'दुःख तँ एहि बातक अछि जे अन्तिम क्षणमे एकटा पैघ सेवाक मौका भेटल छल से हम तकरा उपभोग नहि कऽ सकलहुँ (५+६)'। रानी चन्द्रावतीक पतिव्रत धर्म-कर्म जे 'जाधरि यज्ञ सम्पन्न नहि हयत एत्तसँ नहि उठब (१७)'। सती सावित्रीक परम्परामे रानी चन्द्रावतीक हठ आ विधिक विधान? धर्मराज ओ चित्रगुप्तक चिन्ता जे कर्मक लेख कोना टरत? अन्तिम परिणतिमे रानी चन्द्रावतीक जीत आ पतिकेँ यमदूतसँ बचा लेब तथा धर्मराजक कथन 'महारानी धन्य थिकहुँ। अहाँक धर्म निष्ठापूर्ण संकल्प सांसारिक व्यवहार धरिकेँ बदलि देलक अछि। अहाँक यश कीर्ति युग-युग धरि गाओल जायत (२१)'। एहि प्रकारेँ परम्परागत थातीकेँ उपहारस्वरूप विलहैत नाटककार पौराणिक-ऐतिहासिक कथ्यकेँ दोहराओल अछि। ई सत्य थिक जे रूढ़ परम्परा त्याज्य थिक। परम्परा आ आधुनिकतामे अन्तर बेकछायब तँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे नवीनतम आधुनिकता जे भविष्यक पीढ़ीक पाथेय थिक से कालक्रमे परम्परा बनैत अछि। तँ परम्पराक नव विकसित ओ गतिशील रूप आधुनिकता थिक। एहि नाटककेँ आजुक परिवेशमे नहि देखबाक थिक। ई तँ घटना-प्रधान नाटक थिक जे अपन समयगत मूल्यबोधक महत्ता दर्शबिते अछि। नवीनता एहिमे ई अछि जे प्राचीनक संघर्ष देखाओल गेल अछि। आइ-काल्हिमे ऐतिहासिक विषय-वस्तुकेँ घीसल-पीटल वा परम्परागत वस्तु बुझि अवडेरल जाइत अछि। तँ नाटकक उल्लेखनीय प्रस्तुति नहि भऽ रहल अछि तँ स्वाभाविके। जँ विचारात्मक आकर्षण होअय तँ नाटक तेना भऽ कऽ असफल होयत से सम्भावना अवस्से कम रहैत अछि। जँकि ई ऐतिहासिक नाटक थिक तँ स्वाभाविक थिक जे कथा-वस्तु सुनल-सुनाओल अछि। जैंकि ई पात्र 'चन्द्रावती' नाटककारकेँ प्रभावित कयल तँ ओ प्रेरणा देबाक निमित्त एहि नाटककेँ सृजित कयल। वस्तुतः धर्म की थिक

जे कर्म-फलक बाट बनबय। तैं सदति कर्म करैत रहबाक चाही। ई ककरा लेल तँ जन समाजक लेल। जेँकि एहिमे आदर्श, त्याग ओ उत्सर्गक भाव सन्निहित अछि तँ आस्थामूलक ओ निर्माणमूलक स्वरमे स्फूर्त चेतना सन्निहित अछि।

भ्रमरक दोसर नाटक थिक 'एकटा आओर वसन्त'। एहि नाटकक सफल मंचन भऽ चुकल अछि। प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मंच पर २०५० साल अखाढ़ ८ गतेक सफलतापूर्वक मंचन भेल आ विशिष्ट पुरस्कारसँ पुरस्कृत भेल। तहिना चेतना समितिक नाट्य लेखन प्रतियोगितामे दोसर स्थान पौलक। एकर तीन गोट प्रकाशन- वैदेही पत्रिकाक फरबरी १९९४, चन्द्रेशक सम्पादकत्वमे १९९४ आ तेसर खेप स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित भेल अछि। एहिपर फिल्मो बनि नेपाल टेलिभिजन सं प्रसारित भऽ चुकल अछि। विधवा विवाह पर आधारित एहि नाटकमे समस्या आ समाधान दुनू अछि। कथा-सूत्र एहि प्रकारेँ अछि जे गरीब घरक बेटी 'कलिआ' जकरा बाप चन्दा माँगिकऽ एहि द्वारे पढ़ौलकैक जे बेटीक विवाहमे सहुलियत हयत। मुदा, सामाजिक अभिशाप बनल दहेजक खातिर बेटीक नीक घर-वरक लेल पुरना घराड़ी धरिकेँ बेचि देलक जे ओकर पेटक स्रोत रहैक। पन्द्रह वर्षक कलिआ आ ३०-३२ वर्षक वर जे माथ सिनुरबिते पचमे दिन चलि बैसलैक। बाप सेहो एहि विरहकेँ नहि सहि सकलैक आ विधवा माय-बेटी। इज्जति-आवरू बाँचब मोशिकल। पुरुष-प्रधान समाजमे नारीक दुःस्थिति। यौन-वृत्तिक भाव-अभावक व्यञ्जनामे दमित इच्छा-आकांक्षाक खेल-बेल। उधियाइत पाइक जौरे अरबक गहिँकीकेँ 'गोर, छोट आ मस्त माल चाही (२०)'। बस की छल, स्वार्थे अन्हरायल गुण्डा तत्व उठा लेल कलिआकेँ, मुदा नायक आलोकक निडरपन जे माम गाममे रहितो बचा लेलक सरपट्टे। बस की छल, आलोकक विवाहक लेल गनाइत अहगर कऽ टाका आ ओकर बापक धन लोलुपताकेँ लात मारि आलोक कलिआक माथ सेनुराकऽ विधवासँ सधवा बना देलक। किएक तँ 'जाति-पाति, वंश-परम्परा सभक पाछाँ सामाजिक पवित्रताक भावना रहबाक चाही। जे जिनगीक सोझ बाट दिस लऽ जाए सएह धर्म थिक (२८)। वस्तुतः 'कोनो सामाजिक क्रान्तिक हेतु परम्पराकेँ तोड़' पड़ैत छैक (२९)'। से टूटल अछि। किएक तँ 'प्रत्येक नव क्रान्तिक पृष्टभूमिमे वलिदानक अनगिनत कथा नुकायल रहैत छैक'। एहिमे देखल-भोगल यथार्थक अभिव्यक्तिमे समाजक सड़ल-गलल परम्परागत मान्यता पर जमिकऽ प्रहार कयल गेल अछि। ओ रूढ़ परम्परा त्याज्य थिक जे प्रगतिपरक बाटकेँ छेकने अछि। सामाजिक व्यवस्थाक जाँतमे पीसाइत नारी सतत छलाइत रहैत अछि। ओकर दैहिक भोगमे उपयोग कयल जाइत अछि।

ओकर मोनक पीड़ाक ध्यान नहि देल जाइत अछि। नाटककार भ्रमर नारीक मोनक व्यथा-कथाकेँ उभारैत स्वरकेँ फलित कयल अछि। मामीक स्वरेँ- 'पुरना लीक पर चलैत रहब मर्यादाक पालन मात्र हयत (४१)'। से आलोक द्वारा टपल गेल अछि आ एहि पुनीत काजमे ममियौत मदनक भरपूर सहयोगक संग मामी आ मामक सहयोग भेटल अछि। ई सत्य थिक जे कोनो लड़ाइ लड़बाक लेल पहिने लोककेँ असगरे आगाँ बढ़य पड़ैत छैक आ तखन जँ सहयोगी पाबि लेलक तँ विजय श्री हाथ अबिते छैक। दहेज प्रथाक फलस्वरूप नारीक जे दयनीय स्थिति अछि जे आइयो कतेको ललनाकेँ जीवनक आहुति देमऽ पड़ैत छैक। ओकर जीवन लीला वा तँ समाप्त कऽ देल जाइत छैक अथवा स्वयं जीवन त्यागबाक लेल विवश कऽ देल जाइत छैक। ताहिमे विधवा ? ओकर छाहोमे चलब मोशिकल। कोनो शुभ काजमे अपशगुन मानल जायवाली। जीवितेमे लहाश बनलि जकर यौनिकता, भावना आ इच्छाक कोनोमोल नहि। हँ, कामुक पुरुषक पाशिवकताक शिकार बनलि दम घोंटैत जीवा पर मजबूर बनलि। प्रचारित-प्रसारित जे समाजक अभिशाप थिक विधवा जे जीवितेमे पतिकेँ खा गेल। मुदा, पुरुष ? एक नहि, कैकटा विवाहक स्वामी बनल इतराइत-इठलाइत आ नारी ? अबलाक अबला बनलि। ओना युग बदलल आ १८५६ मे 'विधवा पुनर्विवाह कानून बनल तैयो दुःस्थिति। ओना कहबाक लेल कहले जायत जे विधवा विवाह सन घीसल पीटल कथ्यकेँ एहि नाटकमे दाहराओल गेल अछि। मुदा, 'नाटकक मौलिकता जे जीवनक सहजता आ जीवन्त स्थितिक चित्रणसँ उपजैत स्वाभाविकता नेने समकालीन जीवनकेँ जे दिशा आ दृष्टि प्रदान करैत अछि से विशेष आह्लादित करैत अछि। खासकऽ पात्रोचित भाषामे कथा-सौष्ठव, चरित्र-चित्रण आ शिल्प आदि दृष्टिएँ घनीभूत संवेदनामे उपजैत कथ्य जे नाटकसँ व्यञ्जित होइत अछि सैह प्राचीनता आ नवीनताक समुचित आकलन करैत अछि, एकटा आओर वसन्तः एकटा आओर यथार्थ (VI - चन्द्रेश)'। एहिमे सम्वन्धक फरिछौटकेँ नीक जकाँ फरियाओल गेल अछि जे सामाजिकताकेँ सदति लोकपयोगी होयबाक चाही। धर्म वैह थिक जे कर्म-फलमे सन्निहित अछि। तँ कखनो निष्ठाकेँ नहि त्यागक चाही। जीवनक प्रतिबद्धता मानावीय मूल्यक रक्षार्थ होयबाक चाही। एकरे परिणति थिक 'एकटा आर वसन्त' जे मानवीय संवेदनासँ भरपूर जनतांत्रिक मूल्यक संवाहक बनैत अछि। नवीनक संग प्राचीनक संघर्ष देखाकऽ नाटककार आर्थिक संकटसँ जूझैत दीन-हीन मनुक्खक जीवनक सभसँ पैघ आ पीड़ादायी संकटकेँ उभारिकऽ नव सम्वन्ध-सूत्रमे बान्हि पुनर्जीवनक जे ओकालति कयल अछि से निस्सन्देह सामाजिक संरचना-सूत्रकेँ आरो मजगूत बनबैत अछि। ओना कहबाक लेल ईहो

कहल जा सकैत अछि जे आजुक युगमे आब ई विधवा विवाह कोनो समस्या नहि रहि गेल अछि। किएक तँ अन्तर्जातीय विवाह, धर्मान्तरण, सह पलायन अर्थात् मोनक मिलानी होयबाक देरी मात्र होइत अछि। ततबे नहि, सामंजस्यक स्थिति आबि गेल अछि। मुदा, ई नाटक आइयो ओहि स्थिति- परिस्थितिकेँ व्यक्त करैत अछि जाहि मैथिल समाजमे नारी आइयो निरीह बनलि ककरो आसराक छाँह पयबाक आस-विश्वासमे टुक-टुक तकिते अछि। तँ जन-आन्दोलनक वस्तु थिक। कारण, जीवन-मूल्यक खोजमे जमीनसँ जुड़ल यथार्थपरक सत्य उद्घाटित भेल अछि। सामाजिक अन्तर्विरोध आ विसंगतिक स्पष्ट चित्रण होयबाक फलस्वरूप समाज सुधारक लौ प्रस्फुटित अछि जे स्वस्थ समाजक निर्माणमे सबल भूमिका निमाहैत अछि।

सम-समायिक घटना-परिघटना अबस्से विषय-वस्तु बनैत अछि आ यैह परिदृश्य नवताक सूचक थिक। मुदा, देखबाक ई थिक जे विषय-वस्तुक उपस्थापन कोन ढङे भेल अछि। अर्थात् अभिव्यक्तिमे रचि-पचिकऽ आयल अछि वा नहि। एही ठाम नाटकीय संवादमे कलात्मक कौशलक दक्षता अनिवार्य होइत अछि। जँ उपरे-घारे अलगल-फलकल आओत तँ संरचना-सूत्र हलुकयबे करत। केहनो नीकसँ नीक विचारधारा नेने किएक ने आबओ, कलात्मकतामे क्षति की पहुँचैत अछि जे नाटकीय मूल्य बाधित होइते अछि। अतिनाटकीय होयब तँ निश्चिते मूल्यहीनताक द्योतक थिक। कारण, अतिक फेरमे पड़ि केहनो भावना-प्रधान ओ उत्तेजनामे नाटकक सर्जना किएक ने होअय, ओहि नाटकक सार्थकता संदिग्ध थिक। ई बात भ्रमर नीक जकाँ जनैत-बुझैत छथि तेँ ओ पात्रक संख्या पर सेहो ध्यान रखैत छथि। पात्रक संख्या तेना भऽ कऽ नहि आबय जे गडमड भऽ मन्चकेँ छेकने रहय। ओ 'महिषासुर मूर्दाबाद' मे मात्र एक पात्रक उपयोग कयने छथि। 'युवक' आ 'पार्श्वसँ' अर्थात् ओकरे अन्तरात्माक उताराचौरी। अन्याय, अत्याचार ओ शोषणक विरोधस्वरूप उठल हाथसँ आत्मवलेँ संघर्षरत भऽ महिषासुरक संहार करैत। ओकर शोणितसँ डूबल हाथ माने खूनी। ई जनैत जे 'एकटाकेँ मारिते बहुतो जनमिकऽ ठाढ़ भऽ जाइत छैक (आंजुर वर्ष - १, आसिन-कार्तिक २०५४, सितम्बर-नवम्बर १९९७/३)' तैयो ओकर अभियान रूकतैक नहि। किएक तँ 'एहि समाजमे कुण्डली मारने बैसल विषधर साप सभक फनकेँ थकुचबाक हमर अभियानक पहिल शिकार थिक। एखन त' सयो एहन विषधर खुशफैलसँ घुमि रहल अछि (३)'। तात्पर्य जे 'समाजमे छिड़िआएल एहि महिषासुर सभकेँ सुड्डाह कऽ देबै (४)' किएक तँ 'आनक बहु-बेटीक इज्जति

लुटनिहार, पाँच सय टाकाक मूरकेँ पाँच हजार बना घराड़ी समेत छीनि लेनिहार, जुआन बेटीक पीड़ा भोगैत बापक नोर पर हँसनिहार, गरीबीक दर्दकेँ मजाकक वस्तु बना अपन शान-शौकत देखौनिहार नरपिशाच सबकेँ आब सुन' पड़तै (४)'। ओ जीवय चाहैत अछि। ओकरामे अदम्य जिजीविषा छैक। मुदा, निर्धीन जीवन जीनाइ पसिन्न नहि छैक। ओ (चमार जाति) अनुसूचित जातिसँ अछि। जातिक दंश पीड़ा की होइत छैक से ओकरा जानल-बुझल छैक किएक तँ भोगनिहारे जनैत अछि। ओकरा (जाति) सँ लोक छुआइत की छैक जे देह धरिमे नहि भीड़य चाहैत अछि, छुअल पानियो नहि पीबय चाहैत छैक। आइयो एहन मानसिकतावला लोक अछि। मुदा, बहु-बेटीक बेइज्जति आ बेगारी खटबयकाल सभ किछु क्षम्य छैक। अज्ञानता ओ अशिक्षाक दंशमे पीड़ित निम्नवर्गीय लोक की रहैत अछि जे ऋण-पैच लैत अछि आ पाँच सय पर एकटा शून्य बढाकऽ पाँच हजार कऽ देल जाइत अछि। जग्गह-गमीन, घर-घराड़ी सभटा हथिया लेल जाइत अछि। ओकरा सदति भययुक्त जीवन जीवाक लेल विवश कयल जाइत अछि। ओ सभ किछु सहैत-भोगैत अछि। ओकर बाप जेँ महाजनी ऋण नहि सधा सकलैक तेँ बोखारोमे खेतीमे काम करबा पर विवश कयल गेलैक आ भूखल-पियासल दम तोड़ि देलकैक। समाजमे दूटा वर्ग अदौसँ अछि-शोषक आ शोषित। तेँ 'अत्याचारी शोषक, विधर्मी सभ रक्तबीजक जनमल अछि (४)'। एहिमे मानवीय भावसँ सन्निहित अछि आ समाजक छल-क्षुद्रमक बखिया उधेरल गेल अछि। नाटकक शैली संवादात्मक अछि जाहिमे आक्रोश लबालब भरल अछि। कथातत्व एवं संवाद तत्वमे आक्रोश पचिकऽ अबैत तँ निश्चिते आधुनिक कथ्य ओ भावबोधमे एहि नाटकक प्रस्तुति आरो नव रंग अनितय। एहि लेल किञ्चित विषय विपर्यय हेतु नाटकीय कौशलमे घटनाकेँ संयोजित करबाक चांही। कारण, एकल नाटकमे ई खतरा उठबैये पड़ैत अछि जे बेसी भाव बोधाधिक्य भेलाक सन्ताँ नाटकीयतामे कनेक कमी खटकब स्वाभाविक थिक। जेँकि मनुक्खक जीवनक सम-सामयिक परिवेशकेँ उधेसल गेल तेँ युग सत्यक स्वर झलकिते अछि। संघर्षक तिक्ख स्वर कनेक बेसिए आबि गेला सन्ताँ अबस्से कलात्मकतामे कमी अबैत अछि, मुदा समयक बीच अपन प्रभाव छोड़ि जाइत अछि जे आह्लादित करैत अछि।

सात दृश्यमे आबद्ध 'सुरुज उगबासँ पहिने' आयल अछि। एहिमे महाजनी सभ्यता-संस्कृतिकेँ जगजियारकऽ शोषित वर्गक विवशताकेँ उजागर कयल गेल अछि। ऋणक तरीमे दबल 'गणेशी'क परिवार आ एहिना दबल-कुचलल गरीबीक

मारि सहैत बहुलांश लोक अछि । पेटक लेल बेलल्ला बनल लोक ऋण-पैन्च सघयबाक सपना संजोगैत अछि, मुदा सघा नहि पबैत अछि। ओकर घर घराड़ी धरि नीलाम भऽ जाइत छैक । आजुक भ्रष्ट व्यवस्था तेहन अछि जे 'काल्हि पिउन-मुखियाक नोकरी धयलक आ आइ बंगला पीटि लेलक (९) । गणेशीक चिन्ता जे धूर-धूर बेचियोकऽ ऋण सधा ने सकत । बाबू रणधीरसिंहक अत्याचारी महाजनसँ 'सौंसे गामक प्रतिष्ठा आइ महाजनक छड़ीक नोक पर नचैत खसैत छै (२१)' । ई सभटा जनैत-बुझैत अछि गणेशीक बेटा 'अशोक' । ओ इहो जनैत अछि जे आजुक पढ़ाइक व्यवस्था तेहन अछि जे जीवनसँ कोनो माने- मतलब नहि रखैत अछि। ने तँ पढ़ि-लिखिकऽ दू पाइक जोगाड़ धऽ सकैत छी आ ने शोषकक विरोध । ओकरा हृदयमे धधकैत आक्रोश जोर की मारैत छैक जे महाजनी अन्हारक विरोधस्वरूप संघर्षमे उतरि जेबाक मोन करैत छैक । मुदा, पयरमे बान्हल सिक्कड़ि बाधा बनैत छैक । ओ विवश भऽ कुहरैत छटपटाइत अछि। ओकरा हृदयमे अन्हर-बिहारि उठैत रहैत छैक आ एहि विद्रोहाग्निकेँ आरो सह दऽ लहकयबाक हेतु रणधीर सिंहक बेटी 'लक्ष्मी' बाजि उठैत छैक-'प्रत्येक कारी रातिकेँ समाप्त करबाक लेल सरुजकेँ उगब धुब सत्य थिक (२३)' । लक्ष्मी अशोककेँ वरण करबाक लेल प्रस्ताव दैत अछि। मुदा, आदर्श आ नैतिकताक गछाड़मे गछाड़ल अशोक ? ओकरे शब्देँ - 'इमान आ धर्मक पालन करबाक गुण हमरा विरासतमे मिलल अछि ने ! तँ सहबाक क्षमता ओतहिसँ भेटल अछि (१२)' । यैह कारण छल जे लक्ष्मीक प्रस्ताव पर अशोक गुम्मी लाधि लैत अछि । व्यावहारिकताक गुण ओकरा चुप्पी साधबाक लेल वाध्य कऽ दैत छैक । जीवनक अनुभवसँ ओ बहुत किछु सीखि चुकल अछि । तहिना लक्ष्मीक पकठोसलि स्वर- 'अन्याय, अत्याचारक विरुद्ध लड़बाक जे ऊर्जा अहाँमे अछि तकरा एना बर्वाद अहाँ नै कऽ सकै छी (१८)' तहिना गोधियाँ 'कमल' क परमर्श जे 'बाप-मायक परम्परागत मान्यता आ विश्वास विरुद्ध शोषण आ अत्याचार कैनिहार महाजनसन नृशंसक विरुद्ध (२१) अर्थात् विद्रोह करबाक छैक । कारण, 'अपन मौलिक अधिकार । नोकरी करबाक अधिकार, पेट भरबाक अधिकार, समाजमे होइत अन्याय-अत्याचारक विरुद्ध लड़बाक अधिकार (२५)' । कहबाक अभिप्राय जे ' समाजमे रहबाक हेतु मर्द जकाँ जीवऽ पड़तै, ककरो क्रीतदास जकाँ नै ! सम्मानक मर्यादा ताधरि रहैत छैक जाधरि ओ ककरो अहमकेँ आहत कऽ नहि प्राप्त कयल जाइ । तकर बाद त' खूजल लड़ाइ छै (२६)' । अशोकक औनाइत-छटपटाइत मोन आत्मविश्वासमे दृढ़ निर्णय लऽ लैत छैक 'मुक्तिक बाट' । ओकार हृदयाग्नि धधकि की उठैत छैक जे मायक संग जोर-जबरदश्ती करैत बाबू रणधीरसिंहक गोराइत 'सुगवा'क छवि आरो लहका दैत छैक।

ओ निर्णय लैत अछि जे संघर्ष करबाक लेल लक्ष्मीक सहयोग चाहबे करी तँ विवाह कऽ लैत अछि। फेर की छल ? बाबू रणधीर सिंह कतबो डेरबैत छथि, थाना कचहरी, फर-फौदारीक बात उठबैत छथि आ बहुत किछु करबा पर तूलि जाइत छथि तँ लक्ष्मीक कथन जे ई विवाह हम हपन मरजीसँ कयल अछि। ई सुनिते रणधीर बाबू एँचिकऽ की रहि जाइत छथि जे दुष्चक्रक रचल सभटा खेल-बेल उसरि-पुसरि जाइत अछि । एहि प्रकारेँ एहि एकाङ्कीमे ई दर्शाओल गेल अछि जे आजुक समाजमे नव जागरण आयल अछि। शोषित वर्ग अपन नीक-बेजाय बुझि शोषणक विरुद्ध छाती तानिकऽ अपन हक-हिस्सा लेल लड़बाक हिम्मति जुटा लेलक अछि। संघर्ष अचूक हथियार बनैत अछि जँ बुद्धि-विवेकसँ काज ली । तँ आब शोषक वर्गकेँ सचेत होयबाक समय थिक जे सामाजिक समरसतामे अपन आत्म दर्पकेँ छोड़ि मनुक्खकेँ मनक्ख बुझि व्यवहार करथि । एहि पुनीत यज्ञमे लक्ष्मी आ अशोक, एक-दोसरक सहयोग बलेँ ठानल काज पूर्ण कऽ लैत अछि। एकटा नवीन दृष्टिक सृष्टि की होइत अछि जे नव जीवनक सन्देश विलहि दैत अछि । संघर्ष पर बल दैत विद्रोह आ क्रान्तिक संग परिवर्तनक भूमिका सन्निहित अछि। एहिमे मानवीय द्वन्द्वकेँ उभारिकऽ नाटककार अनुभूति वा संवेदनाक स्तर पर जे समस्याक हद धरि पहुँचाकऽ समाधानक, प्रयास कयल अछि से प्रशंसनीय थिक ।

'नेताजी आबि रहल छथि' । एहिमे 'सूत्रधार' आ 'नटी'क भरपूर प्रयोग कऽ जुलूसक लोकक माध्यमे सामाजिक अव्यवस्था पर जमिकऽ प्रहार कयल गेल अछि। भ्रष्टाचार एकटा एहन मुद्दा थिक जे देशक आर्थिक विकासक संगहि लोकक मानसिकताकेँ फोकिला बना रहल अछि। लूटि-पाट, हत्या, अपहरण, बलात्कार अछि जतेक जे किछु आइ समाजिक समस्या बनल अछि से सभटा बनाओल गेल अछि। प्रजातंत्र कोनो देशक व्यवस्थाक जड़िकेँ आरो मजगूती प्रदान करैत अछि। मुदा, घून लागल प्रजातंत्र जखन स्वार्थसिद्धिक औजार बनि जाइत अछि तँ लोककेँ झपटैत अछि। तँ लोकक आत्मा पर पड़ैत चोटसँ बढिकऽ आरो किछु नहि होइत अछि। जे लोककेँ सुरक्षा प्रदान करैत अछि सैह व्यवस्थाक नियन्ता जखन भ्रष्ट भऽ मूल्यहीनताक दुर्गन्धि की पसारैत अछि जे सम्पूर्ण परिवेश ओ वातावरण गन्हाय लगैत अछि। एहिमे पुरुष सत्ताकेँ चुनौती दैत लैंगिक आ जातीय समानताक बात सेहो उठाओल गेल अछि। तँ नटीक शब्देँ -'जखन काज लेबाक रहत तँ मीठ मीठ बात कऽ स्त्रीकेँ ठकि लेत। काज सुतरि गेल कि.. (४६) प्रजातंत्रमे सभक हक बरोबरि छैक। 'अजय चोर गद्दी छोड़ (४३)। नारामे सरकारी दु:व्यवस्था पर चोट अछि। ओना कृषकक शब्देँ-

भ्रष्टाचार मेटएबा लेल जकर नियुक्ति होइ छै ओ तकरोसँ पैघ भ्रष्टाचारी भऽ जाइए (४८)। देखल जाइत अछि जे जूलूश तँ प्रशासनिक नियम तोड़बाक लेल होइत अछि से दुनू स्तर पर। आम लोकक जागरण होउक आ सरकार विवश भऽ मान्यता दौक। जँकि घूसखोरीक बजार गर्म छैक, भ्रष्टाचार बढ़ल अछि तँ बेरोजगारीक संख्यामे बढ़ोत्तरी की भेल अछि जे लोक फुटपाथ पर बौअयबा लेल वाध्य अछि। जुलूसमे लोक अपना मोनक भड़ास निकालैत सामाजिक लोककेँ नव प्रकाशसँ पथ आलोकित करैत अछि। एहि प्रकारेँ सामाजिक समस्यासँ टकराइत व्यवस्थागत प्रश्न उठाकऽ सोझे जीवनक मर्मक तह धरि उधेसल गेल अछि। नाटककार भ्रमरक ई विशेषता रहल अछि जे समकालीन सत्यक अऽढ़मे जीवनगत समस्याकेँ उधेसिकऽ मानवीय मूल्यबोधक संवाहक बनय। मात्र एक टाकामे मोनक बात जानबाक लेल जन्तर बेचिकऽ गुजर-बसर करयवला 'खेलाबला' अपन चेला 'गुलभंटी'क संग खेल की देखबैत अछि जे एकटा जन्तर प्रजातंत्रकेँ महसूश करबयवला अछि तं दोसरक मोनक बात जानए बला जे खेला देखाकऽ सड़क पर ठाढ़ भऽ भ्रष्ट लोकक कुत्सित मानसिकताक पोल फोलब आ कयल गेल किरदानीकेँ नाङट-उघारकऽ नव सनेस विलहब मूल सन्देश थिक। ठेकेदारी व्यवस्थासँ लऽ कऽ भ्रष्ट प्रशासनिक-राजनीतिक व्यवस्था धरिक बखिया उघारैत संकेत माध्यमे आजुक स्थिति-परिस्थितिक अंकन-प्रत्यंकन भेल अछि। वैचारिक द्वन्द्वमे युग सत्य जे उभरिकऽ आयल अछि से वर्तमान समयक अनुगूंजकेँ ध्वनित करैत अछि। ई मंचीय नाटक मंच पर दमदार प्रभाव छोड़त किएकतँ नाटकीयता कनेक बेसिए अछि आ दशर्कक बेस लगीच अछि। जँ अपन वस्तु बुझाइत अछि तँ प्रभावोत्पादक अछि।

गमैया छल-क्षुद्रमक जीवन्त प्रस्तुति थिक 'आ बौधु बाजि उठल'। ई कथा गाम-गामक थिक। नीक आ बेजाय दुनू प्रवृत्तिक लोक रहिते अछि। चाहक दोकान्दार अछि जे चाह बेचिकऽ सपरिवार गुजर-बसर करैत अछि। ओकरा जगह-जमीन नहि छैक आ ने एहि गामक वासी अछि। ओ गैरमजरुआ जमीनमे दोकान फोलने अछि। ओकरा एहि बातक रंचोमात्र लेश नहि छैक जे ओ बाहरी अछि। किएक तँ गामक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व अर्थात् ग्राम प्रधान 'राम असीस' अर्थात पुरुष-१ आ गा.वि.स.क अध्यक्ष अयोधी चौधरी अर्थात् पुरुष-२ केँ कोनो आपत्ति नहि छैक। ओ दुनू गोधियाँ थिक आ बौधुक दोकानमे बैसिकऽ संगे चाह पीबैत अछि। दुनू व्यक्तित्व मिलिकऽ गाममे शान्ति बनाकऽ राखय चाहैत अछि। कोनो बात झर-झंझटिक वा केहनो किएक ने होअय, आपसीमे पर-पंचैती अथवा बुझा-सुझाकऽ

सलटिया लेल जाइत अछि जे बात आगाँ बढिकऽ कोट-कचहरी ने पहुँचि पाबय। दुनूक अकबाली होयबाक फायदा गौआ-घरुआकेँ की भेटि जाइत छैक जे बौधु सन निरीह लोक सेहो एहि गाममे हंसैत-फुलाइत गुजर-बसर कऽ लैत अछि। मुदा, पुरुष-३ अर्थात् 'हरिश्चन्दर' सन कुटिल लोकक अभाव सेहो नहि अछि जे स्वार्थ सिद्धिक खातिर कतेक नीचाँ धरि खसि पड़ैत अछि जे कुत्सित योजना बनबैत अछि। अपन स्वार्थ सिद्धि होइत नहि देखि अर्थात् 'डीलरशीप' नहि भेटबाक क्षोभमे 'रूपचन्दर' सँ मिलिकि कुत्सित योजना बनबैत अछि। ओ दुनू मिलिकऽ चालि की चलैत अछि जे राम असीस ओ अयोधी चौधरीक बीच वैमन्स्यता पसारिकऽ एक-दोसरकेँ फुटका दैत अछि। ओ दुनू गोधियाँक बीच घृणाक देबाल ठाढ़कऽ एक-दोसरक समर्थक अर्थात् गौआ-घरुआक बीच दू पार्टी कऽ लाड़ि-भूजि दैत अछि जे अधिकारी टोल आ चौधरी टोलक बीच तनातनी मचि जाइत छैक। एतेक दूर धरि जे नीक लोककेँ गाममे रहब धरि मोशिकल भऽ जाइत छैक। हरिश्चन्दर आ रूपचन्दक सभटा खेरहा-बात बौधु जनैत अछि। ओकरा इहो मोने छैक जे ओकरे समक्ष चाहक दोकान पर दुनू गोधियाँक मादे अदखोइ-बदखोइ बजैक। ततबेक नहि, हरिश्चन्दर तँ ओकर पत्नी रघुनाथपुरवाली केँ सेहो ओकर सासुक मादे बढ़ा-चढ़ाकऽ बात बिगाड़य चाहैक आ एतेक दुर धरि जे सलाइ लेबाकाल ओकर हाथ दबा देलकैक। रघुनाथपुरवाली ओकर कुचालिकेँ गमि-बुझि की नेने रहैक जे बाजि उठलि- 'केकरो बहु-बेटकेँ एना नै करक चाही'। मुदा, हरिश्चन्दरक कुचालि सफल होयबासँ पहिने बौधुक मुँह फोलब सभ बातक भण्डाफेड़ कऽ देलकैक आ कराम-कराम मचैत दुनू टोलक लोककेँ वास्तविकताक भान होइते दुनू गोधियाँ बुझि की जाइत छैक जे हरिश्चन्दर आ रूपचनकेँ पड़यबाक बाट नहि सूझैत छैक। ओ दुनू घेराकऽ पकड़ा की जाइत अछि जे दंड देबाक पूर्ण अधिकार बौधुकेँ देल जाइत अछि। इत: तित:मे पड़ि बौधु दूटा बात गछबा लैत अछि -एक तँ एहि दुनू पापीकेँ माफ कऽ दियौ आ दोसर दुनूकेँ समितिक काममे लगा दियौ। कारण, पेट भरल रहतै तँ मनो स्वच्छ रहतै'। तँ पुरुष-४ बाजल रहैक 'जाहि गाममे बौधु सन बेटा आ तोरा सन पुतहु रहतै, गाममे किछु नै होतै' वस्तुत: पुरुष-२ अर्थात् अयोधी चौधरी बाजि उठैत अछि-'बौधु, हमरा सबकेँ ई गर्व हेवाक चाही जे तोहुँ एहि गामक सन्तान छैं।' एहि प्रकारेँ एहि नाटकमे सत्यक जीत देखाकऽ आदर्श, नैतिकता ओ सत्यक सनेस विलहैत मानवीय मूल्यबोधक महत्ता दर्शाओल गेल अछि। एहिमे नाटकीयता अछि जे घटना प्रधान एहि नाटककेँ आरो ऊँचाइ पर लऽ जाइत अछि। पछिड़ल वर्गक बदलैत जन चेतनाकेँ देखाकऽ नाटककार भ्रमर नव जीवनमूल्य स्थापित करबाक निमित्त वास्तविकताकेँ यथार्थक

भूमि पर उतारिकऽ सत्य आ हकक द्वन्द्व उभारल अछि। तेँ निस्सन्देह एहि कृतिक अपन सार्थक महत्ता अछि।

परम्परामे आधुनिकताकेँ मिश्रीत कऽ प्रयोगपरक रचना भेल अछि 'सूली पर इजोत' रूपकमे। एहिमे सामाजिक विकृति ओ विसंगतिकेँ उभारिकऽ प्रयोग कलाक दृष्टिएँ नव प्रयोग कयल अछि। एहिमे अछि वर्तमान आ वर्तमान सत्यक त्रासदीमे मुक्तिक कामना सन्निहित अछि। मोनक भ्रम आ मोहक शंकाकेँ निवारण करैत मानवीय मूल्यपरक आस्था ओ विश्वासकेँ प्रकट कयल गेल अछि जे यथार्थपरक ओ संघर्षपरक टकराहटिमे स्वार्थ आ निःस्वार्थक अनुगूंज प्रतिध्वनित भेल अछि। जीवनक क्रूर यथार्थकेँ उभारिकऽ स्थिति-परिस्थितिगत मानवीय मनोदशाक चित्रण भेल अछि। ओ दबल-कुचललवर्गमे नव बौद्धिक चेतनाक निर्माणक लेल विराट अन्हारसँ लड़बाक ओरियाओनमे मुट्ठी भरि इजोतक कामनामे हाथ-पयरकेँ लाड़ैत-चारैत मेहनति, बुद्धि ओ लगनशीलताक प्रयोग पर बेस बल देल गेल अछि। आत्मछल आ फतबा बाजीसँ मुक्त भऽ नव मोहाविराकेँ चीन्हबाक-परेखबाक क्रममे नव प्रतिमानक खोज भेल अछि। तेँ इन्क्लाब आर किछु आनय वा नहि, इन्क्लाबी नारा कोनो नव क्रान्तिक सूत्र-पात कऽ पृष्ठभूमि बनिए सकैत अछि। भनहि कोनो ईशाकेँ सत्य बात कहबाक लेल किएक ने शूली पर चढ़ा देल जाउक। इन्क्लाब अबस्से एकटा नव बातक अनुसन्धान थिक। बेनग्न समाजक किरदानी कोनो छपित नहि अछि। जाति, धर्म, भाषा, वेश-भेष आदिक नाम पर अनाचार, भ्रष्टाचार, घूस आदि पराकाष्ठा पर की पहुँचि गेल अछि जे बलात्कार, हत्या, चोरी-डकैती आदि आम बात भऽ गेल अछि। मानवता आ नृशंसताकेँ छाँटिअयबाक लेल, अन्हारसँ इजोतमे अयबाक उपक्रममे हिम्मति आ विश्वासबलेँ जीवनकेँ साकार करय चाहैत अछि। तेँ इजोतकेँ तकबाक अभिलाषी अछि। किएक तँ इजोते जीवन थिक आ आत्माक धुकधुकी सेहो। लक्ष्य धरि पहुँचबाक लेल, जीवनकेँ पयबाक लेल इजोत जे शूली पर टाङल अछि तकरा उतारिकऽ आनय पड़त। ई बात कृषक अर्थात् पुरुष-२ क मुँहे सुनैत अछि जे हर आ पालोक सीढी, बड़का पैना पोदान आ जौरसँ बान्हि-छेकिकऽ सीढ़ी बनाकऽ इजोतकेँ शूली परसँ उतारि लेब। एहि प्रकारेँ 'सूली पर टाङल इजोत' कविताकेँ रूपक बनाकऽ नाटककार राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' निस्सन्देह प्रयोग कऽ आधुनिक नाट्य रूप देल अछि जे अन्तर्मनकेँ छुबैत अछि आ अपन नव स्वाद जगयबाक फलस्वरूप उच्च कोटिक कलाकृति बनैत अछि। एहिमे परिवेश, चरित्र ओ संवादक क्रममे कथ्य कँ तेनाकऽ मिश्रीत कयल गेल अछि जे नाटकीयता चरमोत्कर्ष पर

पहुँचि सशक्ततामे जमिकऽ प्रभाव छोड़ि जाइत अछि। जीवनक सुच्चा छवि प्रतिबिम्बित भेल अछि जे सत्य अछि। हिनक परम्परित नाटक थिक 'जट-जटिन'। ई क्षेत्र विशेषक लोक व्यवहार आ जनपदीय संस्कृति पर आधारित अछि। किछु गोटेक कथन छनि जे 'जट-जटिन' उत्सव थिक। जखन कि उत्सवक अर्थ होइत अछि आनन्द, प्रसन्नता, आनन्दजनक कार्य यथा-विवाह, जलसा आदि। ओना आनन्द आ उल्लास दुनूमे अर्थात् उत्सव आ लीलामे होइत अछि, मुदा उत्सवमे बेसिए। जँकि उत्सवमे संवाद नहि होइत अछि आ लीलामे संवाद होइत अछि तेँ 'जट-जटिन' लीला थिक। उल्लास तँ मोनक भीतरी स्थिति थिक। कोनो नाटक वा दृश्यकेँ देखिकऽ आनन्दक अनुभूति उत्सवक अंग बनैत अछि। लोक नाट्यतत्वकेँ रचनात्मक उपयोग करयवला 'जट-जटिन' लीला थिक। कृषि प्रधान देश आ खासकऽ मिथिलींचलमे कृषि-कार्य वर्षा पर निर्भर करैत अछि। से घर-खर्चीक ध्यानमे रखैत साओन-भादोमे वर्षा नहि होयबाक सम्भावना देखि स्त्रीगण वर्ग बेङ कुटिकऽ समुहगत लीला करैत जाइत छथि देवराज इन्द्रकेँ प्रसन्न करबाक निमित्त। एहिमे दाम्पत्य प्रेम, विरह, विचारक प्रतिबद्धता आ सक्रियता सन्निहित अछि। पारिवारिक पृष्ठभूमिमे रचित वैयक्तिक सुख-दुःख, आकांक्षा, निराशा कोना कोना सामूहिक बनि जाइत अछि तकर यथार्थ जीवनानुभूतिमे अनुभूति आ संवेदनासँ तौलबाक प्रयास भेल अछि। तैयो जीवनक ठोस वास्तविकता उभरिकऽ पारिवारिक पृष्ठभूमिमे बेसिए प्रामाणिक आ विश्वसनीय बनल अछि। सामाजिक परिवर्तन आ बदलावमे नारीक प्रगतिपरक डेग नव समाजक निर्माणमे अहम भूमिका निमाहैत मुक्तिक बाट खोजि लैत अछि। यैह परमपरागत विशेषता आधुनिकतामे फलित भऽ नवीन बाट फोलैत अछि। मंचोपयोगी नाटक दर्शक मोनकेँ बान्हि लैत अछि।

'भैया अएलै अपन सोराज'मे मुक्तिक कामना अछि अर्थात् स्वाधीनचेता स्वर्णिम स्वप्न संजोगल अछि। पराधीनता अभिशाप थिक से कोनो प्रकारक होअय। तँ 'एलै जनता कें सोराज, एलै जनता के सोराज'। कथा-सूत्र एहि प्रकारेँ अछि जे सामन्त जोराबर सिंहक आदंके लोक थर-थर कँपैत छल। बेगारी की खटैत छल जे बहु-बेटीक इज्जति धरि दाओ पर चढ़ल छल। एहि सामन्ती प्रवृतिकेँ समूल नष्ट करबाक हेतु दीना-भद्री योगीक रूप धऽ समूल नाश की करैत अछि जे जनतामे नव उल्लास ओ उमंगक लहरि दौड़ि जाइत अछि। एहि प्रकारेँ नाटककार रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जोरावर सिंहक अन्त देखाकऽ सामन्ती प्रवृत्तिपरक लोककेँ चुनौती देलनि अछि जे अपन व्यवहार बदलथि। एहि समाजक लोक जागि गेल अछि

आ संघर्षकेँ खूजिक्ऽ स्वीकार करैत अछि। जँ आबो समाजक मुँहपुरुषक किरदानी कुकर्म ओ कुचालिलँ बाज नहि अओताह तँ वैह गत होयत जे जोराबर सिंहक भेल अछि। आब जकरा निरीह बुझल जाइत छल से निम्नवर्गीय लोक अपन हक-हिस्साक लड़ाइ लड़ि रहल अछि। ओकरा सफलता भेटि रहलैक अछि। तँ शोषणक बात उठाक्ऽ शोषक बिलहलनि अछि। आत्मचेतना जाग्रत होयबाक फलस्वरूप बदलैत परिप्रेक्ष्यमे सामन्ती अमानवीयताक चिट्ठा फोलैत उन्मुक्त जीवन जीवाक हेतु मुक्तिक बाट देखाओल गेल अछि। नव विकासकबाट अपन रस्ता अपने फोलि लैत अछि। आर्थिक अभावग्रस्तताक फलस्वरुप दबाओल जेबाक कारणेँ महत्वाकांक्षाकेँ जे विनष्ट कयल जाइत अछि ताहि शोषणक व्यथा-कथाकेँ दर्शाक्ऽ मानवीय सदाशयता पर बल देल गेल अछि। एहिमे विचारधाराक स्तर पर प्रगतिपरक जीवन-मूल्यबोध सन्निहित अछि तँ स्वतः विचारात्मक आकर्षणमे दर्शक आकर्षित भ्ऽ जाइत अछि।

सम्बन्ध बनयबाक कला आ सम्बन्ध निमहयबाक कलाकेँ खूब नीक जकाँ फरिछाक्ऽ **'हम घूरि अएलहुँ मीत'**मे अभिव्यक्ति भेल अछि। एहिमे घूरि अयबाक बात अर्थात् जतय रसी ततय बसीसँ जे सिनेह भ्ऽ जाइत अछि से माटि-पानि आ आपकताक सम्बन्ध बिसरलो पर हठात् नहि बिसरल जाइत छैक। आजुक संक्रान्तिकालीन युगमे नेपालमे तराइ आ पहाड़ीक बिगड़ैत सम्बन्ध छहोछीत की भ्ऽ गेल छैक जे पुरुष १ क स्वरेँ 'जत्त मानवीय संवेदना कठोर भ्ऽ जाइछ'। तात्पर्य जे स्वार्थक उन्मादमे स्वार्थी तत्व षड़यन्त्र की रचैत अछि जे 'जकर कोनो लक्ष्य नै ओकर कोन भरोस'। 'रामेश्वर' पहाड़ी अछि। ओ डेराइत अछि। जान मालक डर ओकर पत्नी 'हैटैडा वाली, आ धिया-पूताकेँ बेसी छैक से स्वाभाविके। ओ औन-पौन दाममे सभ किछु बेचि-बिकनि जा रहल अछि। ओकर मीत सुनैत छैक तँ ओकर मोन हाक्रोश क्ऽ उठैत छैक। जाहि मीतसँ दांत काटल अंगूरीसँ सम्बन्ध छलैक से ओकरा छोड़ि की देलकै जे दुनूक हृदयमे एक-दोसरक प्रति दरेग-भाव उफनिक्ऽ हिलोर मारय लगलैक। मुदा, अन्तिम परिणतिमे रमेश्वरक घुरि आयब माने 'अपन मायक कोरमे जिनगी बितएबाक बचन हम खएने छी'। तात्पर्य जे घाओ कतओ आ पौ कतहु। शासकीय सत्ताक लड़ाइ व्यक्तिसँ करब कतेक उचित? छोट-छोट संवादमे औत्सुक्यकेँ जगबैत घटित घटना यथार्थक भूमि पर अपन पहचान बनौने अछि। एहिमे नाटकीयता अछि, जीवनक दर्द अछि आ मानवीय मूल्यक संवाहक थिक।

रहरहाँ देखल जाइत अछि जे नाटककार राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क दृष्टि

चौकन्न रहैत अछि आ सामाजिक चिन्ता सदति मनोमस्तिष्ककेँ हौंड़ैत रहैत छनि। ओ नाटक लिखैत छथि तँ सजग ओ सचढ़ भ्ऽ। तँ हिनक नाटकमे कोनो विशेष ताम-झामक आवश्यकता नहि अछि। कतहु, कोनो ठाम मंचन क्ऽ सकैत छी। मोन बनाउ आ नाटक खेलाउ। पात्रोक बेसी भरमार नहि। संवाद सरल ओ सहज अछि तँ विशेष श्रमक आवश्यकता नहि। हिनक मोनमे विचार उठल आ खट रचनाक सर्जना भ्ऽ गेल। विचारे शिल्प ल्ऽ अबैत अछि। कतहु-कतहु पात्रोचित संवादमे वक्तव्य बेस अछि। बुझी जे रबड़ जकाँ भाषणक-क्रम वा कही तँ उतराचौरीक क्रममे अछि जे नाटकीयताकेँ झूस करैत अछि। जेना 'नेताजी आबि रहल छथि' मे सूत्रधार ओ नटीक संवाद बेसी काल धरि होयबाक सन्ताँ दर्शकक मोन पर गहींर प्रभाव नै छोड़ि पबैत अछि। नाटकक संवाद तँ एहन चुश्त-दुरुश्त होयबाक चाही जे क्षिप्रतामे अपन बात ताहि ढङे उपस्थिति भ्ऽ सकय जे पाठकीय वा दर्शकीय मनोमस्तिष्ककेँ झिकझोड़ैत रहय। ओना भाषिक कमजोरी भेला पर रूपवादक चाङुरमे ओझरा जाइत अछि आ कलात्मकतामे कमीक भान करबैत अछि। तँ फिल-फाजूल शब्दक प्रयोग नहि होमक चाही आ ने आवश्यकतासँ बेसी पात्र मंच पर ठहरि सकय। विचार कतबो नीक किएक ने आबय, मुदा पात्रोचित संवादमे रचि-पचिक्ऽ अयबाक चाही। संगहि एके भावकेँ बेर-बेर प्रकट नहि होमय देबाक चाही। ओना हिनक विशेष नाटक वा एकाङ्की एके गोत्र-मूलक थिक। स्वाभाविक थीक जे दोहरयबाक आभास करबैत अछि। एके कथ्यकेँ बेर-बेर दोहरओला पर नाटकक कथा-वस्तुमे शिथिलता अबैत अछि। तँ की? युग आ परिवेशक आकलनमे सम-सामयिकताक प्रश्न उठाक्ऽ यथार्थपरक दृष्टि नेने दर्शक ओ पाठक धरि नाटक आ एकाङ्की पहुँचयबाक जे काज नाटककार रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' क्ऽ रहल छथि से एक तँ रिक्तपनकेँ भरलनि अछि आ दोसर समस्यामूलक प्रश्न उठाक्ऽ समाजकेँ एकसूत्रमे जोड़बाक प्रयास कयलनि अछि। कारण, आजुक युगमे सम्बन्ध जे छहोछीत भ्ऽ रहल अछि तकर कारक तत्वक खोज हिनक नाटकमे सन्निहित अछि। यैह मानवीय मूल्यबोधक संकटकेँ बचयबाक चिन्ता नाटककेँ सशक्त बनबैत अछि। गाम-घरक नेह-छोहकेँ जोगाक्ऽ रखबाक प्रवृत्तिए हिनक नाटककेँ दमदार बनबैत अछि।

नाटककार भ्रमर लिखैत छथि, धुरझाड़ लिखैत छथि आ मैथिली जगतक विभिन्न विधामे लेखनी चलयबाक फलस्वरुप स्वाभाविक थिक जे नाटक दिस ध्यान पूर्वहमे गेल छलनि, मुदा एमहर आबिक्ऽ एहि विधाकेँ गहिक्ऽ पकड़लनि अछि। प्रमाण थिक जे नाटक लिखब दिस उन्मुख होयब। ओना एखनो हिनक आंगूरे पर

गनबा योग्य नाटक ओ एकाङ्की अछि। तैं की ? प्रजातंत्रक स्वर सिहकिते राजनैतिक, समाजिक, आर्थिक, ओ सांस्कृतिक चिन्तनक क्रममे हिनक छटपटाइत मोन औंड़ की मारय लागल जे वर्तमान समयक धुकधुकीक अनुगूंज हिनक रचनाक केन्द्रीय स्वर बनल । ई सत्य अछि जे हिनक कथ्य, शिल्प, भाषा, भावमे विकासकऽ क्रम परिलिक्षित होमऽ लागल । एतय हम स्पष्ट कऽ दी जे कथ्य ओ शिल्पमे विकास अकस्मात् नहि होइत अछि । अनुभवक परिपक्वताक संग होयबाक चाही, होइते अछि। एकर अर्थ ई नहि लेबाक थिक जे उमेरक संग सभ किछु अनायासे भेटि जाइत अछि । जैंकि नेपालक मैथिली साहित्यकारक गाँहछल मोन राजशाही शासनमे व्यवस्थाक विरोध स्वरुप किछु लिखबाक लेल औंड़ मारैत रहैत छल तैं सुअवसर पबिते कुव्यवस्थाक प्रति बिक्ख-वमन होमय लागल। ई नकारत्मक नहि, सकारात्मक सोच थिक। कारण, व्यवस्थित होयबाक लेल सचेत ढङे अंगूरी देखायब आवश्यके थिक। भ्रमरक नाटककार एहि बातकें नीक जकाँ चिन्हलनि, परेखलनि आ चिन्तन-मनन कऽ कलम चलौलनि । ओ आम जनजीवनक चरित्र-चित्रण की कयलनि जे ओकरे भाषामे ओकरे वस्तुकें परोसि देल। हिनक लिखल नाटक कम अछि तैं की ? कोनो नाटकक लेल उपयुक्त रंगमञ्च चाही। कारण, कोनो नाटकक सफलता मञ्च पर आँकल-जाँचल जाइत अछि। ई सत्य थिक जे रंगमञ्चक अभाव अछि। तैयो हिनक यदा-कदा रंगमञ्च पर अभिनीत भेवे कयल। किछु नाटक हमरो देखल अछि। जँ अतिशयोक्ति नहि बूझल जाय तैं खचाखच हाल भरल दर्शकक बीच 'जट-जटिन' नाटक प्रदर्शित भेल आ बेङ कुटबाक दृश्य प्रारम्भ मेल तैं झमाझम पानि बरिसय लागल । तात्पर्य जे वर्षा नहि होइत छल, आ मेघ झहरि उठल । जनकपुरधामक ई दृश्य हठात् मोन पड़ि गेल' अछि। एकर अर्थ लोक विश्वासमे जतेक ली, धर्मान्धतामे नहि लेबाक अछि।

नाटकमे लेखक, निर्देशक, कलाकार आ दर्शक सभक भूमिका अछि। कथ्य तात्कालिक होइत अछि आ भविष्यकालिक सेहो। अतीतकालीन सेहो भऽ सकैत अछि, होइते अछि। नाटककें मात्र मनोरंजनी नहि होयबाक चाही । से नाटककार 'भ्रमर' बौद्धिक आ संवेदनात्मक संस्पर्शमे सश्क्त कथ्य ओ भाषाक प्रवहमयतामे वैचारिक द्वन्द्व उभारिकऽ प्रस्तुत कयल अछि। तैं कथ्य आ नाट्यभाषामे सशक्ता ओ गम्भीरता अबैत अछि। हिनक नाटककार कतहु भकुआइत नहि अछि आ ने गोङ्ग भऽ चुप्प रहैत अछि। पात्रक चरित्र खूजिकऽ कथ्यक स्तर पर बजैत अछि। जैंकि नाटक दृश्यकारी कला, अभिनय धर्मा आ दर्शक क्रममे व्यापक सत्यक प्रतीक थिक तैं एहि चुनौतीकें

स्वीकारैत नाटककार कतिपय नाटकक सर्जना कयल अछि। जाहि गतिएँ समाज, राष्ट्र ओ विश्वक परिदृश्य समयक संग बदलि रहल अछि ताहि परिप्रेक्ष्यमे हिनक नाटक अपन स्थानीय परिवेशमे संवेदनात्मक ओ गम्भीरता दुनू दृष्टिएँ प्रभाव छोड़ैत अछि। आवश्यकता अछि जे हिनक नाटकमे सम्पूर्ण समाज उभरिकऽ आवय जाहिमे सम्पूर्ण विश्वक संस्कृति झलकि उठय। ई काज ततेक सरल ओ सहज नहि अछि। तैं दुर्गमो नहि कहल जायत । कारण, आजुक परिवेशगत मनुक्ख केन्द्रित रचना हिनक नाट्य साहित्यमे उभरिकऽ जे मानवीय मूल्यबोधक ओकालति करैत अछि से वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे नेपालीय आधुनिक मैथिली साहित्यक नाट्य प्रतिमान बनयबामे अपन केन्द्रीय भूमिका निमाहैत इतिहास बनबिते अछि।

चन्द्रेश
मनमीत कुटीर
राजपूत कॉलोनी, मौलागंज
दरिभंगा

भैया, अएलै अपन सोराज

आई सँ आठ सओ वर्ष पूर्वक कुनौली बजारक एकटा चौबटिया । घनगर गाछक तरमे माटि आ ईंटसँ बनल चबुतरा । पुरुष-१ अशोथकित मुद्रामे चबुतरालग अबैत अछि । चारूकात नजरि खिरबैत अछि । कान्हपरक अंगपोछा हाथमे लऽ मुहँपर चुहचुहाइत घामकेँ पोछैत चबुतरापर बैसि रहैत अछि । पुरुष-२ कान्हपर हर, हाथमे हरक पैनासँ दू गोट बयलकेँ रोमैत चबूतरालग अबैत अछि । पुरुष-१ केँ थकित देखि कनेक बिलमि जाइत अछि ।

पुरुष-२ : भाई रविया ! अपन केहन हालत बना लेने छह ।

पुरुष-१ : (दीर्घ निसास छोड़ि) से की ई आइएके हालति है । भाइ आब तऽ जीअब मुश्किल भऽ गेल । बेगारक एकटा हद होइ छै ।

पुरुष-२ : माने तोरो....।

पुरुष-१ : साफे की । भोरेसँ बखारीमहक धान निकालि एसगरे तौलैत-तौलैत जानपर आफत आबि गेल । एक मुट्ठी जलखईयो नै । चण्डलबा !

पुरुष-२ : (बयलकेँ ठाड़ करैत) हौ रे हौ ! भाई, हमरो हालत कोनो नीक नहि । भोरेसँ पँचबीघबामे हर जोतैत-जोतैत जखन पार नै लागल तऽ बयल खोलि देलियै । तैयो बारहसँ उपरकेँ अमल भऽ गेलै भाई, कैला चण्डलबा सरबा एक टुकड़ि रोटियो पठाएत ।

पुरुष-१ : ई हमरे तोहर दु:ख नै हौ, सौसे गामकेँ पेरने है ई राक्षस । हमरासभकेँ अपना चास-बासमे बैसौलक इहे बेगारी खटबऽलए ने । आब तऽ हमरासभकेँ अपन कहलए रहिए की गेल है ।

पुरुष-२ : (कनेक लग जा) भाइ, ठीके कहै छह । मंगलबा अपन बेटाकेँ गौना करा कऽ पाँच-साते दिन भेलै लैलकैए । सुनै छी कालि्ह राति अपन पा सँ उठबा लेल कै । भरि राति हबेलीमे रखलकै ।

पुरुष-१ : परसूकेँ कथा नै बुझल हौ । सुनरपुरकेँ अजोधी घरबालीकेँ बिदागरी करा कऽ लऽ जाइत रहै, एहि बाटे । सरदारकेँ लठैतसभ पालकिए घेर लेलकै आ हबेली ढुका लेलकै । कतबो बेचारा चिचिआइत रहि गेलै, घरबालीकेँ नहि छोड़लकै ।

पुरुष-२ : भाइ, ई चण्डलबा कतेक दिनधरि एना सतौतै, बेगारी खटेतै, लोकक बेटी-पुतहुकेँ इज्जति लुटतै । अन्हेर भऽ गेलै भाइ, अन्हेर !

पार्श्वसँ गीतक सामूहिक स्वर सुनि पड़ैछ-

सभ दिन आई खढ़ कटाबै छै
सात सओ मुसहरबा से
सभ दिन आई खढ़ कटाबै छै
सात सओ मुसहरबा से न हय...।
आ गे बड़ तऽ बेइज्जति आई करै छलै
कुनौली बजरियामे
आ बड़ तऽ बेइज्जति करै छलै
कुनौली बजरियामे ने हौंऽऽऽ ।

पुरुष-१ : देखहक, सुनहक गामक हाहाकार । ई सामन्त, राजासभक अत्याचार आब बेसी दिन नै चलतै भाइ । हमरा तोरा कान्हपर बेगारीकेँ गुलामीकेँ बोझ हटतै बुझाइए । जनता जागरूक भऽ रहल है । कुछ होतै हौ भाई !

पुरुष-२ : (हरकेँ कान्ह पर धऽ चलबाक उपक्रम करैत) बयल कतहु भागि जएतै तऽ जुते-लाते एक कऽ देत । चल, आइ दिनकेँ आसमे किछु दिन और सहि ली ।

पुरुष-१ : भाइ कोनो वीर पैदा नै भेलैए जे एहि चण्डाल सामन्त जोराबर सिंहकेँ मारतै ।

पुरुष-२ : (चलैत-चलैत रुकैत) एकटा पताकँ बात । सुनै छिऐ जे जोगियानगरमे कालू सरदारकँ बेटा छै दीनाराम, भद्रीराम । आ ओ हमरेसभकँ जाति छै कहाँदन । खुब चलतीकँ वीर है ।

पुरुष-१ : (उठैत) एह, बात तऽ बड़का बजला । एहि चण्डालकँ मारि दितै तऽ पोसले खसी चढ़ा दितिऐ दीना-भद्रीकँ । घर-घर एक-एकटा खसी पोसि देबै सभ सदाय भाई । लगैए हुनके गोहराबऽ पड़तै आब... ।

पुनः पार्श्वसँ सस्वर गीतक बोल सुनि पड़ैछ-

ताहि दिन ओकरा नाम से आई
खसी चढ़ा देबै कुनौली बजरियामे
करै छै अराधना सहोदरा
अपना तऽ जतिया से
करै छै अराधना भैया
अपना तऽ जतिया से ने हेय ।

मञ्चसँ दुनू प्रस्थान । अन्हार ।

मञ्चपर प्रकाश । पूर्ववत् चौबटिया । गाछक चबूतरापर बैसल अछि पुरुष-१ । अंगपोछासँ मुहँपर हवा झोंकैत । पुरुष-२ क धड़फराइत प्रवेश। ससरि कऽ पुरुष-१ क लगमे जाइत अछि ।

पुरुष-२ : (चारूकात अकानैत । ककरो आगमन नहि बुझि) भाइ, हमरासभकँ पुकार सुनि लेलकौ दीनाभद्री महाराज ।

पुरुष-१ : (प्रसन्नतासँ) ठीके भाइ !

पुरुष-२ : हँ, हौ ! बजै छलखिन्ह जे अपन जाति-भाइ पर अत्याचार आब नै होब' देबै । मारबै जोराबरकँ जेना हेतै तेना । लगैअ दिन घुरतो अपनोसभकँ ।

पुरुष-१ : लेकिन, जोराबर तऽ बड भारी पहलमान है हौ । सात सओ पा सँगे असगरे सर खेलै है फलकापर । सोलह गजकँ फरुआ लंगोटा पहिरै है । सओ हाथीकँ बल है हौ ।

पुरुष-२ : हमरोसभकँ दीनाभद्री महाराज कम नै हौ । जखन रूपमे अबै है तऽ केहन केहनकँ चीत्त कऽ दै है । जोगियानगरमे कनक सिंह धामी रहै । नाम सुनने छलहो ?

पुरुष-१ : हँ, हौ ! ओइ राक्षसकँ के नै नाम सुनने होतै ।

पुरुष-२ : के मारलकै ओकरा, बुझने छहो ?

पुरुष-१ : कहँदन दूटा शिकारी छलै ।

पुरुष-२ : हौ ! ओहे दीनाभद्री महाराज रहै । बेगारी खटाब' बला हुनका दरबज्जापर जा कऽ माता निरसो भीलिनियाकँ मारिपीट देलकै । की छलै-दीनाभद्री एतेक ने मारलकै जे ओ अपन घरबाली बुधनी बतरनी सँगे जंगलमे सोन्हि कोरिकऽ नुका कऽ रह' लागल ।

पुरुष १ : तब ?

पुरुष २ : तब की ? भद्री महाराज बिलाड़िकँ रूपमे पत्ता लगा लेलकै आ कनक धामीकँ मारिकऽ गामकँ उद्धार कैलकै ।

पुरुष १ : लगै है बय भारी लड़ाकू है ।

पुरुष २ : हँ, हौ ! वीर योद्धा है ! देखिह' जरूर जोराबर मारल जाएत । सम्पूर्ण श्रमिक वर्गकँ देवतारूपी है दुनू भाई । शोषण आ अत्याचारसँ उएह मुक्त कराओत ।

पुरुष १ : सातो सओ मुसहरकँ घरमे छागरे पोसल छै । हुनकँ नामपर ।

चौबटिया बाटे ताबत किछु व्यक्ति हतासल झटकारैत गामदिस भागल जाइत । दूनूकँ देखि ओहिमहक एकगोट स्थिर होइत कहैत छैक-भागऽ मरदे । जोराबरकँ लठैत लाठी भँजैत आबि रहल छै । बजै है-सरदारकँ विरोधमे के लागल है, आई ओकर खैर नै होतै ।

दुनू साकांक्ष भऽ जाइछ । एक दोसरक मुँह देखैत अछि । चेहरापर भयक छाप स्पष्ट देखि पड़ैछ । ओहो दुनू पएर झटकारैत गामदिस बढ़ि जाइत अछि ।

अन्हार ।

मञ्चपर प्रकाश । दृश्य पूर्ववत् । दू गोट लठैत लाठी भँजैत प्रवेश करैछ।

मञ्चपर कनेककाल लाठीक करतब देखबैत अछि । फेर शान्त भऽ चबूतरापर बैसि जाइछ ।

लठैत १ : आई तऽ मौजे-मौज है गोंधिया ।

लठैत २ : कथिक मौज रै ।

लठैत १ : रे सरदार की कहलकैअ । गाममे घरे-घरे पैस । ई मुसहरबासभ हमरे जमीनपर बैसैअ । हमरे विरुद्धमे गुर्मीन्टि करैअ । सारसभकें पीठी दागिकऽ आ ।

लठैत २ : हँ, से तऽ कहलकैअ । तऽ पीठी दागऽ कथिक मौज। ई तऽ रोजकें काम भऽ गेल है ।

लठैत १ : रे सार । सब दिन तों चोन्हबे रहि गेलेँ । घर-घरमे ढुकबैत घर कें मालो समान देखबेँ नै रै ।

लठैत २ : तऽ ।

लठैत १ : तऽ की । नया-नवेलीकें सँग मौजमस्ती नै करबेँ ।

लठैत २ : अच्छा, तऽ तों से बात कहै छलै । हम तऽ दोसर बात बुझै छलियौ ।

लठैत १ : आई तऽ मौजेमौज है ।

लठैत २ : कुछो करबही आ सरदारकें पता लगतै तऽ ?

लठैत १ : कतेको घरकें बेटी पुतहु सरदारकें हबेलीमे हमसभ नै पहुँचबै छिऐ ?

लठैत २ : से कतेको !

लठैत १ : एतेक पहुँचबिते छिऐ तऽ आई दू-चारि हमहुँसभ हाथ लगा देबै तऽ कोन पहाड़ खसि पड़तै ?

लठैत २ : से तऽ है । एह, ठीके कहलेँ । चल सार सदायसभकें मजा चखा दै छियै ।

दुनू उठैत अछि आ चलबाक हेतु उद्दत होइत अछि । फेर की फुराइ छै लठैत १ घुरिकऽ चबुतराकें देखैत अछि । किछु सोचैत अछि ।

लठैत १ : (लठैत २ सँ) हे, गोधिया । हमसभ एहि चबुतराकें तोड़ि दी तऽ नीक ।

लठैत २ : कैला ?

लठैत १ : सार मुसहरबासभ एहिपर बैसिकऽ बात लगबैअ । घरमे बैसऽकें जगहो नै है, सुगरकें खोर है । एतै बैसिकऽ सरदारक खिलाफ साजिश रचैए । तहिसँ...।

लठैत २ : धूत्त मरदे ! हौ, एहि गाछ आ चबूतराकें की दोष । थाकलो ठेहिआएल हमहुँसभ अबै छी तऽ एहिपर सुस्ताइ छी । एना नै सोच...।

लठैत १ : लगैए, तों ठीक कहै छह । चलऽ ।

दुनूक प्रस्थान । अन्हार ।

मञ्चपर प्रकाश । स्थान पूर्ववत् । दू गोट योगीक प्रवेश । कान्हसँ सारंगी टंगने। राजा भरथरीक गीत गबैत । गीत गबैत एक चक्कर लगेलाक बाद चबूतरापर बैसि रहैछ ।

योगी १ : भैया दीना ! के चिन्हत गऽ हमरासभकें एहि ठाम ।

योगी २ : हँ भाई ! हमसभ गुरु गोरखनाथक शिष्य लगैत छी । एहि भेषमे जोराबर सिंहकें खोजबामे सहूलियत हएत ।

ताबत ओहि बाटे एकटा बुढ़िया आंगनदिस जाइत देखि पड़ैछ । चबुतरापर गुदरिया बाबासभकें बैसल देखि पूछि दैत अछि ।

बुढ़िया : गोर लगै छी बाबा !

दुनू योगी : (एक्केसँग) कल्याण होऔ ।

बुढ़िया : कत्तसँ आसन एलैए बाबा ?

योगी १ : हमसभ गुरु गोरखनाथकें शिष्य छियै । एकर नाम वृजमोहन छियै आ हमर नाम बैताली ।

बुढ़िया : की सेवा करियै बाबाकें ?

योगी २ : हमसभ तीन दिनसँ भूखल छी । किछु खाएला भेटि जेतै तऽ भगवान गोरखनाथ तोरा कल्याण करितऽथुन ।

बुढ़िया गुनधुनमे पड़ि जाइत अछि । पृष्ठभूमिमे गीतक स्वर अभरैछ -

से कथि लऽ कऽ आव महात्मा
अहाँकें करबै
कथि लऽ कऽ आव महात्मा
अहाँकें करबै ने हय
हौ बाबा
ओहो जेहो छलै मरद आइ हमरा
जोगिया तऽ नगरियामे
चलै छै जोगिया
जोगिया नगरियामे ।

योगी १ : कथि लेल बुढ़ी सोचमे पड़ि गेल छी ?

बुढिया : की कहू योगी महाराज ! एहि गामक सामन्त जोरावर सिंह सौंसे गौआँकेँ बेगारेमे खटबैत छैक । एक्को सेर बोइन नै दै छै । घरमे किछु नै रहै छै खाएला । से हम तऽ मोशिकलमे पड़ि गेल छी...।

दुनू योगी गम्भीर भऽ एक-दोसराकेँ देखैत अछि । किछु सोचि माथ डोलबैत अछि ।

योगी १ : बूढ़ी, अहाँक घरमे जतबे चाउर अछि से खोजू । तकरे चूल्हीपर अदहन चढ़ा कऽ ओहिमे राखिदिऔ । हमरासभकेँ ताहीसँ पेट भरि जाएत ।

बुढ़िया आश्चर्यसँ योगीदिस देखैत अछि ।

योगी २ : ठीके कहै छथि बैतालीनाथ । अहाँ जाउ, चाउर लगाउ गऽ ।

बुढ़िआ अछताइत-पछताइत आंगनदिस जाइत अछि ।

योगी १ : हे बघेसरी माता ! बुढ़ियाकेँ सहायता करिह । सभ दिन हम तोरा पूजा देलियह, आई तोँ सहाय होइह' !

कनेक कालमे बुढ़िया दू गोट छीपामे भात, दालि आ आलूक चोखा लऽ कऽ चबूतरापर अबैत अछि । दुनूकेँ श्रद्धा-भावसँ देखैत आगाँमे थारी राखि दैछ ।

बुढ़िया : (हाथ जोड़ि) हे योगीसभ ! हमरा नै लगैया अहाँसभ साधारण लोक छी । एक पाव चाउर फटकि कऽ भेल छल, अदहनमे धरिते भरि तौला भात भऽ गेलै । ई चमत्कार मामूली नै छै । जरूर अपने पहुँचल लोक छियै ।

योगी १ : बूढ़ी माता ! अहाँकें अन्न हमरासभकें खाएकें छलै, से भेटल । आउ भाई, भुख लागल है । जल्दी खाउ !

बुढ़िया अपन प्रश्नक उत्तर नहि पाबि आर आश्चर्यमे पड़ि गेल अछि । हाथ जोड़ने सोझाँमे ठाढ़ छैक । दुनू भाइ खाना खा कऽ प्रसन्न मुद्रामे आबि जाइछ ।

योगी २ : बूढ़ी माता अपने धन्य छी । हमरासभकें जुड़ेलहुँ । आब कहू हमसभ की कऽ सकै छी ?

बुढ़िया : (भावविह्वल भऽ) हमरा लगैए हमरासभपर होइत अत्याचार आब अपनेसभक कृपासँ खतम हेतै ।

योगी १ : के करैछै अत्याचार ?

बुढ़िया : उएह, जोराबर सिंह । घर-दुआर, खेत-खरिहान, बहु-बेटी ककरो इज्जति नै रहे देलकै महाराज !

योगी २ : कोइ नै किछु कहै छै ?

बुढ़िया : ककर मजाल छै, ओइ सैतनमाकें देहोमे केओ भीर लेत । सात सओ पाकें रोज खेलबै छै । कहाँदन जोगिया गाममे हमरेसभकें जाति दीनाभद्री है ओकरे गोहरबै है भरि गामकें सदायसभ । घर- घर छागर पोसने है ओकरालेल । ऊ एतै कि नै पता नै, अपने योगीबाबा आएल छियै, किछु करियौ ।

योगी १ आ योगी २ चबूतरापरसँ उठि जाइत अछि । भावुक भऽ बुढ़ियाकें दुनू कातसँ पकड़ि भाव विह्वल मुद्रामे मञ्चक आगाँ भागदिस आबि जाइत अछि । प्रकाशक घेरा तीनूक अनुहार होइत पूरे शरीर पर पड़ैत अछि ।

योगी १ : अहाँ चिन्ता नै करू माँ । अहाँक बेटासभ अत्याचारी जोराबरकें

निघटाबऽ लेल आबि गेल अछि । आब जोराबर मरतै माँ, अहाँ निश्चिन्त भऽ जाउ । देखल जेतै उलङ्गी पहाड़क अखराहापर ।

बुढ़िआ अश्रुपुरित आँखिए दुनूक अनुहारपर देखैत अछि । आँखिमे आबिगेल चमकसँ लगै छै योगीक बातपर ओकरा पूर्ण विश्वास भऽ गेल छै ।

अन्हार

प्रकाश । दृश्य पूर्ववत । चबूतरापर एकटा नवकनियाँ बूढ़ीया साउसकें केसमहक ढील तकैत देखि पड़ैछ ।

सरदार जोराबर सिंह की जय । ई स्वर सामूहिकरूपें पार्श्वसँ अबैत छैक। स्वर सूनि साउस-पुतहु चौंकि उठैछ । पुतहु हात बारि साउसकें अपनासँगे चबूतरासँ उठा दैत छैक ।

पुतहु : माए, चलथु ! चण्डलबा एम्हरे आबि रहल छै ।

साउस : हँ, एक्को रत्ति चैनसँ रहऽ नै दै है बइमनमा । चल बहुरिया, एकर छाँहो ने पड़ऽके चाही ।

दुनू साउस-पुतहु झटकारिकऽ गामदिस बढ़ि जाइछ । जय-जयकार जारी अछि। मञ्चपर एकटा लठैत आगाँ-आगाँ, तकराबाद चारिगोट मुस्तण्ड पालकीसन सिंहासनकें कान्हपर लदने आ तकरा पाछाँ दू गोट लठैतक प्रवेश । पालकीपर खुब मोटसोट, चौड़गर छाती, पैघ-पैघ मोँछ, ललाटपर टीका, धोती आ पएरमे पनही जुत्ता । रूप रंग आ मान-सम्मान स्पष्ट लगैछ ई जोराबर सिंह अछि ।

मञ्चपर अबिते चबूतराकें देखैत अछि । कहारकें रुकबाक ईशारा करैछ ।

जोराबर : शमशेर सिंह ?

अगिलका लठैत : जी सरदार !

जोराबर : कनिक रोक, चबूतरापर सुस्ताले सभ गोटे ।

अगिलका लठैत : हेतै सरकार !

कहार पालकी धरतीपर रखैत अछि । जोराबर उतरैत अछि ओहिपरसँ । मोछपर ताव दैत चारूकात देखैत अछि ।

जोराबर : रौ, केसर सिंह ! पूरा रस्ता सुन्न लगै छौ । गाममे लोक नै छौ की ?

पछिलका लठैत : सरकार, अपनेकें आगामे ठाढ़ रहे से ककर मजाल है हजूर । जोराबर चबूतरापर बैसऽ चाहैत अछि ।

शमशेर : सरदार, ई चबुतरा तऽ अपन राजक लेल खतरा भऽ गेल है ।

जोराबर : (ठमकि) से केना रौ ?

शमशेर : अइ गामकें मुसहरबासभ अहिठाम गोलियाकऽ सह-मातुकें खेल खेलैत रहैअ, हजूर ।

जोराबर : फरिछा कनी ।

शमशेर : बजैत रहैअ जे आब बेगार नै करबै । हमरोसभकें मेहनातक मोल छै किने ।

जोराबर : अच्छा तऽ आब अपन मोल खोजैअ ।

केसर : (लगमे जा) सरकार, कहाँदन जोगियाकें कोनो दीनाभद्री है । तकरा अपन गोलैसीमे शामिल करऽकें चक्रचालि चलारहल है भीलसभ ।

जोराबर : हुँऽऽऽ ।

शमशेर : गुप्तचर कहलक अछि जे काल्हि राति एतऽ दूटा योगी गुदरिया गोसाईं आसन देने रहै । ओकरा जीवछी भिलनी बड आगत-स्वागत कऽ पाठ पढ़बैत रहै ।

जोराबर : (तनिकऽ) अएँ, एतेक बात भऽ गेलौ आ हमरा खबरि नै । कत्त छौ भिलनी ? ला पकड़िकऽ । एहि गाछपर लटका बुढ़ियाकें ।

लठैतसभ आदेश पालन करबाक लेल उद्यत होइत गामदिस जाए चाहैत अछि ।

ठहर ! अखनु तऽ अखाड़ापर जाएकें बेर है । पासभ बाट तकैत होतै । घुमब तऽ देखबै ओइ बुढ़ियाकें आ आरो मुसहरबासभकें । पाँखि जे निकललैअ । हम कतरि देबै आइए ।

पालकीदिस बढ़ैत-बढ़ैत रूकि जाइत अछि ।

रौ शमशेर !

शमशेर : जी सरकार !

जोराबर : रौ सब फसादकेँ जड़ि इहे गाछ आ ई चबुतरा लगै हौ। एक बीत्ता जमिन नै है सार मुसहरबासभकेँ। अहिठाम जम्मा भऽ कऽ हमरे विरोधमे बतकटौअलि करैआ। हे, सभसँ पहिने एकरे उखाड़।

सभ लठैत तमतम करऽ लगैछ।

इहो काज घुरलापर करिहेँ। देह कस-कस करैअ। लगै है, आइ हमरा हाथे ककरो परान गेल है।

जोराबर पालकीमे बैसैत अछि। कहार उठबैत छै। पार्श्वमे गीतक स्वर अभरैत अछि।

सात *सय पाकेँ खेलबऽ*
चललै जोराबर अखड़ियामे
सात सय पाकेँ खेलबऽ
चललै जोराबर अखड़ियामे ने यौ!
उलझी पहाड़पर भैया
घनघोर मल्ल युद्ध होतै आई
उलझी पहाड़पर भैया
घनघोर मल्ल युद्ध होतै आई ने हौ।

अन्हार।

मञ्चपर प्रकाश। दृश्य पूर्ववत्।पृष्ठभूमिमे उज्जरका पर्दापर ध्वनि आ प्रकाशक माध्यमसँ मल्ल युद्धक छाया चित्र देखाओल जाइछ। मञ्चपर किछु महिला, पुरुष, बालक एम्हरसँ ओम्हर, ओम्हरसँ एम्हर करैत भगैत। पृष्ठभूमिमे गीतक स्वर सुनि पड़ैछ।

आ खेंचकेँ दण्ड जोराबर
उलझीमे खिचै छै
आ खेंचकेँ दण्ड जोराबर
उलझीमे खिचै छै ने हौ।

पर्दापर दण्ड-बैसकी करैत छाया देखि पड़ैछ।

पछिये भर जा कऽ दुलरुआ
बैसि गेलै फलकापर
आ पछिये भर जा कऽ दुलरुआ
बैठिये गेलै फलका उपरबामे ने हय।

मल्ल युद्धक तैयारी। भीड़न्त देखाओल जाइछ।

आ मैया तऽ बधेसरी नाम से
मिट्टी तऽ चढ़ा देलकै
आ मैयाक नाम से दादा
मिट्टि चढ़ा देलकै ने हेय।

घनघोर युद्धक दृश्य। दू गोट भीमकाय योद्धाक मल्ल युद्धक प्रसङ्ग।

पड़ि गेलै युद्ध हौ दादा
उलझी पहाड़ पर
आ पड़ि गेलै युद्ध हो दादा
उलझी पहाड़ पर ने हय।
प्रेमी हो प्रेमी
ओकरा जे डरने से ओहो ने डेराइ छै
ककरो ने डरने कोइ नै डेराइ छै हौ।

एकटा चीत्कारक सँग एकटा योद्धाक हाथमे कटल मूड़ी लटकल छै। अट्टाहासक स्वर।

जा के मुड़ी आब खसै छै
जोराबर सिंहकेँ अंगनबामे
आजाकेँ आई मुड़ी गिरलै
जोराबर सिंहकेँ अंगनबामे ने हय।

पृष्ठभूमिमे जयजयकार सुनि पड़ैछ। दीना-भद्री महाराजक जय। मञ्चपरक भगैत सभ रूकि जाइछ आ जय-जयकारमे साथ देबऽ लगैछ।

अन्हार

मञ्चपर प्रकाश । दृश्य पूर्ववत् । गामक किछु लोक अपन पारम्परिक भेषभुषामे मञ्चपर अबैत अछि । ककरो कान्हपर हर, कोदारि छै तऽ ककरो माथपर ढाकी । ककरो हाथमे डोलमे पानि छैक तऽ ककरो हाथमे जलखइक मोटरी । मञ्चपर प्रसन्नतापूर्वक कृषक परिवारक चहलकदमी।

पृष्ठभूमिमे गीतक बोल प्रसारित भऽ रहल अछि ।
अप्पन घर, अप्पन खेत, अप्पन भेलै समैया
अप्पन हर, अप्पन पसार, अप्पन भेलै गोसैञा
भैया हो ऽ ऽ ऽ ऽ
अत्याचारी जोराबरसँ मुक्त भेलै समाज
एलै जनताकेँ सोराज, एलै जनताकेँ सोराज ॥
हो भैया एलै अपन राज....।

क्रमशः अन्हार । पटाक्षेप ।

□□□

महिषासुर मूर्दाबाद

(एकल नाटक)

पार्श्वमे जीवनक सहजता देखाओल जा सकैछ । सभतरि लोक काजमे बाझल अछि, मुदा समाजक दुश्मन मौकाक ताकमे रहैत अछि आ अपहरण, बलात्कार, कालाबजारी करैत अछि । ताहीबीच एकटा खून भ' जाइछ । ई ओहने समाजक दुश्मनक खून भेल रहैछ । पार्श्वमे हत्या, खूनक शोर होव' लगैछ । मंचपर पर्दा हटैत अछि, प्रकाश युवक - १ के हाथ पर पहिने पड़ैत अछि, तत्पश्चात्, प्रकाश युवकक सम्पूर्ण देहपर पड़ैत देखल जाइछ । युवक - १ दुनू हाथमे लागल शोनितकेँ निहारैत अछि। विस्फारित नेत्र सँ देखैत मुँहक आकृति बनबैत विगाड़ैत अछि ।

युवक - १ : (स्वगत, हाथकेँ देखैत) खून सँ डुवल ई हमरे हाथ थिक ?

पार्श्वसँ : ककर लगैछौ ?

युवक - १ : (आश्वस्त होइत) हँ, हमरे हाथ थिक। मुदा ई खूनसँ भरल ?

पार्श्वस : ह, सोनितसँ भरल अछि। एकर परिणाम जनै छिही ?

युवक - १ : तैयो अहाँ हमर पछोड किए धएने छी ?

पार्श्वस : किएक तऽ हम तोरासँ अलग नै छी।

युवक - १ : अलग नै छी....(विस्फारित नेत्र सँ) माने, अहाँ कतौ पुलिसक आदमी त नै ?

पार्श्वस : नै रे मुरख। हम पुलिस रहितहुँ त' तोँ हवालातमे वन्न रहिते।

युवक-१ : हवालात ! (कनेकचुप्पी) नहि....सत्य-सत्य वाजू, अहां छी के ?

पार्श्वस : हम.....?

युवक-१ : हँ, अहां ....?

पार्श्वस : हम तोहर आत्मा छियौ, आतम पुरुष ।

युवक-१ : (आश्वस्त होइत) । (कनेक चुप्पीक सँग एक ठामवैसि रहैछ) मुदा ई जिज्ञाशाक अर्थ ?

पार्श्वस : मात्र तोरा सचेत कराएव ।

युवक-१ : ओह........।

पार्श्वस : तए नै पुछलहु अछि, परिणाम वुझल छौक ?

युवक-१ : नहि, हमरा किछुनै वुझल अछि । हमरा जे करवाक छल कऽ देलिऐ ।

पार्श्वसं : एकर माने छौ जे तोँ ककरो हत्या कयने छहीक ।

युवक-१ : (पुनः चौकिकऽ) हत्या । (किछु विचलित भ') ह, हम हत्या कयलहुँ अछि।... एखने टटके ।

पार्श्वस : आब की हयत से वूझल अछि ?

युवक-१ : हम मरनिहार दे नै, तोरा दे कहै छियो ।

युवक-१ : (विस्मयसं) हमरा दे । आव हमरा की हयबाक अछि ।

पार्श्वसँ : (जोरसं ठहक्का) आब तोरे होयबाक छौ ।

(कातर नजरिसं चकुआइत) नहि, आव हमरा किछुओ नै भऽ सकैए ।

पार्श्वसँ : आव तोरा फांसी हयतौ ।

(पृष्टभूमिमे फांसी शब्दक इक्को गूंज' लगैछ)

युवक-१ : (ठामे वैसैत) नई । हम मरऽ नहि चाहै छी ।

पार्श्वस : (पुनः ठहक्का) ह, एहिना लोकके खून करैत रह, आ जीबाक सपना-देखैत रह ।

युवक-१ : नई, नई । हम फाँसीपर लटकऽ नहि चाहैछी । एखन हम जीअ चाहैछी ।

पार्श्वस : (गम्भीर स्वर) कीन्नहु नहि । केओ ककरो हत्या क'क जीवि नहि पौलक अछि ।

युवक-१ : तखन ?

पार्श्वस : तखन तोरो मरऽ पडतौ । फाँसी पर तडपि-तडपि कए ।

युवक-१ : (शान्त स्वरमे) हमरा मरलासँ एहितरहक अराजकता जे किछु काल पूर्व देखल से वन्न भऽ जाएत ? नई । ते हमरा कहुना बाचऽ पडत ।

पार्श्वस : वाह, वाह, एहिना मारैत रहु आ जीवाक इच्छा जगौने रहु । खूव, वहुत खूव ।

युवक-१ : (सशंकित भ') तखन ? (पार्श्वमे पुनः फांसी शव्दक पुनरावृति किछु कालधरि)

युवक-१ : वस करू । हम किन्नहु मरऽ नहि चाहै छी ।

पार्श्वसं : जखन मरवासँ एतेक डर छलौ त हत्ये किए केलेँ ?

युवक-१ : (रोषसँ) के कहैत अछि, हमरा मरवासँ डर अछि ?

पार्श्वस : (आश्चर्य मिश्रित स्वरेँ) आहिरे । तोहीँ बजै छेँ ?

युवक-१ : हम ? नई, की हम कहलहु अछि जे हमरा मरवास डर......।

पार्श्वस : (वातके लोकैत) तो तँ बजै छे हम फाँसी चढ' नहि चाहै छी । एकर की माने भेलै ?

युवक-१ : एकर माने ई त नहिए भेलै जे हम फाँसीसँ डेराइत छी ।

पार्श्वस : तखन ?

युवक-१ : हम एखन किछु दिन मर' नहि चाहैछी ।

पार्श्वस : किए ?

युवक-१ : (शांत स्वरमे) जाहि कारणसं हम ई पहिल हत्या कयलहुँ अछि ओ पूर्ण नहि भेल अछि । एकटाके मारिते बहुतो जनमि कऽ ठाढ भऽ जाईत अछि ।

पार्श्र्वस : की माने ?

युवक-१ : माने साफ अछि । एहि समाजमे कुण्डली मारने वैसल विषधर साप सभक फनके थकुचवाक हमर अभियानक ई पहिल शिकार थिक । एखन त' सयौं एहन विषधर खुशफैलसं घुमि रहल अछि ।

पर्श्र्वस : त' तोहर माने एखन **तनोसभक** आओर हत्या करवही ?

युवक-१ : (प्रशन्न होइत) ह, आब अहाँ बुझलिऐ।

पार्श्र्वस : मुदा सिपाही, कानून तोरा छोडतौ ?

युवक-१ : (ठहक्का लगा हसैत) सिपाही, कानून ?

पार्श्र्वस : डर नहि लगैछौ ?

युवक-१ : ककरा सँ ? कानून सँ ?

पार्श्र्वस : हँ कानूनसँ । आइ नै काल्हि त पकडवे करतौ ।

युवक-१ : नहि, किन्नहु नै पकडि सकत । हमरा अपन अभियानके जारी रखवाक अछि । तएँ कानूनोसँ बचय पडत ।

पार्श्र्वस : कतेक दिन धरि........?

युवक-१ : ता धरि जा धरि समाजक समस्त महिषासुरके छाती चीरिक*ऽ* सोनित हम पीवि नै लेवै ।

पाशर्वस : (चट द) तावत त हाहाकार मचि जएतै ।

युवक-१ : मचिजाउ ! पापक घैल भरि गेने ओकरा फुटव नीयति छै । केओ त ओहि घैलकेँ फोडवाला आगाँ आओत । (पार्श्वमे चुप्पी)

आनक वहु बेटीके इज्जत लुटनिहार, पाँचसय टकाक मूरिके पाँच हजार बना घराड़ी समेत छिनि लेनिहार, जुआन बेटीक पीडा भोगैत बापक नोरपर हँसनिहार, गरिवीक दर्दके महज मजाकक बस्तु बना अपन शानोशौकत देखौनिहार नरपिशाच सबकेँ आव सुत' पडतै ।

पार्श्वमे (चुप्पी) हमरो बापके एहि दुआरे मरि जाए पडलै जे ओ महाजनक टका सधा नहि पौलक आ बोखारोमे खेतमे काम करबापार वाध्य कएलगेल, भुखले पिआसले बोखारसँ थर थर कँपैत हमर बाप.....की एहि दुआरे दयाक पात्र नहि छल जे ओ जातिक चमार रहय....अछूत नीच ।

पार्श्वमे (चुप्पी) आब मुह किए बन्न भऽ गेल । बाजू नै । की अपराध रहै हमर पिता बटोही रविदासके जे जेवीमे धयल गोटीयो नै खा सकल पानिक अभावमे । हर छोडि नै सकैत छल आ केओ पानि आनिक' दीतै नै । ठामे अरराकऽ खेतमे खसि पडल रहै ..... बाजू छै ओहन दुराचारी शोषककेँ जीवाक अधिकार...?

पार्श्र्वस : मुद्दा तैयो कानून त' कानून होइछै ।

युवक-१ : (रोषस) कानून कानून कानून । एही कानूनक अढ़मे त ओ चण्डलवा सभ अपन कुकर्म करैत अछि । केहनो अपराधमे सवूतक अभावमे साफ बचि निकलि जाइत अछि। एहन के लेल आव एहने निसाफक जरूरति छै ।

पार्श्र्वस : जे काज कानून करैत ओ तो कऽ कऽ अनेरे फाँसी पर लटकि रहल छे ।

युवक-१ : (पुनः उतेजित भऽ) नहि, हम फाँसी पर नहि लटकि रहल छी आ लटकबो नै करव । पहिने समाजमे छिडिआएल एहि महिषासुर सभकेँ सुडाह कऽ देबै, तकरा बाद देखल जएतै ।

पार्श्र्वस : से कानून कर' देतौ तखन नै ।

युवक-१ : कर' किए नै देत । अन्याय, अत्याचार, शोषणक विरुद्ध हमर लडाईसँ हमरा-अहाँके कानून रोकिनै सकत आब ।

पार्श्र्वस : कतेक अत्याचारीके तोँ सुडाह करवही। ई त' रक्तवीज सभ अछि। एक कटिते फेर दोसरो जीविकऽ ठाढ भऽ जाएत । कतेकके गरदनि छोपबही ? कतेकके....कतेकककेे ('कतेकके' शब्दक प्रतिध्वनि कनेक काल गुंजैत अछि ।)

युवक-१ : (आश्वस्त भऽ) हँ, त' अहाँ बुझलहुँ नै जे अत्याचारी शोषक, विघर्मी सभ रक्तवीजक जनमल अछि। कटिते जनमि उठैत अछि महिषासुर जकाँ, तएँने हमरा अहाँसँ सहयोग चाही ।

पार्श्र्वस : सहयोग ? हमरासँ । कोन तरहक ?

युवक-१ : वस, अहाँ सभ हाथ बढा कटोरी जकाँ गोल कैने जाउ आ हम महिषासुरक गरदनि छकरैत छी, अहाँ सभ ओकर सोनित अपन

हाथक कटोरीमे लोकि लिअ। (पार्श्वमे चुप्पी) किएक त' जौं रक्तस पुनः जनमि ठाढ हयबाक भय नहि रहत त' वहुतो हमरासन लोक तरुआरिलऽ आगाँ कूदि पड़त। लेहुलेहुआन भऽ जएतै महिषासुर सभ।

पार्श्वम : (चुप्पी)

युवक-१ : बुझल नहि अछि, अत्याचारी महिषासुरक दमन करबाकलेल देवता सभक संयुक्त शक्तिक रुपमे माँ दुर्गाक उदय भेल रहै। आ वन्धु सभ ! अहाँ सभक संयुक्त शक्तिसँ उदय हेतैक आत्म बलक दुर्गा आ संहारकऽ देत महिषासुर सबके।

पार्श्वस : बात त' ठीके छै।

युवक-१ : तखन चलू हमरा सँग। बरु हम चहरि जाएव फाँसी पर हमरा कोनो दुखो नहि हयत। हुँ कम सँ कम एकटा बाट जे बनि जएतैक ताहिसं प्रत्येक महिषासुर पुनः जनमबाक चेष्टो नै करत। आउ हमरा सभ काल बनि महिषासुरक छाती पर ठाढ भऽ जाइ। **(युवक-१ क पाछासं समान पहिरन ओढने दुनूकातसँ तरुआरिक संग कमशः एक-एक कऽ दू युवक बहराइत अछि। एहि बीच पार्श्वसं त्राहिमाम् त्राहिमाम्क स्वर अनुगूँजित होइत रहैछ।)**

युवक-१ : (कनेक कालक चुप्पी) लगाउ हमरा सँग नारा....।

दुनुआकृति : ठीक छै। लगाउ नारा.....।

युवक-१ : महिषासुर........।

आकृति : मुर्दावाद॥

एकरा कनेक काल दोहराओल जाइछ। प्रतिछाया आकृति पुनः पूर्ववत् एक्केमे समा जाइछ। प्रकाश कमवद्ध बन्द होइत अन्हार भऽ जाइछ।

□□□

सुरुज उगबासँ पहिने

दृश्य-१

एकटा निम्न आयवर्गक घरक अंगनाई। फुससँ छारल ओसारा पर दहिनकात घैलची। जाहिमे सम्भवतः भरल पानिक घैल। वामकातक ओसारा पर गोनैर नुरियाकऽ धयल। घरक वाम दिस एकटा आर फूसक घर देखि पडैछ, जकरा पाछाँक अतिरिक्त कोनो टाट लागल नहि। घरमे दूटा बकरी आ तीनटा छोटछीन बच्चा, किछु घास-फूस। घरक दहिनकात टाटक घेरा जे आंगनकेँ घेरवा लेल लगाओल गेल रहैछ। ताहिमे आंगन प्रवेशक एकटा दरबज्जा खूजल।

एकटा अधेर पुरुषक प्रवेश। जेना थाकल-झमारल हो।

पुरुष-१ : (जोरसँ हाक पाड़ैत) ऐ, कत' गेली ?

दुनू हाथमे माटि लगौने महिला घरमेसँ बहार अबैछ।

महिला-१ : की बात है ? एना हुलिया कैला हबे ?

पूरुष-१ : अहाँके हाथमे ई माटि !

महिला-१ : हँ, कनी वीछनके धान रहै, तकरे कोठीमे धऽकऽ लेबैत रहिऐ। सब नीक नाहित है ने।

पूरुष-१ : (बकरी घर दिश राखल टुटलहा बाँहिबला खुरसीकेँ घीचि आगनमे लऽ अबैछ। तावत महिला घैलचीसँ एकटा लोटामे पानि ढारि हाथ धोब' लगैत अछि।)

पुरुष-१ : (खुरसीपर बैसैत) : आब त' गाममे चलब कठिन भऽ गेल।

महिला-१ : (हाथ धोइत) से कैला ?

पुरुष-१ : अही रछसबाके खातिर ।

महिला-१ : (धोएनाइ छोडि) कनी फरछाउने ।

पुरुष-१ : अहाँके सुपुतर आब नाक कान कटाकऽ छोडत ।

महिला-१ : (पुनः हाथ धोइत, मुस्कियाकऽ) धुत ! कहु अशोकबा मौगी है से नाक-कान कटौत । हमरा त' बेटो तेहने आफत भऽ गेल है ।

पुरुष-१ : सेहे त बात है । लोकके घरमे जुआन बेटी रहै है त' नाक-कान कटाबके डर रहै है ।

महिला हाथ धोकऽ नुआमे हाथ पोछैत ओसारापरक गौनैर खुरसीक बगलमे धऽ ओहि पर बैसि रहैत अछि ।

हम ठीके कहैछी, अशोकबा माय । ई छौंडा त' बड मोश्किल करत ।

महिला-१ : (साकांक्ष भऽ) आखिर बात भेलै की ?

पुरुष-१ : (दीर्घ निसांस छोडैत) की कहु ! आइयो कहादुन गौछलीमे दारु पीबि कऽ ओंघरायल छल ।

महिला-१ : गे माई गे माई ! एना नै होतै ! हमर बेटा एना नै कैने होत ।

पुरुष-१ : (कनेक खिसिया कऽ) त जे देखलकै से झूठ भऽ गेलै ?

महिला-१ : आगि लगब'बलाके कमी है जुगमे ।

पुरुष-१ : (फेर डपटि) चुपु ! अहीके दुलार ओकरा बीगाडि देलकै । जहिया कहियो डपटैत रही त चिचिआ उठी-एकेटा बेटा है, कर दियौ जे करै है । आ आई........।

महिला-१ : हमरा नै लगैए, अशोक दारु पीब कऽ ओंघरायत । उ त दारु नै पीवैअ ।

पुरुष-१ : अहाँ केना जनै छिए जे ओ नै पीबैए ?

महिला-१ : माई त बेटाके मुँह देखक' ओकर सबकुछ बुझ्झ सकै हैने ।

पुरुष-१ : तखन अहाँ फेल भ गेली । अहाँके बेटा दारु नै गजो-भांग पीवैअ ।

महिला-१ : (चिहुकिकऽ) चुप ! अहीँ जखन आगि उठबै छिऐ त' आनलोक कथी कहैत होतै ।

पुरुष-१ : हम बुझै छली अहाँ हमरो बात नै मानब । तैस ने, एतेक दिन सँ बात पेटमे धएने रही । आई नै रहल गेल त' बाजही पडल ।

महिला-१ : (अविश्वासस) नै, हमरा त मन नै मानैए । अशोक ऐतेक नीचा खसि पडत । लोक चुगली लगाब' चाहैत होतै ।

पुरुष-१ : लोकके चुगली लगौने फायदा ?

महिला-१ : हमर बेटा काविल है । लोक बीगार' चाहैय ।

पुरुष-१ : (दीर्घ निसांस छोडैत) हुँ, काविल ।

कुरसीसँ उठि आंगनमे टहल' लगैछ । एक चक्कर लगाकऽ रूकि जाइछ ।
आइ बी.ए. पास भेला आठ वर्ष भऽ गेल । पाँच पाइके नोकरी ने कऽ भेलैए । आ काविल है कहाँदुन ।

महिला-१ : (उठैत) त' की नोकरी अपना वशके बात है । की-की फीरशानी ने उठौलक । की बैसल है छौड़ा ?

पुरुष-१ : भेटल नै रहै ? केहन चिक्कन नोकरी भेटल रहै । दुइओ मास टीक सकल ?

महिला-१ : (रोषसँ) फेर ओइ नोकरी के बात उठैली । अहाँ जनै नै छिए, ऊ कैला छोड़लक उ नोकरी ?

पुरुष-१ : जनै छिऐ । लेकिन हम पुछैछी आब दोसर उपायो की छै पेट भर'के ।

महिला-१ : (आँखिमे नोर भरि अबैछ) हे, भगवान, ई की सुनबैछा । जिनगी भरि दू हजार रुपैयामे घीघरी काटीयोकऽ उपरका आमदनी के आशा नै कर'बलाक मुहसं की सुनबैछा ।

पुरुष-१ : (भावुक भऽ) अशोकवा के माय, हमर बात दोसर रहै । पेटो काटिकऽ बाल-बच्चाके पालि लेलिऐ । आब से नै भऽ सकतै ।

महिला-१ : होतै कैला नै । हमर बेटा भूखे मरि जायत, हम सभ भुखे रहिलेब, लेकिन बेटा के हम नै कहबै सरकारके आखिमे गरदा झोकिऽ समान के एमहर स ओमहर हटाब ला ।

पुरुष-१ : कनीक धीरज स सोचियौ, सरकार के के नै चोर है । देखू

इमान्दारीके इनाम । एकटा फूसघर स दोसर नै बना सकल छी तै पर महाजनी के तगेदा । घरो घड़ारी बेचला पर सधत ?

महिला-१ : तैस की ? हमर बेटा मालिक के खातिर अपन इमान बेचो !असली के नाम पर नकली दवाई बेचो । गाजा-हफीम-चरस बेचो । नै-नै-नै ।

महिला थच्च दऽ गोनैर पर बैसि रहैत अछि । दुनु हाथे माथ पकड़ि हाफ लगैत अछि । पुरुष-१ सेहो गोनैर पर बैसि रहैछ आ महिलाक पीठ पर हाथ धऽ ठाढस बन्हब लगैछ ।

पुरुष-१ : अशोकक माय ! अहाँ कलजुगमे बैस कऽ सतयुग के बात करैछी ।

महिला-१ : मुदा से सतयुगमे रहके लेल के सिखौने है हमरा सभके ?

(पुरुष-१ गुम्म भऽ जाइछ जेना शून्य आकाशमे दृष्टि गड़ादैछ ।)

महिला-१ : बाजू, अशोक के बाबू । हम सभ आइयो सतयुग के सपना कैला देखै छी ? की हम नै देखै छी, काल्हि पीउन-मुखिया के नोकरी धयलक आ आइ बंगला पीटि लेलक । हम सभ आन्हर छी, संगे नोकरी कैने जलील मियाँ दुनू बेटाके डाक्टर आ इन्जिनियर बना लेलक । अहीं के गोधियाँ रहे नै राजीन्दर, बेटी के विवाह केहन कैलके-पाँच लाखस उपर के खर्चा रहै । (चुप्पी)

(पुरुष-१ ओहिना निर्विकल्प आकाशमे देखैत रहि जाइछ ।)

महिला-१ : हम इहो भोगैछी अशोकक बाबू । अहाके पेन्सन पर घरो चलायब जखन कठिन है तखन महाजनके कर्जा कत' सं देबै । आ तैस' वेर-कुवेर बेइज्जत होइ छी । सब सहै छी ।

(पुरुष-१ गुम्म भेल बैसल अछि ।)

महिला-१ : मुदा तैयो हम सभ दुखी नै छी । एहनोमे हसिकऽ जीवाके हम सभ अहीस सीखने छी मुखिया साहेब । (हिचुकऽ लगैछ)

(पुरुष-१ विचलित भ' उठि जाइछ । टहल लगैछ ।)

महिला-१ : (आँखिसं नोर खसैत) आइ जं हमर बेटा दारू पिविकऽ कतौ

ओंघरायल अछि त' तकर कारण अहा हमरा सं किए पुछै छी । अहां अपना स नै पुछि सकै छी ?

पुरुष-१ : (चिचिआकऽ) बस करु अशोकक माय, बस करु । आब नै सुनल जाइए एक्कोटा बात ।

(पुरुष-१ धरफराकऽ खुरसी पर बैस' चाहैछ, मुदा नीचाँ खस' लगैछ ।)

महिला-१ : (उठैत पतिके पकड़ैत-सम्हारैत) अहाँ ठकि सं बैसू । (कनेक कालक चुप्पीक वाद) आबो त' कलमुहे । हम दारु पीब कऽ ओघरैनाई छोडा दै छिऐ ।

अन्हार

दृश्य-२

दृश्य पूर्ववत् । आंगनमे चारिगोट युवकक प्रवेश । युवक-१ किछु आगाँ बढि हल्ला करैछ - माय गे माय । कोनो उत्तर नहि सुनि निराश भऽ जाइछ ।

युवक-१ : (आन संगीसँ) भाइ, लगै छौ, माय नै हो । देख, आइ एतेक दिनपर हमरा घरे अयबो कयले त' हम चाहो ने पिआ सकलियौ ।

युवक-२ : छोड-छोड, चाह-ताह । आ, काकी नै छथुन्ह तावत एक-दू हाथ भऽ जाए । युवक-३,४ जल्दीसँ ओसारा परक गोनैर उठाकऽ आंगनमे बीछा दैत अछि । तीनू जल्दीसँ ओइ पर बैसि जाइछ ।

(युवक-१ एखनो आंगनमे एककात चुपचाप खड़ा अछि ।)

युवक-२ : आ न यार । कका-काकी जावत नै छथुन्ह, एक दू हाथ भ' जाएमे कोन अन्हेर भऽ जएतै ?

युवक-३ : की होतै, गोलखाड़ी कि पपलु ।

युवक-४ : हे, गोलखाड़िए चल दही । बड मजा अबै छै ।

युवक-२ : तास नीकालि वांट' लगैछ । युवक-१ एखनो ओहिना ठाड़ अछि ।

युवक-३ : भाइ अशोक, हद भ गेलै । हम सभ तासो बाटि चुकल छी आ तों माटिक मुरुत जका ठाड़े छें । आ, जल्दी बैस ।

युवक-१ : (मना करैत) नै भाइ, हम नै खेलबो। तो सभ जनै छे, हम ट्वेन्टी अइट छोइरकऽ आर किछु नै खेलै छी।

युवक-२ : आ ओइ दिन ?

युवक-१ : एही शर्त पर जे पाइके खेल नै होतै, तखन खेलने रही हम।

युवक-२ : दुत्। तब त' मजे किरकिरा भ' जएतै। आइ त' हमर हाथ हौआइए। पता नै की होतै।

युवक-१ : भाइ, समेट ई सभ। आयल छे त' बरु कनेक काल आरो बैस। माय अबिते होतै। चाह पीव कऽ जो।

युवक-२ : नै, हम त' एक हाथ खेली आयल छली।

युवक-१ : एहने जीद कऽ कऽ काल्हि किछु बेसी चहरि गेल छल। गौछलीमे आंखि झपा गेल। कोइ देखने होत त' की कहने होतै। किछु सोचलही ?

युवक-२ : यार बाबाजी। नै तो जुआ खेल' सकैछें, नै दारु पीव' सकैछें, नै ककरो देहमे सटि सकैछें, तखन छें किएक।

युवक-१ : भाइ, जहिया ई बात बूझि जएबही, तोहू हमरो सन भ' जएबे।

युवक-३ : नहि, एहन श्राप नै दे। तोरा जकाँ आदर्शवादी बनिकऽ भुक्खड़ बन' स नीक समय के साथ चलब आ खूब मौज करब।

युवक-२ : ठीके कहै छौ भाई। आठ वर्षसँ वौआइत छे, किए नै भेटै छौ कोनो काज ?

युवक-१ : (सहटि कऽ गोनैर पर वैसैत) जखन तालिम छै त आइ नै काल्हि भेटवे करतै की।

युवक-२ : तालिम। रौ बूडिबक !! तालिम के धो धो क' चटैत रह। तोहर पाछाँके लोक आइ कतेक आगाँ बढि गेल छौ, पता छौ ?

युवक-१ : सभ पता-ए है।

युवक-२ : खाक पता छौ। किसुनमाके कोन तालिम छै। आइ मोटर साइकल चढै है। एक साँझमे सय-दू सय फूकि दै छै। कत' स अबै है ?

युवक-१ : त से हमरा नै चाही, जहिया होतै नोकरी, तहिया तक रस्ता देखबै।

युवक-२ : हम सभ जनै छी। तोरा पर दोसर रंग नै चढतौ। काकाक रंग जे एक बेर चहरि गेलछौ ओ जल्दी नै छुटतौ।

युवक-१ : तोँ सभ जे कही। (एम्हर-ओम्हर तकैत) लगैए, माय कतौ आन ठाम चलि गेल छै। **युवक सभ उठैत अछि।**

युवक-२ : अच्छा भाई। बेरियामे आइ भांगके भोज छै। दलाने पर चलि अबिहें। हम सभ एखन जाइ छी, गौछलीमे इन्तजार होइत होएतै।

युवक-१ सेहो उठिक' जाइछ। युवक सभ के बहार होइत एकटक्क देखैत रहैछ। तखने महिला-१क प्रवेश। मायके देखिते युवक-१ चौकि उठैछ।

युवक-१ : से त' अएबे कयले। सब चलि गेलै तब।

महिला-१ : तोरा स त' बाजके मन नै करैअ।

युवक-२ : (दुलार सँ) कैला माय। की अपराध हम कैलियौ गे।

महिला हाथ महक कोनो वस्तु घरमे ध' अबैत अछि। फेर निचैनसँ आंगनमे राखल खटीया पर बैस जाइत अछि।

महिला-१ : बौआ, की अही दिनला तोरा पर आशा कैने छली ?

युवक-१ : (जेना किछु ज्ञात नहि हो) माय, एना कैला बजै छे। की भेलैए ?

महिला-१ : बाप कहै छलौ-तों कहादुन गौछलीमे ओंघरायल रही।

(युवक-१ क चेहरा पर डर देखि पडैछ।

मारे डटैत रहे हमरा।

युवक-१ : माय।

महिला-१ : (बातकेँ लोकैत) पहिने ई कह, ठकि तों दारू पीबकऽ ओंघरायल रही ?

युवक-१ : ओंघरायल त' रही, मुदा दारू पी कऽ नै।

महिला-१ : (तनिक रोष सँ) झूठ बजै छे। तो आब दारु पीब लागल छे।

युवक-१ : माय, हम तोरा स झूठ नै बाजि सकैछी। हमरा पर विश्वास कर।

महिला-१ : (कनेक चुप्पी) त' तों भांगो किया पिलें ?

युवक-१ किछु ने बजैछ।

पता छौ, तोरा बापके कतेक दुख भेल छौ। ओकरा त' लोक दारूके नाम कहि देने छै।

युवक-१ : ई हमर संगतिके कारणे भेल होतै।

महिला-१ : संगत के कारणे ?

युवक-१ : हं माय। हमर संगी सभ दारू पीबै छै, गाजा पीबै छै। चरस-हफीम सब खाइ है।

महिला-१ : तोहुँ खाइते हयबें ?

युवक-१ : सेहे त' कहै छियौ। लोक ओकरा संगे बैसल-उठल देखै है त' एहिना बुझि लैहै।

महिला-१ : तखन ओकरा सभके संगत छोडि दे।

युवक-१ चुप्प अछि।

जै संगतमे रहने नीकके बेजाय होए तकरा तेज देबके चाही।

युवक-१ : तखन जाउ कत्त ? सभ त' काम-धाम करैए। जेना-तेना पाइ कमाइए। ओकरा सभके बीचमे बैसलास त' आओर दुख होइअ।

महिला १ : तैयो।

युवक-१ : तैयो की। हम संगते मे छी त' की ओकर लत सभ पोसने छी। उ अपना लऽ कऽ हम अपना लऽ कऽ

महिला : (अविश्वास सँ) त ठीके तों एम्हर-ओम्हर.......।

युवक-१ : हमरा पर विश्वास कर माय। हम कोनो लत नै पोसने छी। (चुप्पी) आइ आठ वरीस स अफिसे-अफिसे आ दोकाने-गदीए घुमैत-घुमैत थाकि जरूर गेल छी।

महिला-१ : वौआ।

युवक-१ : ह, माय। हम थाकि गेल छी। बूढ बापक पेन्सन पर ई घून लागल जुआन देह पालबा पर विवश छी।

खटिया सँ उठि जाइछ।

आदर्श, इमान आ धर्मक पालन करबाक गुण हमरा विरासतमे मिलल अछि ने। त' सहबाक क्षमतो ओत्तहिसँ भेटल अछि।

आकाशमे नजरि टिका।

हम बहुत किछु सहि सकैछी माय, मुदा घुन लागन जुआनीक पीडा नै सहल जाइए।

महिला-१ : (उठैत आ युवक १ के सम्हारैत) ई की बजैत छे वौआ। आइ नै काल्हि त' काज भेटवे करतै। निराशक कोन बात छै। (चुप्पी) चल कलौ खाले।

तावत घरक पछौतसँ पुरुष-२ क आवाज सुनि पडैछ।

पुरुष-२ : (पार्श्वसँ) गणेश छें रौ। गणेशी ?

महिला-१ सम्हरिकऽ माथ पर नुआ धऽ लैछ।

महिला-१ : (युवक-१सँ) लगैछै-फेर महाजन आबि गेलै।

युवक-१ : ई एना बेर-बेर कैला अबै है ?

महिला-१ : कहै है, तमसुक बदलि देब'ले। कहाँदन समय पुरि गेल है। नै त' रुपैया देव ला।

युवाक-१ : तखन ?

महिला-१ : आब जे तमसुक बदल कहै है ओइमे मूर-सुद लगाकऽ चारि-पाँच दोबर भ' जएतै। कहाँ स देतै तोहर बाप।

युवक-१ : ओह।

पुरुष-२ आगनके मुहथरि पर आबि जाइछ। संगमे मुँहलगु नोकर पुरुष-३ सेहो रहैछ।

पुरुष-३ : (हाथक लाठीकेँ चमकबैत) की रे अशोकवा ? बाप कत गेलौ ?

युवक-१ गुम्हरिकऽ पुरुष-३ दिश तकैछ । पुरुष-३ कनेक नर्भस भ' जाइछ । मालिक दिस पलटि अबैछ ।

पुरुष -३ : मालिक, लगैए गणेशी, की नामस, नै है ।

पुरुष-२ : (नोकरकेँ टारैत) की रे अशोकवा । गणेशी कत गेलौ ?

युवक-१ : (उठिकऽ) एखन त' नै छैक ।

पुरुष-२ : कत्त' गेलौ ?

युवक-१ : हमरा नै बूझल है ।

पुरुष-३ : (कनेक जोरसँ) त' तोहर, की नामस, माइके बूझल होतौ ?

युवक-१ फेर ओकरा दिश गुम्हरिकऽ तकैछ । ओ मुँह चमकबैत मालिकक पाछा चलि जाइछ ।

पुरुष-२ : देख, तमसुक बदलबाके अगिलका रविके अन्तिम दिन है । एहि बीचमे रुपैया देब कही कि तमसुक बदलाब कही ।

पुरुष-३ : (फेर आगा बढ़ि) नहि त' की नाम स, घर घराडी स हाथ धोव' कहि दही । (मालिक दिश ताकि) की नामस, नै औ मालिक ?

युवक-१ किछु नै बजैछ ।

पुरुष-२ : (जाइत-जाइत) एखन त' हम जाइछी । फेर सुगवा अबैत रहतौ ।

पुरुष-३ : (पलटिकऽ) हम भकमच्छर, की नामस, छोरा देबै मालिक, देखियौ ने केना नै दैअ । की नामसँ ।

दुनूक प्रस्थान । युवक-१ आंगनमे टहलऽ लगैछ । महिला-१ घरसँ बहार होइत अछि आ एकटक्क युवक-१ क अनुहार देखैत रहैछ ।

अन्हार

***

दृश्य-३

दृश्य पूर्ववत् । आंगनमे खुरसी पर पुरुष १ बैसल चिन्तामग्न । निचाँमे महिला १

सेहो चिन्ताग्रस्त वैसल । लगैछ जेना कोनो बात होइत होइत गम्भीर विन्दु पर अटकि गेल हो ।

महिला-१ : आब त कोनो तरहे महाजन के ऋण फरिछा देब पडतै ।

पुरुष-१ : सेहे त अहुँ बुझिते छिऐ । कहुने, कत' स फरिछएबै ?

महिला-१ : बेच लिअ धूर-धूरक जमीन । कहुना सधा दिवौ करजा ।

पुरुष-१ : हमरा त लगए, धुर-धुर कऽ बेचियो कऽ सधा पएबै कि नै तै मे शके है ।

महिला-१ : जएह सधै । बादमे कोनो जोगार करबै ।

पुरुष-१ : (उठिकऽ) कह' मे बड सहज लगैछै अशोकक माय, जुटब' पडैछै तखन बुझ' मे अबै है ।

महिला-१ : काल्हि धमकी द' कऽ महाजन चलि गेलै । साफ कहै जे घर-घराडी सं हाथ धोब' पडतै ।

पुरुष-१ : सभ लिखल है । उ चाहे त' कऽ सकैअ ।

महिला : आ रहबै कत ? धीआ-पूता ?

पुरुष-१ चुप्प भ- जाइछ ।

वेर-वेर कर्जा चुकब ला धमकी द कऽ जायब, लगै है बौआ के आब नीक नै लगै है । पता नै ओ की कऽ बैसत ।

पुरुष-१ : (अगुताकऽ) की कऽ लेतै ? ऋण सधा दैते ?

महिला-१ : ऋण त' नहि सधाओत, मुदा किछु अनर्थ धरि अवश्य कऽ लेत ।

पुरुष-१ : माने ?

महिला-१ : माने त' साफ ओकर आखिमे झलकैत हम देखलिऐ ।

पुरुष-१ : कनि फरिछाउ नै ।

महिला-१ : महाजन संगे कतौ झगडा नै कऽ बैसय ।

पुरुष-१ : ओह । ई भ' सकैछै ।

महिला-१ : तखन केना हयत ? और मोश्किल कऽ देत चण्डलवा ।

पुरुष-१ : ई बात त' अहाँ अपन दुलरुवाके समझवियौ । जकर धारने रहै है तकर बातो त' सही परै है ।

महिला-१ : आ अपने बुझेबै से नै होतै ?

पुरुष-१ : पहिने अहाँ बुझवियौ ने ।

महिला-१ : ठीक छै । मुदा ऋण त' चुकाबही पडत ने ।

पुरुष-१ : से त' कोनो जोगाड लगाबही पड़त । (चुप्पी) अच्छा हम कनेक शहर भेने अबैछी । आबमे देरियो भ' सकैछ ।

पुरुष-१ क प्रस्थान । ताब पुरुष-३ क प्रवेश । ओहिना लाठी चमकबैत सरासर आंगनमे प्रवेश करैत अछि ।

पुरुष-३ : की हो गणेशी, हमरा देखिते घरमे नुका रहला की ?

महिला-१ : एह, की वाजल जाइ छै । ओ त' एखने शहर दिस गेला ।

पुरुष-३ : नै, ई नै भ' सकैछै । अपन चसम स हम अंगनामे ढुकैत देखने छली ।

महिला-१ : से हम कहाँ कहैछी, नै आयल छल । एखने बहराएल ग ।

पुरुष-३ : त की भेलै कर्जा के । देबै कि तमसुक बदलेबै ।

महिला-१ : बुझाइए तहीला शहर गेल । देखू कुछो त' सोचबे करतै ।

पुरुष ३ : आब सोचला-तोचलास काम नै चलतै । एक हाथ लेना, एक हाथ देना ।

महिला-१ : हम की द' सकैछी । घर त सुन्ने है । अन्नो-पानी नहिए है ।

पुरुष-३ : (एम्हर-ओम्हर चकुआइत) अशोको नै है ?

महिला-१ : अशोक त' खा-पीक) बाध दिश निकलल छै । सांझ स पहिने की आओत ।

पुरुष-३ कनेक सहटि क' आगनमे महिला-१ लग खाट पर जा बैसि रहैछ।

पुरुष-३ : देखू, मालिक बड चण्डाल है । ऊ नै छोडत । कहलकैअ, आइ जेना होतै, जे होइ ल' क) अइहें ।

महिला-१ : (खुशामद करैत) हे, मालिकके चीत नै बुझा सकै छिऐ । हमर दुख त' देखिते छी ।

पुरुष-३ : (पुन: चकुआइत) बाप रे बाप । मालिक के चित्त के बुझौत । उत त' सौंसे जीते खा लेतै ।

महिला-१ : हे, अहुँ त' हमरे सन लोक छी किने । गरीबक दुख नै बुझवै ?

पुरुष-३ : बुझवै । जरूर बुझवै । पहिने अहुँके हमर दुख बुझ' पडत ।

महिला-१ : हे भगवान । हमरा सन नीच अधमसँ अहाँ के कोन दुख दूर होत गोराइत साहेव ।

पुरुष-३ : ककरा स नै ककर दुख दुर होइ छै अशोकक माय । अहुँ चाही त.....।

महिला-१ : से कहु ने, हम की करु । हमरा स होत करबे करब की ?

पुरुष-३ : (कनेक आर लगमे सहटि) अहाँ चाही तँ हम मालिक के नीचा-उपर कहि समय बढवा सकैछी ।

महिला-१ : (उत्सुकता सँ) केना ?

पुरष-३ : (महिला-१ क हाथ पकडि उठबैत) सुनु, कनी बकरी घर दिश चलु ने ।

महिला-१ : (तानि क) हाथ छोडबैत) किएक ?

पुरुष-३ : बड़ भोला छी अहाँ । आउ नै एहि एकान्तमे हमरा संग एक रती..... ।

महिला-१ : (उतेजित भ') चुप्प गुण्डा । तो हमरा बजारू बुझि लेने छें ।

पुरुष-३ : एक्के रतीके बात छै । फेर ऋणो जल्दी नहि चुकब' पडत नै ।

महिला-१ : चाहे हमरा तीनू माय पूतेक हड्डी विका जाइक, हम ओइ चण्डलबाके पाइ-पाइक' चुकादेबै । मुदा, तोरा सन पापीके देहमे भीड़ब ?

पुरुष-३ : बेसी हल्लो नै करु । बदनामी अहींक होत । आउ चलु जल्दी ।

पुरुष-३ महिला-१ के जवरदस्ती भरि पांजकऽ पकडि बकरी घर दिश लऽ जाए चाहैत अछि, किछु डेग बढैछै कि युवक-१ क आगमन आंगनमे होइछै आ पछेसं पकडि पुरुष-३ के अपना दिश घीचि एक मुक्का मुँह पर मारैत छैक। ओ सोझे उनटि क' आंगनमे खसि पडैछ। तकरा बाद, किछु काल खूब धुनाई करैछ। कहुना अपन जान बचा पुरुष-३-भागि जाइछ। युवक-१ खुरसीपर बैसि रहैछ। महिला-१ ओसारपर जा वैसकऽ कान' लगैछ। कनेक काल एहने स्थिति रहैत छैक।

युवक-१ : (अपन स्थानसँ उठैत) माय चुप रह। आब ई राक्षस सभ अइ अवस्था तक बढि गेल अछि।

महिला-१ एखनो हिचकैत रहैछ।

अन्याय, अत्याचारक एकटा सीमा होइछै। हमसभ ऋण खएने छी, वहिया त' नहि लिखने छीऐ। आब देखही की होतै।

महिला-१ अश्रुपूरित आँखिसँ बेटा दिस तकैछ।

साचे कहै छियौ माय, बड़ महग पडतै महजनमा के ई नोर।

महिला-१ : वौआ।

युवक-१ : आब हम ककरो नै सुनबौ। इमान, धर्म बचाकऽ रहके माने ई नै होइछै जे अत्याचारो के चुपचाप सहैत रही।

महिला-१ : वो सम्पन्न लोक है। तों एक्को रत्ती ओकरा आगाँ मे टीक नै सकबही। राता राती गुण्डा ल' अएतौ आ मारिकऽ फेक देतो।

युवक-१ : त' जानके डरस हम अपन मायके इज्जत लुटैत देखैत रहीं, अपन बापके अपमान होयत देखैत रही। नहि माय, आब हम नहि देखबौ ई सभ।

युवक-१ तेजीसँ आंगनसँ वहरा जाइछ। महिला-१ वौआ ! वौआ !! चिचिआइत रहि जाइत छैक। महिला-१ हारिकऽ गोनैर पर वैसि कानय लगैछ। तावत पुरुष-१ क आगमन। महिला -१ के कनैत देखि झटकारिकऽ लग मे जाइछ।

पुरुष-१ : की भेल, कनै किएक छी ?

महिला-१ चुप्प अछि।

बाजू नै की बात भ' गेल ? अशोकवा किछु कहलक की ?

महिला-१ : पहिने अशोकवा के रोकू।

पुरुष-१ : की भेलै अशोकवा के ?

महिला-१ : ओ पीते थर-थर कँपैत महाजनके घर दिश गेल ग। किछु अनर्थ आइ कइए लेत।

पुरुष-१ : बात त' किछु बताउ।

महिला-१ : नै, एखन बात सुनके समय नै है। पहिने ओकरा शांत करू तखन कोनो बात हयतै।

पुरुष-१ : झटकारिकऽ आंगनसँ बहरा जाइछ।

अन्हार

***

दृश्य-४

स्थान पूर्ववत्। सांझक समय। ओसरा परक दीयठि पर दीआ राखल। आंगनमे राखल खाटपर पुरुष-१ आ महिला-१ बैसल। बातचीतक क्रम चलैत सन।

महिला-२ : केना रुकल त'।

पुरुष-१ : ठीके बड बेजाय भ जइतै। रामेसर कहैत रहे, कतबो रोकलिऐ त नै रुकल, सन सनाईत डयोढी दिश चढैत चलि गेल।

महिला-१ : फेर ?

पुरुष-१ : फेर की ! ड्योढी दिसस कहादन महाजनके छोटकी बेटी लक्ष्मी अवैत रहे सेहो रोकि लेलकै।

महिला-१ : (उत्सुकतासँ) लक्ष्मी रोकि लेलकै। बात बुझलिऐ नै।

पुरुष-१ : हँ, गोरैतबा कहादन डयोढीमे जा क' मालिकके उनटा सुनटा बात पढबैत रहै से बात' लक्ष्मी सुनलकै। सेहे बात कह' अशोकके तकैत अबैत रहै।

महिला-१ : अशोकक बाबू । हमरा त' कुछो नै घुसैअ माथामे ।

पुरुष-१ : वास्तवमे अहाँके घुसहु वला बात नै है । हमरा अहाँ के वेरमे एना होइतो कहाँ छलै ।

महिला-१ : ठीके, लक्ष्मी अशोक के कैला तकतै, कैला कहतै अपन बापके बात ।

पुरुष-१ : (किछु मुस्किआ कऽ) एकरो पाछाँमे कोनो बात छै ।

महिला-१ : हे, आब हमर माथा फटि जायत । जल्दी कहु ने ।

पुरुष-१ : अहाँ पतिअएबै ?

महिला-१ : एहन कोन बात छै जे हम नै पतिअएबै ?

पुरुष-१ : छै, तेहने बात ।

महिला-१ : पहेली नै बुझाउ, बाजू झट द' ।

पुरुष-१ : किछ दिनस सुनै छी, कहादुन अहाँ के दुलरवा लक्ष्मी सँगे फँसल हबे ।

महिला-१ : फेर झूठ । बाप रे । हमरा सभके अइ गामके लोक जीअ नै देत ।

पुरुष-१ : कहली नै । अहाँ पतिअएबे नै करबै ।

महिला-१ : पतिआएबला बात रहै तब नै पतिआउ ।

पुरुष-१ : त' नै पतिआउ ।

महिला-१ : (चुप्पी) लेकिन ई उड़ौलक के ?

पुरुष : के उराओत । बात साँच छै ।

महिला-१ : अहाँ केना बुझलिऐ ।

पुरुष-१ : अही घटनासँ ।

महिला-१ : कोन घटनासँ ?

पुरुष-१ : रे ओहे रोक बला घटनासं । एक त अपन बाप के बात कहेला अशोकबा लग कैला अइतै दोमस अएबो कैले त' ओतेक पितायल अशोक वाटेमे सं घुरि केना जइतै ।

महिला-१ : हे अशोक के बाबू ।

पुरुष-१ : बाजू ने ।

महिला-१ : बात कुछो बुझाइ है ।

पुरुष-१ : कुछो नै सोलहो आना साँच है ।

महिला-१ : तखन त ई आरो आफत भ' जएतै । ठीके कहै छल गोरैतबा ।

पुरुष-१ : की कहैत छल ?

महिला-१ : कहै छल जे एगो बात एहन जनै है जे मालिक के कहि दौक त' अइ घरमे आगि लगा देतै ।

पुरुष-१ : ठीके इहो बात होतै ।

महिला-१ : हम की कहु । बेटे-कुवेटा भऽ गेल है । नीक-वेजाय किछु ने सोचै है ।

पुरुष-१ : एहनमे नीक वेजायके खिआल रहबो नै करै है किने ।

महिला-१ : अहाँ केना जनलिऐ से ?

पुरुष-१ : की हम गाम-समाजमे नै रहै छी से ।

दुनुक सम्मिलित हँसी ।

महिला-१ : नै, बजलिऐ । आब की होतै ?

पुरुष-१ : की होतै । जे आगि लगौलकैअ सेहे बुझएतै ।

महिला-१ : गे दाई गे दाई । हमर बेटा नाहकमे मारल जाएत ।

पुरुष-१ : हे सुतु ग जाउ । नाहक माथ खराब नै करु । जे उमेर नीक-बेजाय सोच के दिमाग नै दै छै सेहो तकर परिणाम भोगै के शक्तियौ देतै की ।

महिला-१ उठैत अछि ।

महिला-१ : अहाँ के वीछौना गोठ घरमे कऽ देने छी । खाटपर आइ बौआ सुततै । कहने छल अँगनेमे सुतब ।

पुरुष-१ : (उठैत) ठीक छै। हम जाइ छी ओतहि।

दुनू गोटेके दुनू दिस प्रस्थान। महिला-१ घरमे चल जाइछ। तकरा बाद युवक-१ के आगमन। आँगनमे राखल खाटपर चादर ओढि सुति रहैछ। कनेक काल मद्धिम लाल्टेनक रोशनीमे रातुक वातावरण। एकटा महिला आकृति आँगनमे प्रवेश करैछ। हाथमे एकटा पोटरी धयने। युवक-१ क लग जाक ठाढ भ' जाइछ। आकृति चकुआइत अछि। फेर आश्वस्त भ' जाइछ।

आकृति : (युवक-१ के गर जातिक' उठबैत) अशोक।

युवक-१ चुप्प। फोफ कटैत।

(कनेक जोरसँ) अशोक जी।

युवक-१ धरफड़ाक उठि बैसैत अछि 'के छी' कहबा लेल जोरसँ बाज' चाहैत अछि कि आकृति अपन वाम हाथ युवक-१ क मुँहपर ध' दैछ। चुप्प रहबाक संकेत करैछ। युवक-१ आकृति के चिन्ह लैत छैक।

युवक-१ : (आश्चर्यसँ) अरे, लक्ष्मी।

महिला-१ : (गर जाँति) हँ, हम।

युवक-१ : (सम्हरिक बैसैत) वाप रे, एतेक रातिक। लोक देखत त' की कहत ?

महिला-२ : लोक देखत तखन ने किछु कहत।

युवक-१ : अच्छा, कहु अहाँ किए अएलहुं। सब ठीक अछि ने।

महिला-२ : हँ, सब ठकि अछि।

युवक-१ : एतेक रातिक एना अएबाक की मतलव ?

महिला-२ चुप्प अछि।

बाजु ने, कैला अइलीग एतेक राति क।

महिला-२ : अशोक।

युवक-१ : कहु।

महिला-२ : आइ जाहि उतेजनामे अहाँ हमर घर दिस जाइत छलहुं। जँ बाबू सँ मुठभेड भ' जाइत तँ ओकर परिणाम बुझल अछि, की होइत ?

युवक-१ : मुठभेड़ कयनिहार परिणामके डर नै करैअ।

महिला-२ : तैओ।

युवक-१ : हँ, दुनुमेस कोइ एक गोटेक जान अवस्से जाइत।

महिला-२ : तखन कहु एहिसँ अहाँके न्याय भेटैत ?

युवक-१ : मनमे संतोष त' होइत।

महिला-२ : नहि, अशोक नहि। अन्याय, अत्याचारक विरुद्ध लडबाक जे उर्जा अहाँमे अछि। तकरा एना वर्वाद अहाँ नै क सकैछी।

युवक-१ : माने ?

महिला-२ : माने साफ अछि। जे लडाइ अहाँ लड़' चाहैछी, ताहि लेल अहाँक नेतृत्वके जरुरति छै समाजके। एक्के मुठभेडमे अपन सभ किछु समाप्त क देबाक अहाँक कोनो अधिकार नहि अछि।

युवक-१ : लक्ष्मी ई अहाँ की कहैछी ?

महिला-२ : हम ठीके कहैछी अशोक। अहाँके सँगठित भ' लड़' पडत।

युवक-१ : के आओत एहि लडाईमे हमरा संग ?

महिला-२ चुप्प अछि

बाबू रणधीर सिंह सन अत्याचारी शोषकक विरुद्ध आवाज उठैबाक साहस के करत ?

महिला-२ एखनो चुप्प अछि।

ककरा छै एहि गाम सँ पडएबाक, घर-घराडी लिलामी पर चढएबाक ? लक्ष्मी, देत केओ संग हमरा ?

महिला-२ : (गम्भीर होईत) हँ, अशोक, जरूर देत।

युवक-१ : के ?

महिला-२ : (दीर्घ निसाँसक संग) हम ।

युवक-१ : (आश्चर्यसं) अहाँ ?

महिला-२ : हँ, हम अहाँके सँग देब ।

युवक-१ : ई जनैत जे रणधीर सिँह अहाँक बाप केहन क्रूर अछि ?

महिला-२ : तएँ ने हम साथ देब । कारण अत्याचार आ शोषणक खेल हम अपना सोझाँ नीक जकाँ देखने छी ।

युवक-१ खटिआसँ उठि टहल' लगैछ ।

आ ताहीसँ एहि लडाइमे अहाँके साथ देब' हम अएलहुँ अछि ।

युवक-१ ओहिना टहलि रहल अछि । भीतरमे अन्तरद्वन्द चलि रहल छैक से बात व्यवहारसँ बुझि पडैछ ।

की अहाँके हमर सहयोग नहि चाही ?

युवक-१ : (ठमकि) अवश्यं चाही, लक्ष्मी ! अहांक संग हमरा लेल प्रेरणाक काज करत, शक्तिक काज करत ।

महिला-१ : (हाथक मोटरी आगाँ बढबैत) तँ, लिअ ई छोटछीन उपहार ।

युवक-१ : (आश्चर्यसँ) ई की अछि ?

महिला-२ : एहि पोटरीमे हमर गहना सभ अछि ।

युवक-१ : (आओर आश्चर्य मिश्रित स्वरमे) गहना कोन काम देत ?

महिला-२ : एकरा बेचिकऽ सभसँ पहिने अपन कर्जा चुकाउ ।

युवक-१अवाक् भऽ मुँह तकैत रहि जाइछ ।

जखन ऋण चुकि जायत तखने मर्द जकाँ लडबामे आत्मसम्मान बढत । कर्जा त' लोकके तोडि दैत छैक, कमजोर कऽ दैत छैक ।

युवक-१ : नहि, कर्जा चुकौनाई हमर निजी मामिला है । हम चुकायब चाहे घर-घराड़ी लिलाम करायब । एहिमे अहाँक सहयोगक जरुरति नै है ।

महिला-२ : एही ठाम अहाँ बिसरि जाइछी । एकर जरूरति अछि अहाँके ।

युवक-१ : नहि लक्ष्मी । हमरा कथीके जरुरत है । कथीके नै तै मे अहाँ नै पडू । धीया-पुता बला गप छोडू, ई सभ उठाकऽ चलि जाउ । जँ वाप बूझत त' खण्ड-खण्ड कऽ काटि देत ।

महिला-२ : अहाँ वापक डर देखा हमरा कर्त्तव्यसँ च्यूत कर' चाहैत छी ? जखन सँग लेवाक बचन देलहुँ अछि त हमर ई उपहार स्वीकार कर पडत ।

युवक-१ : कोनो हालतमे नहि । ई अहाँक उपहार हमरा बड़ महग पड़त । हम जिनगी भरिक लेल अहाँक गुलाब बन' नै चाहैछी ।

महिला-२ चुप्प अछि ।

ककरो देल भीखक जोड पर हम लडाइके जारी नहि राखि सकब ।

महिला-२ : त' सुनू : हमर एकटा बात मानब ?

युवक-१ प्रश्नवाचक नजरिसँ देखैत अछि ।

अहाँ हमरा वरण कऽ लिअ ।

युवक-१ : (आश्चर्यसं) की ?

महिला-२ : हँ, अहाँक संग प्रणय-सूत्रमे बन्हि जएने बेसी प्रतिबद्धतापूर्वक अहाँके सँग द' सकब ।

युवक-१ निर्मिमेष एकटक मुँह निहारैत खड़ा अछि ।

आ जखन हम अहाँक भ' जायब त ई गहनामे आन आ अप्पनक झँझटे समाप्त भ' जएतै ।

युवक-१ एखनो ओहिना ठाढ़ अछि ।

बाजू, की मंजूर अछि हमर प्रस्ताव ?

युवक-१ : (पीड़ासँ) लक्ष्मी, राति बड भ' गेलै । लगैए अहाँ पर दिनका बदहवासी कायम अछि । बाप-माय सूतल छथि । ओ जागथि आ अहाँके आँगनसँ जवरदस्ती बहार कऽ देथि ताहिसँ पूर्वे अहाँ गहना उठाकऽ चल जाउ ।

महिला-२ : त' ई अहाँक अटल निर्णय अछि ?

युवक-१ : हँ, हँ, हँ । अहाँ जतेक जल्दी भ' सकय चल जाउ ।

महिला-२ : तँ ठीक छै । हम जाइछी । मुदा, सुनि लिअ । (जोर दैत) अहाँके हमर जरुरति अछि, आ हम सदिखन सँग पुरबा लेल अहाँक वजाहटिक प्रतिक्षा करैत रहब । **हिचुकैत महिला-२ क प्रस्थान । युवक-१ ओहिना कनेक काल टहलैत थच्च द' खटिया पर बैसि जाइछ । दुनु हाथे माथ पकडि लैछ ।**

अन्हार

दृश्य-५

स्थान पूर्ववत् । मध्याह्नक समय । खुरसी पर बैसल युवक-१ चिंतित मुद्रा मे देखि पडैछ । खुरसी स उठि टहल लगैछ । उद्विग्नता स्पष्ट देखि पडैछ।

तावत युवक-२ क प्रवेश, कस्वरक सँग 'गोंधिया ?' । ओकरा देखिते जेना युवक - १ क आखि चमकि उठैछ । 'भाइ' कहि एकाएक उत्साहित होयछ, फेर जेना किछु सोचि चुप्प भ' जाइछ । युवक-२ ठाढे ठाढे एकटक्क युवक-१ क अनुहार देख' लगैछ ।

युवक-२ : की बात छै गोंधिआँ । वड उदास देखै छियौ ?

युवक-१ : नै, किछु नै है ।

युवक-२ : (खटियाके घीचैत) नै रे, किछो हौ जरूर ।

युवक-१ : (खुरसी पर बैसैत) तो त' अहिना बाल के खाल निकाल लगै छे ।

युवक-२ : हम मानबौ केना । तोरा सन चंचल लोक आइ एक सप्ताहसँ उखडल उखडल लगैछे, बात त' जरुर कुछो होतौ ।

युवक-१ चुप्प अछि ।

काका, काकी कत' छथुन्ह ?

युवक-१ : शहर गेल छथि । साँझ तक घुमथीन ।

युवक-२ : (चहकि) एह, तब त ठीक है ।

युवक-१ : कथीला ?

युवक-२ : गप्प करैला ।

युवक-१ : (मुस्किया) दुत चुतिया । हम त' कहलियौ कोनो गंभीर बात छौ ।

युवक-२ : ई गंभीर बात नै भेलै, जे आइ बहुते दिनपर दुनु भाई दुख-सुखके वात वतिआयब फैलस । बिना ककरो टोका टोकी के ।

युवक-१ : की गप करबे । कहाँहै कोनो तेहन बात ।

युवक-२ : छै कि ।

युवक-१ : जेना ?

युवक-२ : जेना आब हमरा सबके सँगठन बनाब' के बात । आइ कय दिनसँ चलि रहल है । **युवक-१ चुप्प अछि ।**

गोंधिया, जा धरि हम सब गाममे अगाड़ी नै बढ़बै ता धरि कोनो छौडा के डेग नै ससरतै ।

युवक-१ : से त' छै, मुदा हम सब करबै की ?

युवक-२ : फेर उहे बात । तोरा कय दिन स कहै छियौ वुढबा सबके बात के आब छतिअैला स काम नै चलतौ । फाड़ बान्ह आ मैदानमे कूद ।

युवक-१ : फेर त' माता-पिता.....।

युवक-२ : माता पिता के अपमान नै करी । तहिना कोइ करैत रहे त' देखबो नै करी ।

युवक-१ चुप्प अछि ।

आइ गोंधिया, तोरे माता-पिता मात्र अत्याचारी महाजनसँ अपमानित नै होइ छथून्ह। सौंसे गामक प्रतिष्ठा आइ महाजनके छड़ीके नोकपर नचैत-खसैत छै ।

युवक-१ चुप्पे अछि ।

ई क्रम कतेक दिन ? की अइला चुप रहल जाए जे हमरा तोहर बाप-माय ओकर कर्जा खयने है । आ एक के दश बुझा जीवन भर गुलामी करैत रहै ? युवक-१ **उठि जाइछ आ टहल' लगैछ ।**

हमरे तोरे साथी सभ एहिना गार्जियनसँ उपेक्षित भ' शहरमे कोन लतमे पडि गेल अछि नै हौ पता ? की तो चाहै छैं जेहो वचल-खुचल सब छी ओहिना आकोश के मारैत आयोडेक्स आ युरिया खाद खा-खाक' मरैत रही पल पल ?

युवक-१ : रास्ता की छै भाई ?

युवक-२ : साफ बात छै, विद्रोह।

युवक-१ : केहन ?

युवक-२ : बाप-मायक परम्परागत मान्यता आ विश्वासक विरुद्ध, शोषण आ अत्याचार कैनिहार महाजन सन नृशंसक विरुद्ध।

युवक-१ : हमरा त ई सोचिते अपन वापक निरिह थाकल चेहरा लगमे नाचि जाइअ। बेटाक कोनो गलती सुनबा लेल किन्नहुँ तैयार नै होइत माय। भाई.....।

युवक-१ फेर खुरसी पर बैसि जाइछ।

युवक-२ : ई मोह त' तोड़ पडतौ।

युवक-१ : लेकिन केना ? तों चाहै छैं हम विद्रोहमे वहरा जाइ आ एम्हर माय-वाप के जुतिअबैत महाजन घरसँ निकालि दैक।

युवक-२ : ओकर एतेक हिम्मत ....।

युवब-१ : हिम्मत त' छै। हमरा पूरा परिवार ओकर कर्जामे डुबल छै भाइ। तों नै बुझविही।

युवक-२ : वुझल त' है। लेकिन.........।

युवक-१ : लेकिन की ? कोन आश है मुक्ति के ? हम चुका सकबै कर्जा ?

युवक-२ चुप्प अछि।

बाज, कत'सं लयबै ओतेक रुपैया। की चोरी करू, ककरो घर लुट ? अथवा स्मगलिंग करू ? की करु, बता ने।

युवक-२ : बाप-माय कर्जा चुका नै सकतौ, तोरा सँगमे कोनो उपाय नै छौ। आ जा धरि तोहर कर्जा नै उतरतौ ताधरि तों आगाँ आब' ने चाहबे। कठिन छै परिस्थिति।

युवक-१ : तैसँ ने कहै छियौ। महाजनी अन्हारक विरुद्ध संघर्षमे उतरि जएबाक मोन हमरो होइए, मुदा ई निर्दोष अनुहार पएरमे सींकडी बान्हि देने है।

युवक-२ : लगैछौ, हमरा सबके एहिना रह' पड़तौ।

युवक-१ : (गौरसँ युवक-२ क चेहरा देखैत) एकटा उपाय है।

युवक-२ : (चौंकी) अएँ। कोन उपाय रे ?

युवक-१ : (कतौ दूर देखैत) महाजनक बेटी लक्ष्मी स हम विवाह कऽ ली।

युवक-२ : (चिहुकि क') गोंधिआँ।

युवक-१ : हँ, हम ठीके कहै छियौ।

युवक-२ : भाइ, गरिबीमे सपना वड नीक लगैछै।

युवक-१ : मुदा, ई सपना नै है।

युवक-२ : वाप रे, ई संभव छै भाई।

युवक-१ : नीक जकाँ संभव छै।

युवक-२ : त' अइमे देरी कैला ?

युवक-१ : (ओहिना गंभीर मुद्रामे) हम नै चाहैछी।

युवक-२ : (आश्चर्यसं) की माने ?

युवक-१ : ई प्रस्ताव लक्ष्मीएके है।

युवक-२ : (लगभग कुदैत भरि पाँजकऽ युवक-१ के पकड़ि) तोरा कोन सिद्धान्त बीचमे आबि गेलौ।

युवक-१ : इहे जे बाप-माय की कहथिन, समाज की कहत। फेर महाजनो आर पिशाच भ' लागि जएतै।

युवक-२ : चुप्प ! एकटा सुन्दर मौका आबि रहल छौ त' फेर बाप-माय आ समाज सूझ' लगलौ। जे इजोत अन्हारसँ लडबाक हेतु स्वयं तोरा घर तक आबि गेल छौ तकरा तों ठुकराब' चाहैछैं, अन्हारक कैदी भ' जीवन नरक बना देब चाहैछैं।

युवक-१ चुप्प अछि ।

आ रहल चण्डलवा महाजन, त' भाई ओकरा सँ बदला लेब के अइसँ बेसी नीक मौकानै भेटतौ । चुकाले गोधियाँ ओइ सार सँ सभ बदला ।

युवक-१ : अइ अभियानमे समाज साथ देत ?

युवक-२ : के नै देतै । उँच-नीच गरिब-धनिकक बीच बटल अइ समाजमे तोरा सन पिचायल बहुतो जीव है जकरा तोहर ई निर्णय जान उसास करतै ।

युवक-१ : आ विद्रोह ।

युवक-२ : विद्रोहक नया माहौल तैयार होएतै, एकटा प्रेरणा भेटतै । (कनेक कालक चुप्पी) मुदा, की आब लक्ष्मी मानतौ ?

युवक-१ : ओत' कहिकऽ गेल अछि-हमर जरूरति जहिया पड़य बजालेब, हम सदैब प्रतीक्षारत भेटब ।

युवक-२ : वाह, देखही ओइ नारीके महानता, जकर निर्णय मात्र तौँ यदि स्वीकार क' ले त' पूरा नक्सा बदलि जएतै । (कनेक कालक चुप्पी) कह, लाउ बजाकऽ ओकरा !

युवक-१ : एखन, लोक देखत त' की कहत ?

युवक-२ : दुत, हम अबैत रही त' ओकरा इसकुल पर देखने छलिअइ, गल्लीए बाटे आबि जएतै दू मिनट के त बात है ।

युवक-१ किछु नै बजैत अछि ।

तों बैस, हम अखनिए अइली ।

युवक-२क प्रस्थान । युवक-१ फेर उठिकऽ टहल लगैछ । दू चारि फेरा लगा खुरसी पर ओङ्गठि जाइछ । ताबत लक्ष्मीक संग युवक-२ क प्रवेश । दुनू गोटे युवक-१क आंखि मूनने चेहरा दुनूकात भ' एक टक्क गौरसँ देखैत रहैछ।

युवक-२ : गोंधिया ?

युवक-१ : (चौकि क') अएँ की भेलौ (फेर लक्ष्मी पर नजरि पडैछ) ओह, लक्ष्मी ।

महिला-२ : (प्रशन्नतासं) अशोक, अहाँ बजौलहु की ?

युवक-१ माथ निहुरालैछ ।

हमरा बुझल छल, पतझड़मे सुखायल गाछसँ हरियरी बेसी दिन अलग नै रहि सकैछ ।

युवक-१ : लक्ष्मी ।

महिला-२ : हँ अशोक । प्रत्येक कारी रातिके समाप्त करबाक लेल सुरुजके उगब ध्रुव सत्य थिक ।

युवक-१ : (आँखिमे नोर डबडबाकऽ) ई त' हमर शौभाग्य अछि अशोक । हमर सानिध्यसँ जँ अहाँक भीतरमे जमल विद्रोहक नदीमे उफान आबिजाई आ ओ अन्याय-अत्याचारक बान्हके तोड़ि सकय तँ एहिसँ बेसी हमरा लेल आर की भ सकैए । एहि प्रकाशयात्रामे हम अहाँक सदैब संग रहब ।

युवक-१ : हँ, लक्ष्मी । हमरा अहाँक साथ चाही, हमरा एकटा नयां शुरूआत करही पड़त । (घीचकऽ छातीसँ लगबैत) आब कोनो शक्ति हमरा अहाँसँ अलग नै कऽ सकत ।

युवक-२ किछु आगाँ बढि देहपरक गमछासँ नोर पोछ' लगैछ ।

***

दृश्य-६

दृश्य पुर्ववत् । मध्याह्नक समय । आंगनमे खुरसी पर पुरुष-१ आ खटिया पर महिला-१ बैसल । गम्भीर मुद्रामे । पार्श्वसँ "रौ गोंधिया छैं रै" स्वर सूनि पडैछ । दुनू परानी साकांक्षा भऽ जाइछ ।

पुरुष-१ : लगैए, कमल आबि रहल है । नीक मौका पर आयल है ।

महिला-१ : कैला ।

पुरुष-१ : ई अपन छौड़ा के संघतिया है नै । कहबै कनि समझबही ।

महिला-१ : की कैलकैअ वौआ जे समझौतै ?

पुरुष-१ : (खिसिआकऽ) फेर उहेबात । अहाँ चुप रहू । हमरा कह' दिअ ।

ताबत युवक-२ आंगनमे प्रवेश करैछ ।

युवक-२ : (दुनूके एक्के संग प्रणाम करैत) गोर लगैछी काका-काकी ।

पुरुष-१, महिला-१ (एक्के बेर) नीके जकाँ रह ।

पुरुष-१ : आबह बैस ।

महिला-१ घरमे चल जाइछ ।

की कमल । केम्हर ?

युवक-२ : अशोक नै हबै की ?

पुरुष-१ : घरमे एक्को रती रहै है, पता नै, कत रहै है भरि दिन ।

युवक-२ : हुँ ।

पुरुष-१ : कमल ?

युवक-२ : जी, काकाजी !

पुरुष-१ : अशोक के समझबै नै छहक ?

युवक-२ : कथी के लेल ?

पुरुष-१ : इहे खराब संगत के लेल !

युवक-२ : की भेलैए से ?

पुरुष-१ : लोक कहैए पीहु-पाब' लागल है । खराब लोक संगे घुमैत रहैय ।

युवक-२ : सब झूठ छै । हम अपने खराब संगतमे रही । अशोकके कारण सम्हरि गेल छी ।

पुरुष-१ : कय गोटे कहि चुकल है ।

युवक-२ : काकाजी । अहाँ सब ओइ जुग के लोक । कनिको नीच उपर के बात सुनैत छी त' जीउ हुकुरदृम होब' लगै हबे । लेकिन बात किछुनै है ।

पुरुष-१ : गामके छौरा सबके हालत ठीक छै नै । देखलहो नै असेसरा आ चलितरा मास्टरके बेटा शहरमे फेन्सीडील बोतल के बोतल पीब जाइहै । कहादन गरिगीट आ आयोडेक्स खाइ है । बाप रे !

युवक-२ : ओतबे काका, ओइ दिन त' अपने हाथे नशाके सुइया भोकिक' सरयुग हजाम के बेटा वेहोश भ' गेलै-अखनु अस्पतालमे है ।

पुरुष-१ : तहीस कहै छिअह किने । एकरो संगत नीक नै हे । जीउ भरिदिन अशोके पर टांगल रहैअ ।

तावत चाहक संग महिला-१क प्रवेश । दू कप चाहमे एक कप पुरुष-१ के आ १ कप युवक-२ के द ओतहि खाट पर बैसि जाइछ ।

युवक-२ : (चाहलैत) काकाजी । आइ समाजमे एहि तरहक जे अराजकता युवक सभमे अएलैए तकर कारण जनै छीऐ ?

पुरुष-१ : की ?

युवक-२ : बेरोजगारी, भौतिक सुख सुविधाक प्रतिस्पर्धा, गरिबी आ शोषणके विरुद्ध आवाज नै उठा सकबाक बाध्यता, मजबूरी ।

पुरुष-१ : मजबूरी किए ?

युवक-२ : अहाँसन-सन अपन लीखक फकीर बापक कारणे ।

पुरुष-१ : बात बुझली नै ?

युवक-२ : बात साफ छै । समाजक गतिक संग धीआ-पूताके अहां चल देबै नै । समाजमे एतेक शोषण, अत्याचार छै, तकरा विरुद्ध बाज' चाहय त' अहां सब अपन परम्परागत मान-सम्मानक ढाल ल' क' आगाँमे ठाढ़ भ' जाइछी । अनकर मुँहक कौर छीनिक' महलमे किसुनकेलि करैत शोषकके हड्डी चूर करबाक तैयारी होइत अछि त' तकरा सामाजिक विखण्डनक नाम पर अहाँ वुजुर्ग सभ रोकि दैत छिऐक ।

पुरुष-१ : त' हम सभ अराजकता कोना होब' दिऔ ?

युवक-२ : जे घोर अत्याचार करए से अराजकता नैत', जे रोक चाहय ओ अराजकता भ' गेलै ।

पुरुष-१ : एहिसँ लागू पदार्थ सेवनक की सम्बन्ध ? युवक विगड़बाक कोन तालमेल ?

युवक-२ : बड गहींर छै काकाजी । एहने असमान अवस्थामे विद्रोह करबाक

हेतु वातावरण गार्जिन नहिदैछ तखन भितरक ज्वालाके दबएबाक हेतु लोक नशा कर लगैए, अपनाके बिसर' चाह' लगैए ।

पुरुष-१ : एकर उपाय ?

युवक-२ : ओकर अधिकार भेटौक, बस ।

महिला-१ : केहन अधिकार ?

युवक-२ : काकी, अपन मौलिक अधिकार । नोकरी करबाक अधिकार, पेट भरबाक अधिकार, समाजमे होइत अन्याय-अत्याचारके विरुद्ध लडबाक अधिकार ।

महिला-१ : ई के देतै ?

युवक-२ : ई अहाँ सब, माय-बाप देबै । नेता देतै, सरकार देतै । सब उच्च पद पर कुंडली मारने सांप सभ देतै ।

पुरुष-१ : तोरा लगै छह देतै ।

युवक-२ : नहि देतै त' विद्रोह होतै । आ एहि विद्रोहके ताँ सब संग दहक काका, संग दहक ।

युवक-२ उठि जाइछ ।

पुरुष-१ : एह, कत स कत्त बात धीचा गेलै । हम त अशोकके समझाव के बात कहने रहिअह नै ।

युवक-२ : (पुनः बैसैत) बात दुनू एक्के छैक ।

पुरुष-१ : ई एक्के कोना छैक हौ ?

युवक-२ : तो अशोक के अपन आदर्शक चक्करसँ मुक्त क६ दहक ।

पुरुष-१ : आइ पहेली कैला बुझब' लागल छह हौ ?

युवक-२ : काका । ई पहेली नै है । जाहि अशोक पर गलत संगतक आरोप ताँ लगबैत छहक ओ त' तोरे इमान्दारी आ मान-सम्मानक बन्दी भ' क६ रहि गेल छह । ओ त' एहन स्फुलिंग अछि जे मौका पबिते अन्याय-अत्याचार शोषणक सम्पूर्ण आन्हर शासनके जराक६

भस्म क६ सकैत छैक, मुदा ओकरा माथपर बापक आदर्शक भूत सवार छै । बापक कर्जासं लचरल महाजनी आतंकक सायाक भय सवार छै ।

पुरुष-१ : कमल, समाजमे रहबाक हेतु.....।

युवक-२ : समाजमे रहबाक हेतु मर्द जकाँ जीब' पडतै, ककरो क्रीतदास जकाँ नै । सम्मानक मर्यादा ता धरि रहैत छैक जा धरि ओ ककरो अहमके आहतक६ नहि प्राप्त कयल जाइ । तकरा वाद त' खूजल लडाइ छै...।

यूवक-२ उठि जाइछ ।

अच्छा कका हम एखन जाइछी । जाइत-जाइत एतबे कहब जे अशोकक भितरमे उठैत आगिके आब नै दबबहो ।

युवक-२क प्रस्थान । पुरुष-१ एकटक जाइत देखैत रहैछ ।

पुरुष-१ : (महिाल-२ सँ) अशोकक माय, ई कमल ठीक नै कहलक ?

महिला-१ : दुर हम की जान गेलिऐ बड़का-बड़का बात ! हम त' एतबे जनै छिऐ हमर बेटा कोनो गलत नै करत ।

पुरुष-१ : (जेना दूर कतौ हेरायल) ठीके, लगाममे ढील देब' पडतै । जे हम सभ नै क६ सकली, से करबाक लेल नयाँ पुश्ताके रोकबाक की अधिकार अछि हमरा सभ के ?

(कनेक कालक चुप्पी)

खाली एकटा बातसँ हारै छी ।

महिला-१ : कथीसँ ?

पुरुष-१ : इहे जे, महाजन के कर्जा माथपर है, आगाँ पड़िते बाइ नै ससरैअ ।

महिला-१ : उपायो की छैक ?

तावत युवक-१क प्रवेश ।

युवक-१ : (मायसँ) कथीक उपाय माय ?

महिला-१ : (उठैत) किछु नै ।

युवक-१ : नै, कुछो त' जरूर है ।

पुरुष-१ : होतै कथी, महाजनके कर्जा.....।

युवक-१ : कर्जा, कर्जा, कर्जा । आखिर अइ घरमे कर्जा के छोडि दोसरो कोनो बात होइ छै ?

पुरुष-१ : दोसर हायबो की करौ । अइ घरक सभ सुख सेहन्ता त' महाजन के खाता-पतामे बन्न भ' गेलहै ।

युवक-१ : के कैलकै बन्न ?

पुरुष-१ : हम ! मुदा अपना ला नै ।

युवक-१ : हम बुझैछी - हमरा ला ने । हमरा पढाई लेल ई कर्जा बोकने हयब । मुदा, हम पूछैछी, हमर एहि पढाइक कोन मतलब ? नै अहाँक कर्जे चुका सकैत अछि ने हम स्वतन्त्र भ' तेहन शोषकके विरोध कऽ सकैछी । कहू, की भेल एहि कर्जाक फल ?

पुरुष-१ चुप्प अछि ।

आब ई कर्जा हम स्वयं चुकायब ।

महिला-१, पुरुष-१ : (एक्के बेर) तोँ ।

युवक-१ : हँ हम । खाली तो सब चुपचाप रह ।

पुरुष-१ : (आशंकित होइत) नहि, तोँ चुकैबही कतसँ । जरूर कतौ किछु अनर्थ......।

युवक-१ : (बात कटैत) कथमपि नहि । हम अनर्थ त' नहिए करब । हँ, अहाँ सभक नजरिमे, समाजक नजरिमे ओ सभसं पैघ अनर्थ कैला नै होइ ।

पुरुष-१ : (महिला-१ सँ) सुनै छी, ई जरूर किछु गड़बड़ी करत । हे भगवान, हम की करू ।

युवाक-१ : हँ, अहाँ ओहि भगवानकेँ गोहरबैत रहू, जकर माला जपिकऽ

अपना संगे सौंसे परिवारके भिखमंगा बनाकऽ राखि देलिऐ । हम एहि जंजालसँ मुक्तिकबाट खोजि लेने छी ।

तेजीसँ प्रस्थान । दुनू आश्चर्यसँ जाइत देखैत रहैछ ।

***

दृश्य-७

दृश्य पूर्ववत् । दिनक समय । एना लगैछ, जेना पुरुष तुरते भोजन कऽकऽ उठल हो । खुरसी पर बैसल सुपारिक कतरा मुँहमे धरैत । खटिया एखन आंगनमे धयल ।

महिला-१ : (घरसँ बहार होइत) आइ अन्तिम दिन छै । चण्डलवा कोनो बेरमे धमकबे करत ।

पुरुष-१ : हँ, ठीके ! समयो वीति गेलै आ एक्को पाइक जोगाड नै भ' सकल । आब की होतै ? (महिला हाथ पोछैत खाटपर बैसि जाइछ ।)

महिला-१ : आब की होतै घर-घराड़ी लिलाम करत ।

पुरुष-१ : मोहलत .....।

महिला-१ : मोहलत-तोहलत कथीके । ओइ दिनका घटनासँ आब कुछो नै होत ।

पुरुष-१ : हँ, ठीके । (चुप्पी) अशोक खयलक कि नहि ?

महिला-१ : कहाँ खयलक । पता नहि कत अछि ।

पुरुष-१ : हे, ऊ नहिए आबे तहीमे नीक । महाजनके देखते ओकर नरसिंह जागि जाइ है ।

महिला-१ : उ त' धन कही ओइ बचिया के । नै त बौआ ओहि दिन की सँ की कऽ दीतै ।

ताबत युवक-२ क प्रवेश ।

युवक-३ : गोर लगै छी काका ।

पुरुष-१ : नीके रह ।

युवक-३ : काकी तोरो गोर लगै छीयौ ।

महिला-१ : खुब खुश रह । कह' केम्हर रस्ता बिसरि गेलह ।

युवक-३ : (खाट पर बैसैत) कका, एकटा बात कहियो ।

पुरुष-१ : की ?

युवक-३ : अशोक के देखलियौ मंदिर जाइत ।

महिला-१ : ओकरा धर्म-कर्म पर वापे जकाँ विश्वास रहै छै नै ।

युवक-३ : (चारु भरू चकुआइत) नै गे काकी । ऊ असगरे नै रहै ।

पुरुष-१ : के रहै रे ?

युवक-३ : लक्ष्मी । महाजनके बेटी ।

पुरुष-१, महिला-१ : (संयुक्त स्वरे) लक्ष्मी संगे ।

युवक-३ : हँ, ओकरे संगे हहायल-फुहायल जाइत रहै ।

पुरुष-१ : (महिला-१ सँ) एकर की माने भेलै अशोक के माय ?

युवक-३ : माने त साफ है । दुनू मे कुछो उपर-नीचा है ।

महिला-१ : चुप्प । तोरा सबके अहिना सब बातमे कारण भेट जाइ हौ ।

पुरुष-१ : डँटियौ नै । किछो भ' सकै है ।

महिला-१ : अहाँ के त' ओहिना कोइ कुछो कहि दैअ । ओइ लऽ कऽ उड़ लगैछी ।

युवक-३ : (उठैत) काकी तो जे बुझ । गाममे तरे तरे कनफुसकी शुरु भ गेल है ।

पुरुष-१ आ महिला-१ एक दोसराक मुँह तकैत रहैछ ।

अच्छा हम चलै छियौ ।

प्रस्थान ।

पुरुष-१ : अशोकक माय । हम अहाँके कहने रही नै अहाँ बात के गाल नै लाग' देने रही आब बुझू ई बात ।

महिला-१ गुनधुनके मुद्रा मे अछि ।

पुरुष-१ : आब त' एहि घरके अनिष्ट होब' सँ कोइ नै रोकि सकतै ।

महिला-१ चुप्प अछि ।

हम त कहैछी, हमरा जाए दिअ ओम्हरे । दखियौ की करैए ।

महिला-१ : अहाँ की करबै जा कऽ ।

पुरुष-१ : समझएबै, एक त कर्जा के अन्तिम दिन है, दोमस बात सुनतै त सब पीत एक्के बेर हमरा सब पर बरसतै ।

महिला-१ : आब त' जे होब के होतै से होएबै करतै ।

पुरुष-१ उद्विग्न भऽ टहल' लगैछ ।

आब त' एक्के बात छै चण्डलबाके हसेरीके प्रतिक्षा कयल जाय ।

पार्श्वसँ महाजनक स्वर-रौ गणेशी छैं । पुरुष-१ धरफड़ा कऽ पत्नी दिस तकैत अछि ।

पुरुष-१ : लगैए आबि गेल । हे, घरमहक ढौवा कौंडी जे हय से धऽ लिअ, गहना गुडिया सेहो बान्हि लिय । खसी-बकरी खोलि दियौ ।

महिला-१ : (अपस्यांत होइत) कैला एना करैछी ?

पुरुष-१ : ऊ अवस्से घर जड़ा देत । आइ ककरो प्राण नै बाचत । जुमिगेल चण्डलवा कसाई । **की रे गणेसिया । घरमे छे कि नहि' पुनः पार्श्व सं स्वर । पुरुष-१ बड़बड़ाइछ - लगैए आब जाही पडत ।**

पुरुष-१ : जी, मालिक । आयल जाओ ।

महिला-१ घरमे चल जाइछ । महाजन, गोराइतक संग प्रवेश ।

आयल जाओ बैसल जाओ ।

पुरुष-२ : नै, आइ बैसवौ नहि । आइ त' निर्णय कऽ कऽ जएबौ । (पुरुष-३ सँ) सुगवा तों आगि.......

पुरुष-१ : (बीचेमे लोकैत) मालिक लऽ दऽ कऽ इहे घर-दुआर है हमरा सभके। दया कैल जाओ ।

पुरुष-३ : पहिने आगि, की नामसँ ।

पुरुष-१ : नै गोराइत जी । दया करियौ हमरा सभ पर हम सभ निर्दोष छी ।

पुरुष-२ : (पुरुष-३ दिस ताकि) तोरा कुछ चाही ?

पुरुष-३ : जी, की नामसँ, आगि । (पुरुष-१ सँ) अहाँक घरमे आगि नै है ?

पुरुष-१ : (निसास फेरैत महिला-१ दिश ताकि) हे भगवान । आगि त' छै घरमे, लाबि दियौ ।

महिला-१ आगि घर मे सँ बढा ओसारा पर राखिदैछ।

पुरुष-२ : गणेशी, की भेलै रुपैया के जोगाड ?

पुरुष-१ : अखनु तक नै भेलअ मालिक।

पुरुष-३ : ई त नै भेलै, की नाम स, गणेशी । आइ त' नौ कि छौ, की नाम सँ, भऽकऽ रहतौ ।

पुरुष-२ : आइ अन्तिम दिन । काल्हि मोकदमा चहरि जएतौ इजलाश पर ।

पुरुष-१ : नै मालिक । हम गरीब आदमी, ई मोकदमा-तोकदमा की जान गेलिऐ । मोहलत भेटितै ।

पुरुष-२ : असंभव । कर्जा असुल' अएलापर हमर आदमी के मारबौ-पीटबौ करबही आ उनटे समयो लेबही ।

पुरुष-३ : (महिला-१ द्वारा देल आगिमे बीडी धरबैत) एह की नामस गत्तर-गत्तर देह तोड़ि दने हय । तहिना हमहु आइ की नामसँ चुरबै किने ।

पुरुष-२ : सुगबा । आइ कोनो चीज घरमे रह नै दे । आब हद भ' गेलै ।

पुरुष-३ आगाँ बढैत अछि आ घरमे ढुक' चाहैत अछि कि अशोक आ लक्ष्मीक प्रवेश । अशोक तेजीसँ आगां बढि पुरुष-३ क पाछांसँ कालर पकिड़ घीचि लैछ ।

युवक-१ : बिसरि गेलै ओइ दिनका मारि ।

पुरुष-३ सिठुवा जाइत अछि ।

एक्कोटा वस्तुमे हाथ लगैलही त हम टांग हाथ तोडिकऽ सडक पर फेकि देबौ । बुझलैं ?

पुरुष-२ गम्भीर नजरिसँ कखनो घोघ तनने युवतीके आ कखनो युवक-१ के देखैत रहैत अछि ।

पुरुष-२ : हमर खायल पीयल तँ सधएबाक चाही ने । एना जँ महाजनी असूल वेरमे वेइज्जत करै, मारिपीट करै तऽ लोक वेहवार सब खतम भऽ जएतै ।

पुरुष-१ : मालिक, खायल अन्न केनाकऽ नै तीरबै ।

पुरुष-२ : लेकिन ई की छै ? हो हल्ला, मारिपीट ? (पुरुष-३ सँ) जो सुगवा, पुलिस के बजा क' ला । जल्दी जो । एक त' चोरी दोसर सीनाजोरी ।

पुरुष-३ : लीअ ने की नामसँ मालिक । मोटका दरोगा के की नामसँ अखने ले नै अबै छी । चारिएटा डंटा चूतर पर की नाम स लगतै कि सभ फरमैसी घूसरि जएतै । की नामसँ नेतगिरी छटैए सार ।

पुरुष-२ : सुगवा ?

पुरुष-३ : हे, की नामसँ इएह हम गेली? आ की नामसँ अइली ।

जाए चाहैए कि घोघ तनने लक्ष्मी घोघ हटालैत अछि ।

महिला-२ : ठहरू, सुगा कका ।

पुरुष-२, पुरुष-३ : (एक्कहि बेर), ऐ, लक्ष्मी ।

महिला-२ : हँ, हम छी । पुलिस बजएबाक कोनो काज नै छै। लिअ, अपन पाइ ।

हाथमे धयल पाइक गेट आगाँमे फेकि दैछ । एकक्षण पुरुष-२ कखनो पाइके कखनो महिला-२ के बेरा बेरी देख' लगैछ । आ माथ पर हाथ धरैत धम्म द' खटिया पर बैसि रहैछ ।

पुरुष-३ : मालिक की नाम सँ की भेल ?

पुरुष-२ : किछु नै, तों जल्दी जो थाना । जल्दी बजा पुलिस के ।

पुरुष-३ : मालिक की नाम सँ ? आब त' बात दोसर रंग के.... ।

पुरुष-२ : आब त आरो बजा । हमर बेटीके बहकाकऽ हमर इज्जत बर्बाद करबाक जुर्ममे कड़गर सजाय दिअएबै एकरा । जो.... ।

महिला-२ : बाबूजी, सिपाही के बजायब, थाना-कचहरी करब एहि सँ इज्जत बढत ?

पुरुष-२ : तों चुप्प रह । कलंकिनी ।

महिला-२ : ताही कलंकसँ बच' के लेल त' हम अशोकसँ बिआह कऽ लेलहुँ ने।

पुरुष-२ : बिआह, अशोकसँ। (पुरुष-३) जो न रे सार। जल्दी पुलिस बजा ने।

पुरुष-३ थकमकाइत अछि ।

महिला-२ : जाउ बजाउ पुलिस के। ककरा पकड़तै। अशोक के नै बाबूजी। एहिमे अशोकक कोन दोष ? ई विवाह हम अपन मर्जीसँ कयलहुँ अछि। घरसँ निकलि हम एत' आयल छी, अशोक हमरा ल' क' भागल नहि छथि। जाउ, सुगा कका, पुलिस के बजा आउ हम संगे थाना जायब।

पुरुष-२ : (नर्भस होइत) नै, सुगबा। नै जो कतौ। बरू हमरा एतसँ उठाकऽ ल' चल।

पुरुष-३, पुरुष-२ के दुनू हाथसँ उठबैत अछि। सम्हारैत आंगनसँ बहराय चाहैत अछि। तावत युवक-२क प्रवेश।

युवक-२ : (थपड़ी पारैत) वाह, अति सुन्दर।

युवक-१ : तों गौंधिआ ?

युवक-२ : हम बड़ी कालसँ बाहर खड़ा तमाशा देखैत रही। वाह, भौजी लक्ष्मी, अहाँ तँ आइ पुरुषक नाक ठाढ क' देलिऐ। (रुपैया उठा पुरुष-२सँ) काकाजी, ई रुपैया त' लेने जाउ।

पुरुष-२ : सुगा ?

युवक-२ : चिचियाउ नै महाजन। अहाँके शोषणक अन्हारक अन्त होबही पर है। देखियौ क्षितिज पर लक्ष्मी भाभी सन लालिमा पसरि रहल छै। आब' बला प्रकाश सँ डरू' महाजन प्रकाशसँ डरू।

पुरुष-३ : चलू चलू मालिक। की नामसँ बड खिधान्स भऽ गेलै।

दुनूक प्रस्थान। युवक-१ आ युवक-२ गलवाहि दऽ कात भ' जाइछ। महिला-२, पुरुष-१ आ महिला-१ के पयर छुबि प्रणाम करैछ। दुनूक आँखिमे नोर डबडबा जाइछ।

अन्हार

□□□

पेटक खातिर

(सड़क नाटक)

एकटा खूजलठाम। पुरुष-१ कांखमे एकटा कारी झोड़ी लटकौने देखि पडैत अछि। वाम हाथमे बाँसुरी आ दहिन हाथमे डमरु। पहिरन चरखनाक लुंगी कारी गोलगाला, डांरमे वान्हल लल्हका गमछा। गरदनिमे कारी डोरीमे ताबिज लटकल.....।

पुरुष-१ काँख तरक कारी झोरी उतारि बीचमे धऽ दैछ। अपन वामहाथसं बाँसुरी पकडि मुंहमे लगा फुकऽ लगैछ। दहिना हाथमे राखल डमरु बजबैत झोड़ीक चारूकात घुमऽ लगैछ। पुरुष-१क सँगे आयल एकटा १०-११ वर्षक वच्चा सुटकल एक कातमे वैसि रहैछ।

पुरुष-१ : (एककात ठमकि) साहेबान, कदरदान। आबिगेल, अपनेक शहर मे आबिगेल पहिलबेर देखब ई अजुबा। मात्र एक टकामे मोनकवात जानि सकैछी (कनेक रुकि) देखू ई नहि बुझब हम जन्तर बेच' वला मात्र छी। हमर जन्तर साधल अछि ४६ वर्षक। अबै जाऊ अबै जाऊ, (पुन: किछु रुकि) हँ, जे पहिने माँगब तकरा फ्रियो भेट सकैत अछि। माल सीमित अछि। **(एहिक्रममे किछुकाल धरि बाँसुरी वजबैत, डमरु डबडबबैत कालकार परिधिमे चक्कर लगबैत रहैत अछि।)**

ताबत दर्शक महक युवक-१ आगाँ बढैत अछि।

युवक-१ : खेलवाला। तोहर जन्तरक की विशेषता छह ?

पुरुष-१ : एकटा रहय तखन कही। एक सन एक अछि।

युवक-१ : तैयो कोनो खास विशेषता कहक ने।

पुरुष-१ : (पुनः बाँसुरी बजा, डमरु डबडबबैत अछि) विशेषता ? त सुनु बाबूजी । एकटा जन्तर ४६ वर्षक साधल अछि । एक सँ एक लोक एकर सिद्ध कऽ पास कऽ देने छैक ।

युवक-१ : की करत ई जन्तर ?

पुरुष-१ : ई लोकके मन वदलत ।

यूवक-१ : माने ?

पुरुष-१ : एहिमे प्रजातन्त्रके महसूश कर'वला गुण छै ।

यूवक-१ : औजी एखनो नै वुझलहु, कनेक परिछाउने ?

पुरुष-१ : अहां केहनो प्रतिगामी विचारवलाके ई जन्तर बान्हि दिऔक ओ तुरते प्रजातन्त्र-प्रजातन्त्र घोष' लागत ।

यूवक-१ : अच्छा ?

पुरुष-१ : ओतबे नहि । जनिका प्रजातन्त्रपर खतरा नजरि अबै छनि हुनको बाँहिमे बान्हि दिऔन त' सभतरि प्रजातन्त्रे देखबामे अओतनि ।

यूवक-१ : अएँ यौ । एहि जनतरसँ मात्र अनुभूतिए अओतैक अथवा प्रजातन्त्र भेल जकाँ बुझएबो करतै ?

पुरुष-१ : सएहने एकर विशेषता छै । किछु कर' नहि पडतै । बैसले-बैसले प्रजातन्त्रके मजा लुटल जा सकैछै ।

यूवक-१ : जनताके विचोमे ने जाए पडतै ?

पुरुष-१ : कथिलेल ? जे बैसले-बैसले सबबात भ' जायत त किए लोकक सेवा करत केओ ।

यूवक-१ : (माथ डोलबैत 'हुँ' बजैछ) दोसरो तरहक जन्तर अछि की ?

पूरुष-१ : (डमरु आ बाँसुरी बजबऽ लगैछ) हँ दोसरो तरहक अछि ।

यूवक-१ : (घेरामेसँ आगाँ बढि) आ दोसर तरहक केहन जन्तर अछि ।

पुरुष-१ : दोसर त एहू सँ तेज अछि ।

यूवक-२ : कोना यौ ?

पुरुष-१ : ई जन्तर ककरो नाम लऽ कऽ सिरमा तरमे राखि सुतल जाए त ओहि व्यक्तिक पेटक बात जानल जा सकैछ ।

यूवक-१ : एहि सँ फायदा ।

पुरुष-१ : बहुत फायदा छै, जेना, के घूस खाकऽ काज कऽ सकैए, पता लागि जएतै ।

यूवक-१ : अच्छा ।

पुरुष-१ : इहो पता लगौल जा सकैए जे घूस देबबला कतेक अंक धरि आँट क' सकत ।

यूवक-१ : हं, तखन एकटा हमरो दिअ ।

यूवक-२ : हमरो एकटा देव ।

यूवक-३ : हे हमरो एकट दिअ । (ताबत दू तीन गोटे हमरो एकटा हमरो एकटा स्वरक संग मांग करैत अछि ।)

पुरुष-१ : ठहरू । एखन ककरो नहि देब ।

यूवक-३ : किए ?

पुरुष-१ : छै बात ।

युवक-३ : त से कि छै, हमहू सब बुझिऐ ने ।

पूरुष-१ : जे हम कहलहुँ, ताहिपर अहाँ सभके विश्वास भऽ गेल ? (सभ चुप्प अछि ।)

पूरष-१ : हम बुझै छी, अहाँ सभ गुन धुन क' रहल छी । त लिए एकरा हम जाँचिकऽ देखबैत छी । (पुरुष-१ वसुरी, डमरु बजबैत फेर एकचक्कर लगबैत अछि । एक ठाम अटकि जाइत अछि ।)

पुरुष-१ : गुलभंटी ? (१०-११ वर्षक बच्चा जे औंघायल रहैछ, चौंकिकऽ साकांक्ष भ' जाइछ ।)

पुरुष-१ : गुलभंटी ?

गुलभटी : जी, उस्ताद ।

पुरुष-१ : रोजी-रोटी के सबाल छै ।

गुलभंटी : हुकुम उस्ताद ।

पुरुष-१ : खेलशुरु कर पडतौ ।

गुलभंटी : त शुरू करु ।

पुरुष-१ : साहेवान, कदरदान । आव अपने सभके जन्तरके कमाल देखबैत छी । (सामूहिक रुपेँ देखाउ, देखाउक स्वर अभरैछ । **पुरुष-१ कारी झोड़ामेसँ दूगोट चादरि निकालैत अछि । एकटा विछबैत छैक । गुलभंटीके इशारा करैछ । गुलभंटी चादरि पर सूति रहैछ । पुरुष-१ दोसर चादरि ओकरा ओढादैत छैक । फेर वांसुरी आ डमरु बजबैत घुम' लगैछ ।)**

पुरुष-१ : (एकठाम ठमकैत) आब हम देखायव हमर गुलभंटी एहि जन्तर के प्रभावसँ कोना सभक मोनक वात वतबैत अछि ।

दर्शक सभ साकांक्ष भ' जाइछ ।

पुरुष-१ : कारी झोड़ासँ एकटा जन्तर चीत सूतल गुलभंटीक छातीपर राखिदैछ ।

पूराष्-१ : (जोरसँ डमरु बजबैत) गुलभंटी ?

गुलभंटी : जी उस्ताद ।

पुरुष-१ : खेल चालू करू ?

गुलभंटी : हम तैयार छी उस्ताद ।

(पुरुष-१ आब दर्शक के ठिकिअबैत, डमरु बजबै, घुम' लगैछ। एक गोटे लग जा अटकि जाइछ ।)

पुरुष-१ : गुलभंटी ?

गुलभंटी : बाजू उस्ताद ।

पुरुष-१ : आब हमरा लग आ ।

पुरुष-१ : (पुरुष-२ के ठिकिअबैत) हिनका चिन्हैत छीही ?

गुलभंटी : खुब नीक जकां ।

पुरुष-१ : ई के छथि ?

गुलभंटी : ई स्मगलर छथि ।

पुरुष-१ : (चौंकि) आएँ, स्मगलर ?

गुलभंटी : हँ, उस्ताद । भारतसँ सामान लाबि भन्सार टपबैत छथि आ काठमाण्डू भेजैत छथि ।

पुरुष-१ : एखन हिनका मोनमे की छनि ?

गुलभंटी : ई जल्दी एत' सँ जाए चाहै छथि ।

पुरुष-१ : किए ?

गुलभंटी : जटही भन्सार पर ट्रक पकडायल छनि । एकटा पावरवला नेताके सिफारिस पत्र लेब आयल छलाह । से भेटि गेल छनि, तएँ घरफड़ी छनि जएबाक ।

पुरुष-१ : से कोना बुझै छही ?

गुलभंटी : हुनकर उपरका जेवीमे सिफारिशी चिट्ठी छनि ।

पुरुष-२ तेजीसँ जेबी झाँपि लैछ । पुरुष-१ हाथ बढा जेबीसँ पत्र बहार कऽ लैछ आ दर्शकके देखाब' लगैछ । पुरुष-२ क चेहरा उड़ल उड़ल सन। पूरष-१ फेर चक्कर देब' लगैछ । एक ठाम अटकि जाइछ ।

पुरुष-१ : गुलभंटी ?

गुलभंटी : हँ उस्ताद ।

पुरुष-१ : हमरा लग आ !

गुलभंटी : आबि गेलहुँ गुरु ।

पुरुष-१ : एहि बाबू साहेब के चिन्है छे ?

गुलभंटी : चिन्हलियनि ।

पुरुष-१ : पहिरन केहन छनि ?

गुलभंटी : नीचाँ उजर पेट आ उपर छिटक शर्ट पहिरने छथि ।

पुरुष-१ : हुँ, (किछु सोचि) अच्छा, हिनक मनक बात बता ।

गुलभंटी : मोने मोन फूलझरी छुटैत छनि ।

पुरुष-१ : (साश्चर्य) फूलझरी ?

गुलभंटी : हुँ, उस्ताद। आइ एकटा नीक सौदा पटलन्हिए। (पुरुष-३ कछमछाए लगैछ।)

पुरुष-१ : केहन सौदा ?

गुलभंटी : मोहीके लगत कटाब'वला सौदा।

पुरुष-१ : ई त जल्दी नहि कटाइ छै ?

गुलभंटी : इहो कयबर्ष झूललखिन्ह। आब दशहजारपर आइए सौदा पटि गेल छनि। आ काल्हि लगायत कटि जएतै।

पुरुष-१ : से कोना बुझै छही ?

गुलभंटी : एखने आधा घंटा पूर्व जानकी मन्दिरक उतरबारी कात वैना महक पाँच हजार लेलखिन्हए।

पुरुष-१ : ईहो पता छौ ?

गुलभंटी : एतबे नहि, सभ पाइ घरवालीके पठा देलखिन्ह आ एक हजार दारू के उधारी देब'ला पछिलका जेबीमे छनि।

पुरुष-१ : (पछारीक जेबीसँ हजारी बहार करैत) नम्बर बता सकैत छैं ?

गुलभंटी : किएकने। (पुरुष-३ क मुंह अपने सन भऽ जाइछ। दर्शक हँसि दैछ। पुरुष-१ क नजरि एकाएक किछु दुर पड़ि जाइछ। आंखिमे दहशति भरि जाइछ। धरफड़ा कऽ झोडी उठाब' लगैछ।)

पुरुष-१ : गुलभंटी ?

गुलभंटी : जी उस्ताद !

पुरुष-१ : खेल समट, नाहकमे मारि खएबैं।

गुलभंटी : की भेल उस्ताद ?

पुरुष-१ : सिपाही अबै छौ। कहने रहए जे पन्द्रह बीस मिनटसँ फाजिल एत' खेल नहि देखबला।

गुलभंटी : उस्ताद ?

पुरुष-१ : जल्दी भाग नहि त चारि डंटा मारतौ आ हवालातमे बन्नो कऽ देतौ।

गुलभंटी : ऊ सार, अपने चोर है, हमरा की पीटत ?

पुरुष-१ : वाप रे। गुलभंटी तो हमर धंधा चौपट करवे। ऊ आबि गेलै।

गुलभंटी : आब' दिऔ उस्ताद, देखलजएतै। **(पुरुष-१क मुहपर एखनो दहशत अछि सिपाही घेराके चिरैत आगाँ बढैत अछि।)**

सिपाही : अएँ, रौ। तौं एखन धरि एतसँ गेल नहि छैं ?

पुरुष-१ : हवलदार साहेब, आब जाइते छली कि अपने....।

सिपाही : चुप जाइते छलहुँ.....। वापक राज छौ, अएँ।

गुलभंटी : (बीचमे बात लोकैत) उस्ताद।

पुरुष-१ : की कहै छे गुलभंटी ?

गुलभंटी : हवलदार साहेब की कहै छथि ?

पुरुष-१ : कहै छथि जल्दी एत'सँ जाए लेल।

गुलभंटी : उस्ताद, हिनका कहि दिऔ, हाकिम बेसब्रीसँ हिनकर इन्तजार क' रहल छथि। **(उस्ताद सिपाही दिस ताकऽ लगैछ।)**

सिपाही : किएक, हमरा किएक ईन्तजार करत ?

पुरुष-१ : किए ईन्तजार करैत हयतनि ?

गुलभंटी : कमिशन के पाई लेल।

सिपाही : (रोबसँ) चुप्प सार। कमिशनके पाईलेल।

गुलभंटी : उस्ताद, बात बढि रहल छै।

सिपाही : दुइए चारि डंटा लगतौ कि सभ खेल घुसरि जएतौ।

(पुरुष-१ दुनूक सम्वादमे भौचक्क पडल अछि।)

पुरुष-१ : (निहोरा करैत) हजुर। एहिमे बच्चाके की कसूर। ई त जन्तरे एहन छै जे लोकक पेटक बात कहि दैत छैक। ई बच्चा तकरे प्रभावमे बाजि रहल अछि।

सिपाही : त एहन बकवास किए करैए। हमरा सभके ईज्जत नहि अछि की ?

गुलभंटी : उस्ताद !

पुरुष-१ : तौं चुप्पे रहि जो कनेकाल।

गुलभंटी : नहि उस्ताद । जा धरि हमरा छातीपर ई जन्तर रहत हमरा रहल नहि जाएत ।

सिपाही : अच्छा त जाधरि ई जन्तर एकरा छाती पर रहतै ई साँच बजिते रहतै (पुरुष-१ सं) त फेकि दे एहि जन्तरके ।

पुरुष-१ : (निहोरा करैत) नहि हजुर । ई हमर रोजी रोटीक सबाल अछि, जँ खेल नहि देखएबै त लोक पतिअएतै कोना । आ जँ पतिअएतै नहि त किनतै कोना ।

सिपाही : त एना अन्ट सन्ट नै कही बाजला ।

गुलभंटी : उस्ताद ।

पुरुष-१ : (थाकल-थाकल सन) की कहै छे ।

गुलभंटी : हवलदार साहेवके कहि दिऔन पछिलका जेबीमे बीस बीस हजार टाका नहि धरैथ लोक निकालि लेतनि ।

(सिपाहीक चेहरापर एक क्षण आश्चर्य आ आतंकक भाव अबैछै। हाथ पछिला जेबीपर चलजाईछ । फेर यथावत् भ अपनाके सहज बनबैत अछि ।)

सिपाही : अएँ ई की कहलक बीस हजार रुपैया ? हम कत'सँ एतेक पाई लाएव । (पुरुष-१सँ) हे देख कहि दैत छियौ । पाँच मिनटके भीतर नै उठौलेँ अपन ई भाभट त हम अपनेसँ फेकि देबौ ।

पुरुष-१ : नै माई बाप । मात्र १०-१५ मिनट आउर ।

सिपाही : किछु नहि सुनबौ । बड बढल बढल बात बजैछै ई तिलविखना । बीस हजार ।

सिपाही मोछ पर तावदैछ । घेरामे चारू कात रोब सँ तकैत अछि ।)

पुरुष-१ : गुलभंटी ।

गुलभंटी : जी उस्ताद ।

पुरुष-१ : तोरा गल्ती भ' गेलौ ।

गुलभंटी : कथीक गल्ती ।

सीपाही : देख । देखै छीही अपन गल्ती नै स्वीकार करैछै ।

पुरुष-१ : (सिपाही के इशारासँ कहैत) ठहरू समभा दैत छीयैक । (गुलभंटीस) बेचारा एकटा हवलदार ई बीस हजार रुपैया कत' देखत ? **(सिपाही समर्थनमे माथ डोलबैत अछि ।)**

गुलभंटी : उस्ताद बोड़ी-विस्तर समटु ।

पुरुष-१ : (किछु चौंकैत) किएक ?

गुलभंटी : अहाँ के अपने जन्तरपर विश्वास उठिगेल अछि ।

पुरुष-१ : (एकक्षण सोचैत) नहि से त हम नहि कहलियौ ?

गुलभंटी : तखन ई गप्पी सिपाहीके फेरमे पड़ि गुम्म किए भ' गेल छी । **(सिपाही पिताकऽ आगा बढैत अछि कि कमिशन के बात सुनि रूकि परैत अछि।)**

पुरुष-१ : कमीशन बला बात त..... ।

गुलभंटी : (बीचमे लोकैत) कमीशन ? मारि-पिटमे भै भगडामे, शान्ति, सुरक्षामे, मिलापत्रमे, चोरी, डकैतीमे लागू पदार्थके ओसार पसार मे ।

पुरुष-१ : (अगुताकऽ) की सभ वकै छै ।

गुलभंटी : धैर्य राखू उस्ताद । स्मगलिंगके माल टपएबामे, वन जंगल नाश कर'मे, जुवा तास खेलएबामे, स्थानीय बैंक सभमे पाकेटमारी कर बएबामे सभमे हिनके सभक हाथ रहै छनि ।

सिपाही : (कोधित भ' पुरुष-१ लग पहुचैत) हे आब हद भ गेल, ताँ उठबैछेँ कि दिऔ लाठी । (हाथक लाठी उठबैत अछि ।)

पुरुष-१ : दोहाई साहेबके । हे आब हम उठएलहुँ । बाज अएलहुँ ई जन्तर बेच' सँ ।

सिपाही : चुप सार । कोनो नीक लोकके एना चौक चौबटिया पर ठाढे बेइज्जती करब की ई उचित भेलै ? आब हम नहि मानबौ ।

गुलभंटी : उस्ताद ।

पुरुष-१ : आँखि गुरडिकऽ ओम्हरे तकैत) आब की कहबाक छौ सभ धन्धा चौपट क' देलें ।

गुलभंटी : साँच कहबामे दुख त उठाबही पडैछै उस्ताद ।

पुरुष-१ : आ पेट ?

पुरुष-१ गुम्म भऽ जाइछ । सिपाही फेर उठ जल्दी चल कहि पुरुष-१ के कुबिआब' लगैछ ।

पुरुष-१ झोड़ा ठीक करैछ आ बच्चाक देहपर राखल जन्तर उठाब' लगैछ।

गुलभंटी : ठहरू उस्ताद ।

पुरुष-१ : (ठमकि) किए ।

गुलभंटी : जँ आबाजाहीके बात छै त सभक सामने एकटा साँच आर बाजीए दैछ ती । **(सिपाही साकांक्ष भ' जाइछ । मुहंपर एकभाव अबैछ दोसर भाव जाइछ । कछमछाहट बढि जाइछ । पुरुष-१ गुलभंटी दिस एनाकऽ तकैछ जे जं आब ओ किछुओ बाजल त सब नाश भ' जएतै ।)**

गुलभंटी : एही क्षेत्रमे जतेक चोरी, डकैती भेलैए एक्कोटा चोर पकडल गेलैए ?

यूवक-१ : नहि, से त पकडल नहि गेलैए ।

गुलभंटी : किएक ? पुछियौ सिपाहीजीसँ ।

यूवक-२ : की औ हवलदार साहेब । किए ने पकडएलै ?

सिपाही : (झड़कि) से तोहर काज छौ ? खोजबीन त चलिए रहल छै ।

यूवक-३ : यौ कहिया धरि ई खोज बीन चलैत रहत आ कहिया चोर पकड़ाएत।

सिपाही : अवश्य पकड़ायत !

गुलभंटी : फूसि । एकदम फुसि । औ उस्ताद । चोर आब त नहिए पकड़ाएत ।

पुरुष-१ : किए ?

गुलभंटी : कारण सुनब ? त सुनु आइ ताही चोर सभक एकटा बैसार छलै । धर्मशालाके एकटा कोठरीमे ।

(सिपाहीक मुहपर हवाई उड़' लगैछ । ओ चारू भर चकुआइत जाए लगैछ ।)

गुलभंटी : हवलदार साहेव । ठहरु, हमरा सभके थाना लेनहि चलू ।

(जाइत-जाइत सिपाही ठमकि जाइछ । मुदा, भावसँ भितरे भितरे छटपटाइत ।)

गुलभंटी : हम जे कहने छलहुँ जेवीमे बीस हजार टकाक बात ।

यूवक १,२,३ : (संयुक्त रूपसँ) हँ, हँ, बीस हजार टकाक बात की भेलै ?

गुलभंटी : उस्ताद । ओ बीस हजार टका ओएह चोर सभ पहिलका किश्त बुझौलक अछि सिपाही साहेब के ।

(सिपाहीक मुह कानऽ सनके भ' जाइछ । सिपाही चोर जकाँ चकुआइत चलि जाइत अछि ।)

गुलभंटी : उस्ताद, चलू, उठाउ ।

पुरुष-१ झोड़ा उठब' लगैछ ।

युवक-१ : ठहरू ।

पुरुष-१ : (गहींर नजरिसँ देखैत) किए ?

युवक-१ : अहाँ खेल समेटि कत' जाए चाहैछी ? (एहि बीच सिपाही सहटिकऽ चल गेल रहैछ ।)

पुरुष-१ : हवलदार साहेब के सँगे थाना जएबै नहि ।

यूवक-२ : मुदा, हवलदार साहेब छथि कत' ? (सभ ताक' लगैछ । सिपाही पहिने चलगेल रहैछ ।)

यूवक-१ : आब, ओ अपने भगि गेल । छोड़ू देखाउ किछु आर ।

पुरुष-१ : की देखाउ हजुर । ई जन्तर कयबेर आफत आनि देलक अछि । मुदा, की करू, पेटक सवाल छै ।

युवक-१ : हे, साँच बात एहिना कष्टकर होइछै । अहाँक जन्तर त लूट भ' जाएत किए सोचै छी ।

(पुरुष-१ वांसुरी आ डमरु बजब लगैछ । एक फेरा मारि लेलाकबाद पुनः अपना स्थानपर आबि ठाढ भ' जाइछ ।)

पुरुष-१ : गुलभंटी ?

गुलभंटी : हँ, उस्ताद ।

पुरुष-१ : खेल चालू रहय ।

गुलभंटी : ठीक छै उस्ताद ।

पुरुष-१ : (एक गोटे नेता सन लोक लग ठाढ होइत) एम्हर आ ।

गुलभंटी : आबि गेलहुँ ।

पुरुष-१ : ई के छथि ?

गुलभंटी : ई सत्ता पक्षक बड प्रिय नेता छथि ।

पुरुष-१ : हिनक मनकबात बताबऽ सकैछे ?

गुलभंटी : किएक ने । ई अगिलाबेर सांसदक टिकटक जोगाड़मे लागल छथि । (नेताक चेहरा खिल उठैत छनि ।)

पुरुष-१ : आगाँ बता ।

गुलभंटी : एहि अढाई वर्षमे टिकट पक्का करबाक लेल बड़बड़ पापर बेललनि । भरिसाल पहुचौलनि केन्द्रमे आम, माछ, खसी आ...रह दिऔन ।

नेताक चेहरा उतरि जाइछ ।

पुरुष-१ : आर किछु ?

गुलभंटी : बहुत किछु छै । (नेता हताश होइत पुरुष-१ के ईशारासँ अपना लग बजबैछ ।)

नेता : (जेना कानमे कहैत हो) खेलबला । आब किछु नै बजाउ एकरासँ

पुरुष-१ : हजुर, ई नहि बजतै त हम सभ खएबै कथी ? जन्तर पडले रहि जएतै ।

नेताजी : (एम्हर-ओमहर चकुआइत) हे, सभ जन्तर हम कीन लेब । जाउ उठू एहि ठामसँ ई हमर चुनाब क्षेत्र हय ।

पुरुष-१ : (प्रसन्न होइत) एह, माइ-बाप । अपने सभक दया पर त हम सभ जीबै छी । (गुलभंटीसँ) गुलभंटी ?

गुलभंटी : हुकुम उस्ताद !

पुरुष-१ : खेल खतम । अपन दाना-पानीके जोगाड़ भऽ गेलौ ।

गुलभंटी : नेताजी के बारेमे.....।

पुरुष-१ : नहि, आब भऽ गेलै । चल । (नेताजी आश्वस्त होइत छथि)

गुलभंटी : मुदा, जिल्ला विकास समितिसँ लऽ गेल कामक लेल खाद्यान्न सभत अपने खयलनि, जन सभ बोनिलेल नगरमे हिनका तकैत छनि से कहि दिऔन । (नेताजीक चेहरा पर फेर उदासी, कछमछी देखि पड़ैछ ।)

नेताजी : (पुरुष-१ सँ) खेलवाला ।

पुरुष-१ : गुलभंटी, समट अपन भाभट ।

गुलभंटी : ई सभ जन्तर किनताह ने ।

पुरुष-१ : से त किनताह ।

गुलभंटी : तखन ई हमरा सभक शुभ चिन्तक भेलाह ।

पुरुष-१ : हँ, से त भेलाहे ।

गुलभंटी : त, जाइत, जाइत एकटा आर सलाह छनि ।

नतोजी : (लगभग चिचिआकऽ) खेलवाला । कतेक पाइ भेलह । बन्न कर ई खेल जा जल्दी जा ।

पुरुष : (किछु जोड़ैत) एक सय पचास टाका । (नेताजी जेबीसँ पर्स निकालि पाई गन' लगैछ ।)

गुलभंटी : उस्ताद ।

पुरुष-१ : आब भ गेलै, चुप्प ।

गुलभंटी : एकटा छोटके सल्लाह हिनके फायदा करतनि ।

पुरुष-१ : ई पुनः नहि चाहैत छथि ।

गुलभंटी : तैयो हिनका जान वँचतनि ।

पुरुष-१ : तेहन बात छै ।

गुलभंटी : हँ, उस्ताद । किछु शिक्षकमे फयल भेल उम्मेदवार हिनका खोजि रहल छनि ।

नेताजी पाइ गनब छोडि साकांक्ष भऽ जाइछ ।)

पुरुष-१ : किएक ?

गुलभंटी : प्रत्येकसँ बीस हजार टाका उठालेने छथिन पासकरा देबौ कहि कऽ । सभ पाइ अपने लग राखि लेलनि आ आयोगवला अपना आदमी पास कऽ लेलक । हिनकर एक्कोटा नहि पड़लनि ।

पुरुष-१ : तखन ?

गुलभंटी : ओ सभ जुताक माला लऽ कऽ हिनका खोजिते एम्हरे आबि रहल अछि, ई जतेक जल्दी भ' सकैक भागि जाथु ।

(नेताजीक होश उडल जाइ छनि ।)

गुलभंटी : आ उस्ताद ?

पुरुष-१ : भ' गेलै नेताजीके फेर भागहु पड़तनि । बन्न कर ई बकवास । **(नेताजी जल्दी-जल्दी पाई गन' लगैछ ।)**

गुलभंटी : किछु आर कह' चाहैछी ।

नेताजी : (उड़ल-उड़ल सन) खेलवाला, आब बन्न करु ।

पुरुष-१ : गुलभंटी, नेताजी पाई गनि लेने छथि । एक्के ठाम एक मुष्ठ । किए बक-बक करब दश ठाम । चल ।

गुलभंटी : मुदा, उस्ताद जाधरि हमरा छातीपर जन्तर रहत, हमरा मुहसँ साँचबात सभ निकलिते रहत, ई बात बुझल नहि अछि ?

पूरुष-१ : (जेना किछु मोन पडैछ) जा, तएँ ई बजैत छल बक-बक । हे लिअ, जन्तर उठालैत छी ।

गुलभंटी : ठहरू उस्ताद ।

पुरुष-१ : कैला रे ? आब त खेल खतम छै ।

गुलभंटी : नै उस्ताद । खेल त आब शुरू होत ।

पुरुष-१ : जल्दी बाज । की कह' चाहैछें ?

गुलभंटी : नेताजी के बजबियौ ।

पुरुष-१ : की भेलैन से ?

गुलभंटी : देखियौ दक्षिण दिस जुत्ता के माला लऽकऽ....।

पुरुष-१ : (बीचमे लोकैत) भागू नेता जी । (आ स्वयं जन्तर उठा गुलभंटीक संग एक दिस पड़ा जाइ छै ।)

□□□

नेताजी आबि रहल छथि

खाली मंचक एकटा कोनपर बैसल सूत्रधार । अन्हार मंचपर मात्र सूत्रधार पर प्रकाशक गोला पड़ैत । हाथ, मुंहक भावसं एना बुझाइत जेना ककरो इन्तजार होइक । घड़ीपर बेर-बेर नजरि जाइत फेर चकुआ कऽ तकैत। ई क्रम कनेककाल चलैत छैक । फेर ओ ऊठि जाइत अछि आ टहल लगैछ। प्रकाशक घेरा ओकरा आकृतिक संग मंचपर चलैत रहैछ ।

सुत्रधार : (ठमकि) हद भ' गेल । ओना क' कहि देने रहिऐ जे आइ त कोनो हालतिमे नाटक करही पडत । मुदा ओ छथि जे एखन धरि अभरि नहि रहलए ।

कनेककाल तहिना व्यग्र भ' टहलैत आ एकदिश गौरसँ देखैत बूझि पडैत अछि । फेर माथ हिला टहल लगैछ ।

सूत्रधार : (किछु रोषसं) ए, कत्त रहलहु । लगैए आइ हमरा दर्शक सभसँ जुता खुआएब । लोक बैसल छथि आ अपने पार । मनमे विचारो त चाही....।

तखने नटीक प्रवेश । प्रकाशक घेरा नटीपर सेहो पड़' लगैछ ।

नटी : (अन्तिम बात पर जोर दैत) कथीक विचार ।

सूत्रधार : (रोषसं) इएह अएलखिन्ह मलिकाइन विचार जान' ।

नटी : आहिरेबा, एतेक पिताएल किए छी ?

सूत्रधार : नहि, हमरा त पितएबाक नहि चाही । कही त हम एत्त नाच' लागी ।

नटी : लगैए सएह करपडत ।

सूत्रधार : की माने ?

नटी : नाटक प्रायः नहि हयत ।

सूत्रधार : (साश्चर्य) अएँ !

नटी : हँ, नाटक नहि हयत ।

सूत्रधार : किए ?

नटी : कलाकार सभ नहि मानै छथि ।

सूत्रधार : किए नै मानै छथि ?

नटी : कहब छनि जे एतेक मेहनतसँ नाटक करैछी, मुदा मोजर नहि देल जाइए ।

सूत्रधार : मोजर ? से कोना ने दैत छिएनि । रिहलसलक हेतु घरे-घरे बौआ कऽ बजविते छियनि । घड़ी घड़ी चाह-पान भइए जाइ छनि । तखन मोजर.......?

नटी : से त ठीक छै, मुदा हुनका सभके कथन छनि, जे ई छुछुआन सन लगैए ।

सूत्रधार : से कोना ?

नटी : आब जखन सभ केओ अपन अपन अधिकार आ सुविधाक मांग कऽ रहल हो तखन कलाकार किए ने करथि ।

सूत्रधार : मुदा, कलाकार कोनो हमर कर्मचारी नहि ने छथि । ओ सभ त मित्र छथि ।

नटी : कहांदन एहिना मित्र कहि खूब ठठैत छियनि, से आब फरिछाव' चाहै छथि ।

सूत्रधार : (लगभग चिचिआइत) खाक सोच' पडत । हुनको सभके एखने हड़ताल करबाक छलनि ।

नटी : कहै छलाह तुकपर मांग रखने पूरा होइछै ।

सूत्रधार : चुप्प ! तुकपर मांग रखने !! एखन दर्शक सभ उठि उठिकऽ जं जुतिआव' लागए त कोन मांग, के पूरा करतै ?

नटी : अहाँ त ओहिना खिसिआ जाइछी । (चुप्पी)

सूत्रधार : जं कि ओ सभ नहिए अएलाह त आब किछु सोच' तऽ पड़त ।

नटी : एतेक जल्दी की भऽ सकैछ ।

सूत्रधार : भ' किएने सकै छै ।

नटी : कोना ?

सूत्रधार : विषय सोचू । नयां नाटक मंचित क' देब ।

नटी : खेलत के ?

सूत्रधार : हम आ अहां !

नटी : हम अहां ! दुत् आब की खेलब हमसभ !

सूत्रधार : से किए ? जरूरी पड़ने सभ किछु कर' पडैछै ।

नटी : हमरा बूते नै होएत ।

सूत्रधार : बेसी छीडहिल्ला नहि खेलाउ । लगैए अहुँ मौका देखने भाओ बढा रहल छी ।

नटी : अहुं कीदन कहादन बाज' लगैछी । आब धीआ-पुताक आगां..... ।

सूत्रधार : त की एसगरिमे लोक नाटक खेलैए ।

(चुप्पी)

नटी : लगैए अहां नै मानव । त ठीक छै । तैयारी करू !

सूत्रधार : (किछु सोचैत) मुदा, तैयारी कोना करू ? ने कथानक अछि आ ने.....।

नटी : से त अही कहैछी । छोडू आई ।

सूत्रधार : (दर्शक दिशि देखैत) अहा त महिला छी, भऽ सकैए छोडियो दिए, मुदा हमर दशा !

नटी : (बीचमे लोकैत) तखन की करब, ने रिहलसल आने पार्ट आदि ।

सूत्रधार : तकर चिन्ता अहाँ नै ने करु । के रिहलसल कऽ कऽ पार्ट खेलाइए ।

नटी : फेर जे कथानक हयत तकर पार्टो याद हएबाक चाही ने ।

सूत्रधार : हद भ' गेल । औजी पार्ट याद कऽकऽ के खेलाइत अछि । देखै नै छिऐ, प्रोम्पटर सेहो एकटा कलाकार भऽ गेल अछि ।

नटी : की माने ?

सूत्रधार : माने पाछ्रासँ प्रौम्ट कनेक ठीक स कहै त नाटक खेपि लेबै की ?

नटी : (सभ किछु अबधारैत) जे अहां करी ।

(चुप्पी)

सूत्रधार : सभसं भारी प्रश्न अछि कथानक की हुअए ।

सोचबाक मुद्रामे एक-दू बेर टहलि मोढापर बैसि जाइछ । नटी सेहो दोसर मोढापर बैसि जाइत अछि । कनेक कालक बाद पार्श्वमे नारा लगबैत जुलुशक स्वर सुनि पडैछ-'महगी नियन्त्रण करु', 'अजय चोर गद्दी-छोड', 'प्रजातंत्र जिन्दावाद' । सूत्रधार कनेककाल अकानैत अछि फेर जेना किछु फुरागेल होइक चौंकि उठैत अछि ।

सूत्रधार : हे, सुनैछी !

नटी : हँ, हँ, बाजू !

सूत्रधार : (प्रसन्न होइत) विषय भेटि गेल । जल्दी करु ।

नटी : कोन विषय ?

सूत्रधार : देखलिऐ नहि । एखने जुलुश बहार भेलए ।

नटी : सुनलिऐ त । महंगीक विरुद्धमे छल ।

सूत्रधार : अहाके नै लगैए जे ई विषय कतेक टटका छै ।

नटी : (मोनेमोन तोलैत सन) लगैत अछि ।

सूत्रधार : तखन देरी कथीक । एखन डेढ घंटा देरी अछि निर्धारित समयमे । एहि बीच सम्वाद तैयार भऽ सकैछ ।

नटी : मुदा, एकटा बात कहूं ।

सूत्रधार : (अगुताइत) जे कहवाक हो जल्दी कहू ।

नटी : महगी कोनो तलगर विषय नहि भेल ।

सूत्रधार : (साश्चर्य) अएँ ? महगी कोनो तलगर विषय नै ! (मोढापरसं उठि जाइत अछि)

नटी : (उठैत) एहन नै जे लोकके झकझोड़ि दैक ।

सूत्रधार : हद भऽ गेल । औजी, लोकके जेबीमे पाइ छै मुदा खएबाक लेल पेटमे विलाइ डंड बैसकी करै छै ।

नटी : से त छै ।

सूत्रधार : कोनो समानक मोल आइ की छै काल्हि की भऽ जाइछै । चाउर, दालि, पिआउज, तीमन तरकारी, छै कोनो नियंत्रण ?

नटी : हम त बजारो जायब छोडि देनेछी ।

सूत्रधार : तखन अहां कोना कहै छी जे महंगी कोनो तेहन विषय नै भेलै ?

नटी : नाटकीयताक कमी लगै छै ।

सूत्रधार : लोक त्राहिमाम् करैए आ अहांके नाटकीयता सूझि पडैए । औ जी, मनेके छुअबला कोनो विषय नाटकमे चलतै ।

नटी : मुदा, महगी एतेक व्यापक भऽ गेल अछि । जे आब ई विषय लोक अङ्गेजि लेने अछि ।

सूत्रधार : मुदा, एहि देशमे कोनो सरकार छै कि नै ?

नटी : खूब छै, निर्वाचित सरकार छै ।

सूत्रधार : तखन हम कलाकार सभक की कर्तव्य भऽ जाइत अछि, समाजक समस्यापर सरकारक ध्यान खिंची कि नहि ?

नटी : से एहिसं पूर्वो बहुत ध्यान खिचल गेल अछि ।

सूत्रधार : त की चैन सँ सूति रही ?

नटी : नहि, सुतबाक कोनो अर्थ नहि हयत ।

सूत्रधार : जं नहि सूती, त किछु त करही पड़त ।

नटी : (मुहलटकबैत) विषय इहो बेजाय नै छल ।

सुत्रधार फेर सँ मुंहलटका बैस रहैए । तखने फेर उएह जुलुश घुमै छै - 'महगी नियन्त्रण करु, अजय चोर-गद्दी छोड़ ! प्रजातन्त्र जिन्दावाद !

सूत्रधार : (नटी स) हे, सुनैछी। एनाकरू, एकटा जुलुशबलाके घीचि कऽ आनु त।

नटी : से किए ?

सूत्रधार : लाउने पहिने, बात बुझबै ने।

नटी : ठीक छै। हम बजा अनैछी।

नटी पार्श्वमे चल जाइछ। कनेक कालक बाद एकटा पुरुषके बजौने अबैछ। पुरुष -१ क हालति जर्जर छै। देहपर फाटल कमीज, मैल पेउन लागल धोती, रुक्खकेस, हाथमे एकटा प्लेकार्ड 'महगी नियन्त्रण करू' लिखल, मंचपर पूर्ण प्रकाश पसरि जाइछ।

सूत्रधार : (पुरुष-१सँ) भाई साहेब, ई जुशलु कथीक छलै ?

पुरुष-१ : महंगीक विरोधमे छलै।

सूत्रधार : एहि जुलुशसं महँगीमे कमी भऽ जायत ?

पूरष-१ : प्रजातंत्र आबि गेलै से पता नै अछि ?

सूत्रधार : पता त अछि। की प्रजातन्त्र अएने महगी कम भऽ जाइछै ?

पुरुष-१ : नै, जुलुश निकालबाक स्वतन्त्रता होईछै।

सूत्रधार : माने ई जुलुश निकालबाक एक्केटा प्रयोजन प्रजातंत्रक उपभोग, आकि नै ?

पुरुष-१ : अहां जे बुझी। हम सभ त नारा लगबैत जुलुश निकालैत रहब।

सूत्रधार : लगैए एहि सं भाओ कम हयतै ?

पुरुष-१ : (झौंक क') औजी, हम कहैछी किने, ई प्रजातंत्रक उपभोग छै !

सूत्रधार कनेककाल गुम्म भ' जाइत अछि। पुरुष-१ क उपर नीचां खूब गौरसं तकैत छै।

सूत्रधार : भाई साहेब, एकटा बात कहब ?

पुरुष-१ : जल्दी बाजू, हमरा जुलुशमे शामिल होएबाक अछि।

सूत्रधार : देहक ई हालति किए कएने छी ?

पुरुष-१ : ई हालति हम कैने छी। गजब करैछी अहूँ।

सूत्रधार : लगैए पिता गेलहुँ। हमर पुछबाक माने ई नहि छल। एना हालति भेल किए ?

पुरुष-१ : अहींक कारण !

सूत्रधार : (चौकैत) हमरे कारण। (क्षणिक विराम) नहि, हमरा त नहि लगैए जे हम किछुयो अहांके कयने होइ।

पुरुष-१ : ई सरकार अहींक अछि ने ?

सूत्रधार : (अकचकाइत) नहि !

पुरुष-१ : तखन, हम एहि हालतिमे जुलुशमे चिचिआ रहल छी आ अहाँ एत्त बैसल बात चिबबैछी। से हम कोना बुझू !

सूत्रधार : ओह, त से गप छै। (क्षणिक विराम) सांच बात त ई अछि जे हम कलाकार छी। आ नाटक देखएबाक लेल समस्या ताकि रहल छी।

पुरुष-१ : समस्या ? औजी अहांक आंखि केहन अछि। की ई समस्या नहि थिक ? पढल-लिखल छी ने ?

सूत्रधार : छी त किछु।

पुरुष-१ : (प्लेकार्ड दिश देखबैत) पढू की छै लिखल।

सूत्रधार : (पढैत) म.ह.गी.नि.य.त्र.ण.क.....रू !

पुरुष-१ : आबो किछ बुझलिऐ किने ?

सूत्रधार : (नटी दिश ताकि) बात त ठीक बुझाइए। आबो अहाँक मन बदलल अछि किने।

नटी : (पुरुष-१ दिश गौरसँ तकैत) हँ, समस्या इहो गंभीर अछि।

तखने पाशर्वमे फेर जुलुश, नाराक स्वर भ्रष्टाचार बन्द करू, अजय.....चोर गद्दी छोड, प्रजातन्त्र जिन्दाबाद ! सूत्रधारक ध्यान ओम्हरे जाइत सन देखि पडैछ।

ओ मोढापार बैसैत अछि। फेर उठि नटीके संकेत कऽ अपना दिस बजबैत अछि।

सूत्रधार : विषय त भ्रष्टाचार बेजाय नहि अछि।

नटी : हम आब किछु ने कहब।

सूत्रधार : तखन हम किछ ने कऽ सकब।

नटी : इएह अछि पुरुष सभमे। जखन काज लेबाक रहत त मीठ मीठ बात कऽ स्त्रीके ठकि लेत। काज सुतरि गेल कि.... ।

सूत्रधार : मुदा, अहाँ तेहन जनानी नहि छी।

नटी : फेर चापलूसी ?

सूत्रधार : ठीके कहैछी (वाम हाथ पीठपर धऽ लग खिंचैत) अहाँ बिना हम अपूर्ण छी।

नटी : बुझलहुं। किछु दर्शकोक खिआल करियौ।

सूत्रधार : (जेना केओ विठुआ काटि लेने होइक) हँ, हँ, हम तकरे इन्तजाममे छीने। (चुप्पी)

नटी : से जल्दी करियौन !

सूत्रधार : सएह त पुछलहुं, की भ्रष्टाचारक समस्या ज्वलन्त नहि छैक ?

नटी : जरूर छै। कोनो अड्डा खाना होइ आब देखार घूस लैत छैक। जं किछु कहौ त हडताल पट्टी, तालाबन्दी, कलम बन्द नहि जानि की की।

सूत्रधार : (पसन्न होइत) कहलहुँ ने। अहाँ असल बुधिआरि छी। बात पकड़ि धरि तुरन्त लैत छिऐ।

नटी : त की करबै ?

सूत्रधार : हमरा त विचार अछि जे भ्रष्टाचारेपर भऽ चलओ आजुक नाटक।

नटी : मुदा, इहो आब ततेक ने पसरि गेल छै जे दर्शकके ओतेक मन नहि लगतनि।

सूत्रधार : (कनेक खौंझा क') फेर अहाँ तिरिआ चरित्तर देखब' लगालहुँ।

नटी : हँ, आब हम वकलेल भ गेलहु ने !

सूत्रधार : (किछु सोचि) नहि, से कहबाक मतलब नहि। आगांमे एतेक सुन्दर विषय आयल अछि आ अहाँ छोडि देब कहै छी।

नटी : छोड कहाँ कहैछी। कहलहुँ जे दर्शकके मोन नहि लगतनि।

सूत्रधार : तखन एहिमे भीतर जायल जाए। (क्षणिक विराम) हे, जाउ, जुलुश घुमल अबैए, एक गोटाके पकड़ने आउ।

नटी : हँ, ई भऽ सकैए। किछु ओकरोसँ बुझिए ली।

नटी जाइत अछि आ एकगोटे कृषक सन व्यक्तिके बांहि धयने अबैत अछि। कृषकक हाथमे प्लेकार्ड छै 'भ्रष्टाचार बन्द करू'।

सूत्रधार : (स्वागत करैत) आउ, भाई साहेब, आउ !

कृषक अबूझसन अनुहार लेने कखनो सूत्रधारके, कखनो नटीके देखैत अछि।

कृषक : की बात छै ?

सूत्रधार : भाइ साहेब, ई कथीक जुलुश छै ?

कृषक : आँखि दुरुस्त अछि ने !

सूत्रधार : कनेक नरमेसँ बाजी त उत्तम।

कृषक : हमरा जुलुशो छोड़ा देलहुँ, आ कहैछी नरमीसँ बाजू।

सूत्रधार : हम पुछलहुँ ई जुलुश कथीक छलै ?

कृषक : भ्रष्टाचारक विरोधमे।

सूत्रधार : जुलुश बहार कैलासँ भ्रष्टाचार बन्न भ' जायत ?

कृषक : (रुक्ख सँ) ई प्रजातन्त्र छै से मालुम त अछि ने ?

सूत्रधार : खूब नीक जकां बूझल अछि।

कृषक : प्रजातन्त्रमे एहिना जुलुश होइछै।

सूत्रधार : मुदा जकरा हेतु होइ छै से कम होइ छै कि नै ?

कृषक : ताहि लेल थोड़े जुलशु होइछै।

सूत्रधार : आहिरेबा एतेक रौद-बसातमे भ्रष्टाचार बन्द करबाक हेतु अपस्याँत छी - कथी लेल ?

कृषक : अहाँ त शुद्ध गमार बुझाइ छी। प्रजातन्त्रकेँ उपभोग करबाक लेल जुलुश।

सूत्रधार : तखन भ्रष्टाचार कम करब मात्र बहाना भेल ?

कृषक : के कहैत अछि से।

सूत्रधार : अहींक गप सं बुझायल।

कृषक : लाल बुझक्कड छी अहाँ। चीत खातिर नहि भेल वस्तुक विरोधे प्रजातन्त्र छैने !

सूत्रधार : ओह ! तखन ?

कृषक : भ्रष्टाचार त एकटा बड भारी समस्या छैक। जहाँ जाउ ओतहि भ्रष्टाचार।

सूत्रधार : से त छैक....।

कृषक : (बात लोकैत) एकसँ एक। औजी दुखे गरजे खेत बेचलहुं। रजिष्ट्री कर' गेलहु त फांट फांट घुस देब' पडल।

सूत्रधार : बस।

कृषक : वंशजक नातासँ नागरिकता लेब गेलहुँ, फोटो साट'मे घुस देब' पडल।

सूत्रधार : आर किछु ?

कृषक : विनासेती भाइके टांग हाथ तोडि देने रहे, थाना गेलहुं त बिना पाइ लेने पुलिस घटना स्थलपर नहि आयल।

सूत्रधार : हुँ।

कृषक : कोनो एहन अड्डा नै अछि जत्त काम करएबाकलेल किछु देब' नहि पडैत हो।

सूत्रधार : (किछु सोचैत) समस्या त गंभीर अछि।

कृषक : औजी 'मृत्यु दर्ता करब' काल सेहो सचिव पाइ मंगै छै।

सूत्रधार : हद भ' गेल।

कृषक : एक दिश महंगी, दोसर दिश भ्रष्टाचार। कहू, लोक की करौ।

सूत्रधार : एहनमे जुलशु निकालबास नीक दोसर कोन उपाय छै।

कृषक : (गौरसँ सुत्रधार आ नटीके देखैत) मुदा, अहाँ सभ ई किए पुछै छी ?

सूत्रधार : ओहिना, बात बुझ' चाहै छलहुँ।

कृषक : (सशंकित भऽ) नै लगै छी कोनो सी.आइ.डी. ने होइ।

सूत्रधार : (हडवराकऽ) नै, नै बापरे एहन आरोपनै लगाउ

कृषक : तखन ?

सूत्रधार : हम सभ कलाकार छी - नाटक खेलबाक लेल समस्या तकैत छी।

कृषक : ओह ! (क्षणिक विराम) भ्रचटाचार केहन समस्या लागल ?

सूत्रधार : (नटी दिश तकैत) बड सशक्त ! की ?

नटी : हँ, हमरो ई अपील कैलक अछि।

सूत्रधार : त भऽ चलो एकरे तैयारी ?

नटी : बेजाय कोन ?

कृषक : ठहरू !

सूत्रधार : (अकचका) की भेल ?

कृषक : भ्रष्टाचारसँ सम्बन्धित समस्या बड महीन होइछै।

सूत्रधार : सेत होइछै। मुदा....।

कृषक : (बात लोकैत) तएँ, एहन पात्रक निर्माण करू जे ठीके भ्रष्टाचार निवारण करए।

सूत्रधार : अहाँक मतलब ?

कृषक : साफ मतलब अछि। भ्रष्टाचार मेटाएबालेल जकर नियुक्ति होइ छै ओ तकरोसँ पैघ भ्रष्टाचारी भऽ जाइए।

सूत्रधार : ओह !

कृषक : सरकार मूल्य नियंत्रण करबाक लेल छापामारी करै छै ।

सूत्रधार : सुनैत छिऐ ।

कृषक : मुदा, ओत्तहु घोटाला होइछै । लेनदेन होइछै । जे जाइए सएह बदनाम भऽ जाइए ।

सूत्रधार : से त छै, मुदा काज त रोकल नहि जा सकैछ ।

कृषक : तएँ ने पात्रक चुनाव कनेक सावधानीसँ करब ।

सूत्रधार : सुझाव उत्तम अछि । (क्षणिक विराम) आब हमरा सभके तैयार भऽ जएबाक चाही ।

नटी : हौ चली आब ।

तखने पार्श्वमे फेर जुलुश आ नाराक स्वर सुनि पडैछ - 'स्थानीय प्रशासन मुर्दावाद, अजय चोर-गद्दी छोड़ । नट-नटी दुनू साकांक्ष भऽ जाइछ । सूत्रधार किछु सोचैछ आ फेर कृषकके डेन पकडि पुरुष-१ क' बगलमे जा ठाढ क दैछ । कृषक फ्रीज भऽ जाइछ । सूत्रधार व्यग्रतासँ टहल लगैछ । मोढापर बैसि जाएछ । फेर उठि जाइत अछि ।

सूत्रधार : (नटीसँ) सुनैछी ?

नटी : हँ, नीक जकां ।

सूत्रधार : प्रशासनके गारि पढल जा रहल छै। माने स्थिति आरो जटील छै।

नटी : हमरो लगैए । जं सुरक्षे देब'बलाक विरोध होइ त बात बेसी खराब मानल जएबाक चाही ।

सूत्रधार : (किछु सोचैत) भ्रष्टाचारो कोनो कमजोर विषय त नहि अछि, मुदा जं अगाँमे आबिए गेल त एकरो एक बेर देखिए ली ।

नटी : मुदा ई क्रम कहिआ धरि चलत ?

सूत्रधार : जाधरि उपयुक्त समस्या नहि भेटत ताधरि त चलाबही पडत ।

नटी : समयपर विचार अछि कि नहि ?

सूत्रधार : (घड़ी देखैत) हँ, आब आधा घंटा मात्र शुरू कर' मे बाँकी अछि ।

नटी : तखन सोचि लिअ, फेर बेइज्जत ने भऽ जाइ ।

सूत्रधार : कनेक जल्दी लाउने, एकगोटे । बात बुझि लैत छिऐ । जं एतेक त किछु आर ।

नटी : जे आज्ञा हजुरक ! (मुस्की)

नटी जाइत अछि । सूत्रधार ओम्हरे गंभीर मुद्रामे तकैत अछि । नटीक संग एकटा पुरुष-२ क प्रवेश । हाथमे शांति सुरक्षा कायम हो' क प्लेकार्ड । एकटा आम जनता सन लोक । ओकरा देखैत सूत्रधारक आँखि चमकि जाइछ।

सूत्रधार : आउ, आउ, भाई जी !

पुरुष-२ : (किछु झझकैत) ऐ, हमरा एत्त किए बजाओल गेल अछि ।

सूत्रधार : भाइजी, कोनो चिन्ता नै । हम किछु जान' चाहै छी ।

पुरुष-२ : से किए ?

सूत्रधार : ओहिना जिज्ञाशा अछि ।

पुरुष-२ : (सशंकित भऽ) पुछू ।

सूत्रधार : ई जुलुश कथीक रहैक ?

पूरुष-२ : शांति-सुरक्षाक हेतु । स्थानीय प्रशासनक विरोधमे ।

सूत्रधार : जुलुशसँ लोक सुरक्षित भऽ जायत ?

पुरुष-२ : (आँखि तरेरिकऽ) त की लोक अपन प्रजातांत्रिक अधिकार छोडि देत ?

सूत्रधार : नहि, से त हमर मतलब नहि छल ।

पूरुष-२ : त की छल ?

सूत्रधार : एहि जुलुशसँ प्रशासनक नीन टूटतै ?

पुरुष-२ : ई ओकर काज छै। जं अधिकार अछि त जुलुश बहराएबे करतै ।

सूत्रधार : हं से त छैहे । (क्षणिक विराम) मुदा, सरकारक प्राथमिक आवश्यकता त शांतिए सुरक्षा छै फेर....।

पूरुष-२ : अहाँ बड निश्चिन्त लगै छी। गाम-देहातमे हाहाकार मचल छै। पता अछि।

सूत्रधार : की भेलै से ?

पूरुष-२ : की भेलैए। (जेबीसं एकटा कागज बहार करैत) देखै छिऐ ई की अछि।

सूत्रधार : (गौरसं तकैत) एकटा कागज जकां अछि।

पूरुष-२ : ई निवेदन छिऐ। एक माससँ जेबीमे लऽ कऽ वौआ रहल छी। केओ सुन'बला नहि।

सूत्रधार : की भेलए ?

पूरुष-२ : की कहू ! एक मास पूर्व हमर सब श्रीसम्पत्ती गोट-गोट क' लूटि लेलक।

सूत्रधार : (साश्चर्य) लूटि लेलक ?

पुरुष-२ : हं।

सूत्रधार : के औ ?

पूरुष-२ : एक गोटे रहय त नाम बताउ। हजारो लोक रहै। दिनेमे घरक एक-एक दाना ल' गेल। खाएलेल आफत भऽ गेल।

सूत्रधार : हे भगवान ! बड़ अन्याय भेल। कोना भेल ?

पूरुष-२ : बात मामूली रहै। एक दिन पूर्व हमर आदमी ओइ पक्षके दू-तीन आदमीके दू चारि सटका मारि देने रहै, कहा-कहीमे बस !

सूत्रधार : एतबे टा बात रहै।

पूरुष-२ : हँ यौ। आ घर-दुआर त लूटबे कैलक। हमर १०-१५ आदमीके होस्पीटल ओगरा देने अछि।

सूत्रधार : तखन ?

पूरुष-२ : सएह निवेदन ल' क' बौआ रहल छी। स्थानीय प्रशासन ल' नहि रहल अछि।

सूत्रधार : तखन की करबै ?

पुरुष-२ : करबै की ? एहिना ई निवेदन लोकके देखबैत रहवै।

सूत्रधार : बस ?

पुरुष-२ : बर बेसी करबै त एहिना जुलुशमे शामेल भ' जिन्दावाद-मूर्दावाद लगा देबै।

सूत्रधार : मुदा, गाम-गाम पसरल अशांति-असुरक्षा हटि त नहि सकत ?

पुरुष-२ : ई त सरकारक काज छै ने। अपन तंत्रके शांति सुरक्षामे लगाबओ।

सूत्रधार : बात त उचित थिक। (किछु सोचैत) लगैए जन-धनक असुरक्षा बड पैघ समस्या थिक। (नटीसं) की सोचैछी ?

नटी : समाजमे व्याप्त ई भय त्रास कोनो कमजोर समस्या नहि छैक।

सूत्रधार : त किएक ने एहीपर हम सभ विचार करी।

नटी : बेजाए त नहि। नीक प्रभाव पड़ि सकैत अछि।

पुरुष : त हम आब चली ?

सूत्रधार किछु कह' चाहैत अछि कि तखने फेर पृष्टभूमिमे जुलुश आ नाराक स्वर 'बेरोजगारी दूर कर', अजय चोर गद्दी छोड', प्रजातन्त्र जिन्दाबाद' सुनि पड़ैछ। सूत्रधार एकबेर फेर किकर्तव्यविमूढ भ' किछु गुनधुन कर' लगैछ। एक नजरि नटी दिस देखैछ, फेर पुरुष-२ के बाँहि पकड़ि कृषकक बगलमे ठाढ क' दैछ। पुरुष-२ फीज भ' जाइछ।

सूत्रधार : लगैए फेर कोनो जुलुश बाहर भेलैए।

नटी : (अकानैत) ई बेसी ताओबला बुझाइए।

सूत्रधार : की हर्ज, एकरो गमिएली।

नटी : मुदा, समय कहां अछि ? शुरू हयबासं १०-१५ मिनट बेसी भऽ गेल हयत।

सूत्रधार : लाउ ने, देखि लैछी। जं एतेक अबेर भइए गेलै त दर्शक सभसं क्षमा मांगि लेबनि।

नटी : मात्र क्षमा मंगने नहि नै हयत।

सूत्रधार : तं की ?

नटी : जाहिले बजौने छियनि से त पूर्ति करही पडत ।

सूत्रधार : तएँ ने जल्द जाए कहै छी । लाउने ककरो ओहि महक ।

नटी : अच्छा, हम जाईछी ।

सूत्रधार फेर व्यग्र भ' टहल लगैछ। तुरन्ते नटी एक्टा नयां फैशनक युवकके लेने प्रवेश करैछ। युवकक हाथमे राखल प्लेकार्ड 'बेरोजगारी दूर करू' लिखल छै।

युवक : (प्रवेश करिते) अहा-हा, हमरा अहा कत्त लेने जाइ छी ?

सूत्रधार : भाइजी, हमही कहने छलियनि बजाब' ।

युवक : (गुम्हरि क' तकैत) से अहां बजब'बला के छी ?

सूत्रधार : समस्यामे फँसल एकटा निरिह लोक।

युवक : की माने ?

सूत्रधार : एखन जुलुश अहीं सभक रहय ने ?

युवक : हँ।

सूत्रधार : किएक बहार कैने रही ई जुलुश ?

युवक : की अहाँके आँखि-कान नहि अछि ?

सूत्रधार : अछि, मुदा बात नारासँ ओतेक नहिने बुफाइछै।

युवक : हम सभ बेरोजगार छी। रोजगारीक लेल जुलुश निकालै छी ।

सूत्रधार : अहांके लगैए जुलुश बहार कैलासँ रोजगार भेटि जाएत ?

युवक : ई प्रजातन्त्रक उपलब्धि थिकै ?

सूत्रधार : ई जुलुश अथबा बेरोजगारी ?

युवक : (आँखि तरेरिकऽ) अहाँके मजाक लगैए हमरा सभक अभियान ?

सूत्रधार : नहि, मात्र बात फरिछएबा लेल ई कहलहुं ।

युवक : सरकारके बात पहुँचएबाक लेल आब जुलुसे एक मात्र माध्यम रहि गेलछै।

सूत्रधार : हूँ (क्षणिक विराम) की पढलो-लिखल के रोजगारी नहि भेटै छै ?

युवक : (ठोढपर विद्रूप मुस्की) पढल-लिखल ! औजी हम एम.ए. पास कऽ कऽ अएलहुं मुदा नोकरी भेटि नहि रहल अछि ।

सूत्रधार : एम.ए. पास ?

युवक : वहुतो ओ.सी.जे.टी.ए., शिक्षक, हेल्थ असिस्टेन्ट तालिम कऽ कऽ घुमि रहल छथि। नोकरी नहि छनि ।

सूत्रधार : से किए नहि छनि ?

युवक : ओ मंत्रीक सम्वन्धी नहि छथि ।

सूत्रधार : अच्छा ?

युवक : हुनका लगमे पाइ नहि छनि जे ओ बीचला ककरो घूस दऽ सकताह ।

सूत्रधार : घूस ?

युवक : आ से कोनो कम नहि। आधा कमाइ !

सूत्रधार : तखन ?

युवक : एहिना फुटपाथपर बौअएबापर वाध्य छथि, ने सोर्स आने फोर्स ।

सूत्रधार : भ' सकैए कम्पीटिशनमे नहि टिकैत होइ ।

युवक : सव गलत वात थिक । लिखितमे पास क मौखिकमे छाटि देल जाइछ ।

सूत्रधार : हूँ (क्षणिक विराम) अहाँ सभ की सोचै छी ?

युवक : नोकरी लेल आबाज उठबैछी । नहि भेटत त एहिना जुलुश बहार कऽ मोनक भरास निकालब ।

सूत्रधार : एहिसँ नोकरी भेटत ?

युवक : त करब की ? हत्या, डकैती, लूटपाट अथवा चरेस स्मैक आदि ड्रग्स खा कऽ प्राण द' दिअ ।

सूत्रधार : (हड़बड़ा कऽ) नहि, नहि एहन वात सोचवो ने करु ।

युवक : (कनेक रुआँसी होइत) त अहीं कहू, हम सब की करू ?

सूत्रधार : प्रश्न बड गंभीर अछि । आइ देशमे जाहि गतिसँ वेरोजगारी बढि रहल छै ओ समस्या गंभीर कयने जाइ छै ।

युवक : घरमे सभक परिवार छै । वाल-बच्चा छै, माय-बाप छै, सभक खर्च-वर्च ! कहु कोना चलतै ?

सूत्रधार : ठीके ।

युवक : (कनेक गंभीर होइत) मुदा, अहाँ सभ हमरा बजौलहु किए ?

सूत्रधार : इएह बुझबालेल जे अहाँके समस्या की अछि ?

युवक : (प्रसन्न होइत) त की अहाँ हमर समस्या समाधान क' सकैछी ?

सूत्रधार : (हड़वड़ा क') नहि, नहि हम त स्वयं समस्यामे पडल छी ।

युवक : अहुंके नोकरी चाही ?

सूत्रधार : से समस्या हमर नहि अछि ।

युवक : (अगुताक') त जल्दी बाजु ने । फेर आम सभामे जाए पडत ।

सूत्रधार : वास्तवमे हम सभ कालाकार छी ।

युवक : (शब्दपर जोड़ देत) कलाकार !

सूत्रधार : हँ ।

युवक : हमरा सभक समस्यासं अहाँके कोन मतलव ?

सूत्रधार : मतलव अछि । (क्षणिक विरामक बाद दर्शक दिश तकैत) हे देखै छी दर्शक लोकनिके ।

युवक : हँ, सभ एम्हरे ताकि रहल छथि ।

सूत्रधार : ताकि कहाँ रहल छथि, गुम्हरि रहल छथि, देखै नै छीयनि, आँखि सँ चिनगी उडि रहल छनि ।

युवक : किनकापर ?

सूत्रधार : हमरे पर ।

युवक : अहाँ पर किएक ?

सूत्रधार : सएह समस्या अछि ।

युवक : जल्दी फरिछाउ ।

सूत्रधार : हम एखन नाटक देखएबाक घोषणा क' चुकल छी । कलाकार सभ ठीक समय पर हडताल क' देलनि ।

युवक : तखन ?

सूत्रधार : तखन भेल जे कोनो टटका समस्या ल' क' हमही सभ कोहुना प्रदर्शन क' दिऐ !

युवक : सएह समस्याक खोजीमे लोकके बजा बजा पुछै छीऐ । कतहु भरिगर समस्या भेटि जाए ।

सूत्रधार : सभसँ भरिगर !

युवक : तखन !

सूत्रधार : हम सभ तैयारी करव । (नटीसँ) हौ, मिलाउ भांज !

नटी : ठीक छै ।

नटी पृष्टभूमिमे जाए चाहैत अछि कि पार्श्वमे फेर जोड़गर हल्ला आ नारा सुनि पडैछ 'प्रतिकियावादी-मूर्दावाद, अजय सरकार - जिन्दावाद, प्रजातन्त्र-जिन्दावाद' ।

सूत्रधार : (नटीके रोकैत) ठहरू ।

नटी : आब फेर की भेल ?

सूत्रधार : सुनै नहि छिऐ ?

नटी : (अकानैत) लगैए फेर कोनो जुलुश अछि ।

सूत्रधार : तएँ ने ठहरु कहलहु । किए ने एकरो.... ।

नटी : (जोर दैत) नहि, आब हद भ' गेल । प्रजातन्त्रमे एहिना नारा-जुलुश होइत छैक । कतेकसँ अहाँ समस्या बुझैत रहब ।

सूत्रधार : तैयो कने भाँज लितहु त मोनमे खटका नहि रहैत ।

नटी : कथीक खटका ?

सूत्रधार : इएह जे, जाहि समस्यापर हम सभ नाटक कयलहुँ ताहूसँ नमहर कहुं छुटि ने गेल होए ।

नटी : (कनेककालक चुप्पीक बाद) त एकटा बात हम कहि दैत छी ।

सूत्रधार : की ?

नटी : एहि बेर जँ ओहि महक ककरो बजएबाक बात हयत त हम नहि जाएब ।

सूत्रधार : लगैए अहुंके प्रजातन्त्रक हवा लागि गेलए ।

नटी : वात त पहिने बुझियौ ।

सूत्रधार : की ?

नटी : आन पुरुषके एनाक ऽ कऽ बजा कऽ आनब हमरा नहि नीक लगैए ।

सूत्रधार : ओह (क्षणिक विराम) तँ एकटा बात करू ।

नटी : की ?

सूत्रधार : (युवक दिश ईशारा करैत) हिनका ताबे बिलमाउ, हमही एहि बेर ककरो गहने अबैछी ।

नटी : हँ, ई बरु भ' सकैए ।

नटी युवकक हाथ पकडि पुरुष-२ क बगलमे ठाढ कऽ दैछ । युवक फ्रीज भ' जाइत अछि । नटी मंचक आगां अपन मोढापर आबि बैसि रहैत अछि। तखने सूत्रधारक सँग एकटा खद्धरक ठेहुनसँ निचां धरिक कुर्ता आ चुस्त पायजामा पहिरने पुरुष-३क प्रवेश । नटी ओकरा सभके देखित हड़बड़ा कऽ उठि जाइत अछि ।

सूत्रधार : श्रीमान् भ' गेलै, एत्तहि धरि (मोढा दिश ईशारा करैत) बैसल आओ ।

पूरुष-३ : (दुनूके गंभीरतापूर्वक देखैत) हमरा एत्त बजएबाक कारण ? (बैसैछ)

सूत्रधार : अन्यथा नहि ली । कनेक जुलुशक सन्दर्भमे.....।

पुरुष-३ : ओह, अहाँ सभ पत्रकार छी ?

सूत्रधार : जी नहि, एकटा समस्यामे ओझरायल जिज्ञासु मात्र ।

पुरुष-३ : कोन समस्या ?

सूत्रधार : ई जुलुश कथीक रहै ?

पुरुष-३ : ई सरकारी जुलुश छलै ।

सूत्रधार : (साश्चर्य) अएँ, सरकारो जुलुश निकालैत छैक ?

पुरुष-३ : त की सरकारक सँग समस्या नहि होइत छैक ?

सूत्रधार : केहन समस्या ?

पुरुष-३ : विपक्षी सभक विरोधक समस्या, कर्मचारी हडतालक समस्या, शांति सुरक्षा भंगक समस्या....।

सूत्रधार : (माथा डोलबैत) बुझाइए सरकारो संग खुबे समस्या सभ छै ।

पुरुष-३ : लोक बुझै नहि छै । आ विरोध कर' लगैछ ।

सूत्रधार : आ ओ सभ कहै छै सरकारे ने बुझै छै ।

पुरुष-३ : (उठैत) झूठ, सभ झूठ थीक । ओ सभ आनक ईशारामे चलैए ।

सूत्रधार : (सँगे उठैत) तखन ई जुलुश, नारा सभ झूठ थीक, आनक ईशारामे होइछ ?

पुरुष-३ : त की एहुमे सन्देह रहि गेलैए ? औजी सरकारके कमजोर करबाक सभक प्रयास थिक ।

सूत्रधार : ककरा सभक ई प्रयास भ' सकैछ ?

पुरुष-३ : ई बात तँ साफ भ' गेल अछि, प्रतिगामी तत्वक ईशारामे ई सभ भ' रहल अछि । सभ प्रतिक्रियावादी सभ अछि ।

सूत्रधार : मुदा, प्रजातन्त्रमे हक भोग मांगबाक अधिकार त सभके छैक ।

पुरुष-३ : पहिने सरकार अपन जड़ि मजगूत करत तखन ने आनके किछु देतैक।

सूत्रधार : तैयो महगी, भ्रष्टाचार, असुरक्षा, बेरोजगारी के देखत ?

पुरुष-३ : ककरा पलखति छै जे ई सभ देखैत रहओ । एखन अपनो गर नहि बैसल अछि ।

सूत्रधार : (साश्चर्य) की माने ?

पुरुष-३ : औजी, बात साफ छै । हम सभ एकटा अदना कार्यकर्ता छी । वर्षो संघर्ष कयलहुँ त ई समय आयल अछि । पहिने अपनो लेल किछु त सोच' पडत ।

सूत्रधार : ओह (क्षणिक विराम) अपने......?

पुरुष-३ : हँ, हम क्षेत्र नं.... ।

सूत्रधार : (वात कटैत संगहि दुनू हाथ जोडैत) नमस्कार ।

नटी सेहो हाथजोड़ि नमस्कार करैत अछि ।

पुरुष-३ : हँ, हँ ठीक छै । हमरा संगमे फालतु समय नहि अछि । रंगभूमिमे विशाल जनताक समूह प्रतीक्षामे हयत ।

सूत्रधार : उचिते हयत ने ।

पुरुष-३ : मुदा, अहाँ सभ के छी ?

सूत्रधार : मूर्ख ?

पुरुष-३ : (साश्चर्य) मूर्ख, ई कोनो परिचय नहि भेलै ?

सूत्रधार : साँच त इएह अछि, हमरा सभक कोनो परिचय नहि होइछ ।

पुरुष-३ : की माने ?

सूत्रधार : जी श्रीमान् । पाँच सालमे एक्केबेर हमरा चिन्हल जाइत अछि ।

पुरुष-३ : (अगुताकऽ) साफ बताउ ?

सूत्रधार : हम सभ जनता छी ।

पुरुष-३ : ईहो कोनो स्पष्ट परिचय नहि भेलै ।

सूत्रधार : वास्तवमे हम सभ कलाकार छी ।

पुरुष-३ : अच्छा ! कोन काम अछि बाजु । ककरो बदली कराबके अछि, अथवा नियुक्ति । चाहे 'लाइसेन्सक जोगाड़ भिड़ाब' के अछि, की कोनो ठेका पट्टाक........ ।

सूत्रधार : (साश्चर्य) जी...... ।

पुरुष-३ : निधोष कहु । सभक हिसाब फूट-फूटछै ।

सूत्रधार : जी हमरा सभके कोनो काज नहि करएबाक अछि ।

पुरुष-३ : (बीगडि कऽ) तखन एतेक समय किए बरबाद कऽ रहल छी ?

सूत्रधार : हम सभ नाटक खेलएबाक नेआरमे छी । मुदा..... ।

पुरुष-३ : (बीचमे बातके कटैत) त हम की कऽ सकैछी ? हमरा नाटक नहि अबैए ।

सूत्रधार : कोनो भरिगर समस्या चाही हमरा सभके ।

पुरुष-३ : ई त कोनो विभाग वा मंत्रालयमे नहि भेटैत अछि ?

सूत्रधार : जी नहि, ई त अपने..... ।

पुरुष-३ : (चौंकि) हम, की हम भरिगर समस्या लगैछी ?

सूत्रधार : से हमर मतलब नहि अछि । अपने चाही त तुरत भेटि सकैत अछि ।

पुरुष-३ : (स्टूलपरसँ उठैत) नहि, हमराबुते समस्या ताकल नहि हयत । हँ, कही त ककरो थुना सकैछी, ककरो बाहर कऽ सकैछी ककरो फोड़ि सकैछी त ककरो मिला सकैछी ।

सूत्रधार : जी नहि, से सब किछु ने चाही ।

पुरुष-३ : अच्छा, त हम चलैछी । लोक अगुताइत हयत । हँ, संभव भेल त घुमब एही बाटे ।

सूत्रधार : ठीक छै, नहि एखन त पाँचो वर्षपर एकबेर दर्शन अवश्य होइत रहय...... ।

पुरुष-३ के झटकारिकऽ प्रस्थान ।

सूत्रधार झखाकऽ अपन स्टुलपर बैसि रहैत अछि ।

सूत्रधार : (नटी सँ) आब ?

नटी : एकसँ एक समस्या त अछिए, जे चुनी ।

सूत्रधार : सएह त समस्या भ' गेल । लगैए कोनो समस्या ककरोसँ कम नहि अछि ।

नटी : आब एना थकथकएने काम नहि चलत । जल्दी किछु करू ।

सूत्रधार : अहुँ किछु सोचूने । हमर माथ फाटल जाइए ।

नटी : अहाँक आगा हम की सोचू ।

सूत्रधार : फेर अहाँ भसिआ रहल छी । ओना नै हयत बैसु स्थिर सँ आ ध्यान मग्न भऽ किछु सोचियौ । कहीं अहींके फुरा जाए !

नटी : लिअ, हम बैसि रहैछी। फुराए ई अहाक भागे।

दुनू स्टुलपर फ्रीज भ जाइछ।

क्षणिक अन्हार प्रकाशक घेरा एक पतिआनीसँ ठीक चारू आकृतिपर पडैत अछि। आकृतिमे हलचल देखल जा सकैछै। क्रमशः चारू पात्र मंचक आगां भागमे अबैत अछि।

पुरुष-१ : (कृषक के निहारैत) लगैए कोनो जुलुशक तैयारी छै ?

कृषक : अहुँक हाल तेहने सन लगैए। कत्त छै जुलुश ?

पुरुष-१ : मुदा, अहाँ कथीलेल यौ ?

कृषक : भ्रष्टाचारक विरुद्धमे छी। बात-बात पर पाइ, घूस छोटछीन काज कयक दिन लगादेत। तकरे विरोध करैत जुलुश बहार कैने छी।

पुरुष-१ : ठीक कहै छी। बड़ विकट समस्या छै।

कृषक : आ अहाँक।

पुरुष-१ : महगी। देखै नहि छिऐ कोना बढल जा रहल अछि सुरसाक मुँह जकां।

कृषक- : अलबत्त विषय अछि। घर-घरमे इहे रोना छै एखन।

पुरुष-१ : (युवक सँ) विद्यार्थी, किए प्लेकार्ड उठौने छी ?

युवक : बेरोजगारीक मारल छी हम। लोकसेवा दैत-दैत बुद्धि सठिआगेल, मुदा नोकरी नहि भेटल। तकरे विरोधमे जुलुश बहार कऽ रहलछी।

कृषक : (पुरुष-२ सँ) अहुँ लगै छी बेसीए पीड़ायल छी।

पुरुष-२ : औजी, पीड़ायल कहै छी। हद भऽ गेल अछि। लोकके शांतिसँ जीअब कठनि भऽ गेल छै। बहु-बेटीक ईज्जतपर पड़ि रहल अछि।

कृषक : (पुरुष-१ सँ) भाइजी, ई विरोध ककरा विरुद्धमे अछि ?

पुरुष-१ : बात साफ छै सरकारक विरुद्धमे।

युवक : हम सभ जे जुलुश बहार कऽ रहल छी आखिर ककरा विरुद्धमे, अजय सरकारक विरुद्धमे ने।

पुरुष-२ : हँ यौ, बात त ठीके छै। ई महंगी, भ्रष्टाचार, शांति सुरक्षा, बेरोजगारी समस्या सभक हेतु सरकारे जिम्मेवार अछि।

कृषक : तखन त सभ समस्याक जड़िमे सरकारे भेल ?

युवक : (उत्तेजित होइत) ताहुमे कोनो सन्देह ?

पुरुष-१ : त किएने हम सभ पहिने एकजूट भ' क' जड़िएपर प्रहार करी ?

पुरुष-२ : (माथ डोलबैत) एहिसँ समस्याक ओजन बढबे करत।

युवक : आ सरकारोक कानपर माछीयो भिनभिएतै त जरुर !

कृषक : (तनैत) ठीके। हम सभ सामूहिक रुपे जुलुश बहार करी।

पुरुष-१ : विचार उत्तम अछि ! (कृषकसँ) की औ ?

कृषक : एह, एहुमे कोनो सोचबाक बात छै। जखन जड़ि एक्के अछि त ताहीपर प्रहार होएबाक चाही।

युवक : तखन आगाँ बढू (नारा लगबैत मंच पर घुम' लगैछ) बेरोजगारी ? (तीनू एक्के संग) दूर करू !

युवक : अजय चोर !!

(तिनू एक्के संग) गद्दी छोर !!

युवक : प्रजातन्त्र !

तीनू : जिन्दावाद !!

युवक : भ्रष्टाचार !

तीनू : बन्द करु !!

युवक : अजय चोर !

तीनू : गद्दी छोर !

युवक : प्रजातन्त्र !

तीनू : जिन्दावाद !

पुरुष-१ : महगी !

तीनू : नियन्त्रण करु !

पुरुष-१ : अजय चोर !

तीनू : गद्दी छोड़ !

पुरुष-१ : प्रजातन्त्र !

तीनू : जिन्दावाद

पुरुष-२ : शान्ति सुरक्षा !

तीनू : कायम करु !

पुरुष-२ : अजय चोर !

तीनू : गद्दी छोर !

पुरुष-२ : प्रजातन्त्र !

तीनू : जिन्दावाद !

अन्तिम नाराक संग मंच सँ हटि जाइछ ।

अन्हार

प्रकाश फेर स सूत्रधार आ नटी पर पड़' लगैछ । दुनूक शरीरमे हलचल शुरु होइछ ।

सूत्रधार : (नटीसँ) हे, किछ सूझल ?

नटी : (दार्शनिक भावमे) हम एक दम साफ देखि रहल छी ।

सूत्रधार : (प्रसन्न होइत उठैत)

रधिया देवी !

जिन्दावाद !

रधिया देवी !

जिन्दावाद !

नटी : (मुंह विजुका) आहिरेबा ई नारा लगएबाक कोन तुक भेलै ?

सूत्रधार : प्रजातन्त्रमे पीतो लहरै छै त नारा लगओल जाइ छै आ मोनमे खुशीयो अबै छै तखनो नारा लगाओल जाइछै।

नटी : तखन ई नारा कोन अवसरक छै ।

सूत्रधार : अहाँक बुद्धि फुरएबाक प्रसन्नतापर ।

नटी : दुत् ओहिना बनबैत रहै छी ।

सूत्रधार : अच्छा, अच्छा, बाजू त की फुरपल-ए ?

नटी : एतेक रास जुलुश ककरा विरुद्धमे रहै ?

सूत्रधार : सरकारक विरुद्धमे । (नारा लगबैत सन....) अजय सरकार... ।

नटी : (बात लोकैत) फेर नारा । (क्षणिक विराम) तखन सभ समस्याक जड़िमे सरकार भेल ?

सूत्रधार : सभक आक्रोश त ओम्हरे रहैक ।

नटी : साफ नहि लगैए सभ सँ पैघ समस्या सरकारे छैक ।

सूत्रधार : (जेना किछु बुझैत) । हँ, हमरो आब बात साफ-साफ लागि रहल अछि ।

नटी : तएँ, हम सभ अपन नाटकक हेतु सरकारेके पात्रमे राखी त कोन हर्ज ?

सूत्रधार : वेजाय त नहि, मुदा सरकार कोनो व्यक्ति त नहि होइछ जे मुख्य पात्रमे राखी ।

नटी : हँ, ई समस्या भऽ सकैछ । एकटा एहन चरित्र खोजू जाहिमे सभ समस्या एक्के ठाम भेटि जाए ।

सूत्रधार : (मोढापर लुद् सँ बैसैत) दुत्, फेर त खोजबाक समस्या रहिए गेल ।

तखने कनेक दूर नाराक स्वर सुनि पडैछ-नेताजी, जिन्दाबाद !

नटी : भेटि गेल !

सूत्रधार : की भेटि गेल ?

नटी : पात्र ।

सूत्रधार : (प्रसन्न होइत) हँऽ, के ?

नटी : नेताजी !

सूत्रधार : (साश्चर्य-नेताजी !, क्षणिक विराम) वाह अद्भुत चरित्र ।

नटी : आब भेल ने मोन हरियर !

सूत्रधार : अवश्य । नाटकक हेतु समस्या आ पात्र दुनू एक्के ठाम । आब देखू ने केहन नाटक हम तैयार करैछी ।

नटी : कनेक समयोपर ध्यान देबै ।

सूत्रधार : ओह, (घडी देखैत) बाप रे ! समय त समाप्त अछि । सुतबाक समय भऽ रहल छै आब !

नटी : (निश्चित भऽ मोढापर बैसैत) आब त अहीँ सोचबै ।

दूरसँ लग होइत आवाज-नेता जी...... ।

जिन्दाबाद !

(साकांक्ष भऽ अकानैत) लगैए नेताजी एम्हरे आबि रहल छथि ।

सूत्रधार : आबियो सकै छथि । वाजि कऽ गेल छलाह ।

नटी : तखन ?

सूत्रधार : हुनका अएबासँ पूर्व घसकी ।

नटी : आ नाटक ?

सूत्रधार : आब त नहिए भेल । (दर्शक दिस)

आदरणीय दर्शक लोकनि, एतेक काल नाटकक आशामे हम सभ अपने सभके घुरिऔलहु तकरा लेल क्षमा करब ।

नटी : (उठैत) फेर कहिया हयत से कहि दिऔन ।

सूत्रधार : हँ, जँ कि समस्या आ तकर उपयुक्त पात्र भेटिए गेल अछि, हम अगिला सप्ताह फेर अपने सभके नवका नाटकक सँग कष्ट देब । एखन शुभ रात्रि ।

नटी सेहो हाथ जोडि दैछ ।

अन्हार

□□□

हम घूरि अएलहुं मीत

दृश्य १

पक्की मकान । आंगनमे दूटा कूर्सि राखल । वगैंचामे गेना फूल फूलायल। बाहरस पुरुष-२क प्रवेश ।

पुरुष - २ : काकी, काकी ?

महिला घरस बाहर होइछ ।

महिला : चन्दर, आबि गेलही ! बौआ केना हौ ?

चन्दर : जी, काकी । बड़ नीक जकां है वहिन । नेहमान खुब मानै छथिन्ह । एकोटा चीजमे हाथ नै लगब दै छथिन । सासु-ननद सेहो देखलिऐ आगा-पाछा करैत ।

महिला : भगवान समांग देथुन । बौआ बड़ दुलारे(प्यारे पोसल छलै । डर होइछल-केना क ससुरामे बसतै ।

तावत घरमे पुरुष - १ क आगमन ।

पुरुष - १ : की वातचीत होइछै काकी - भतिजामे ।

चन्दर : प्रणाम काका !

पुरुष - १ : नीके रह । कखनु अएले ?

चन्दर : जी एखने अइलीअ ।

पुरुष कुर्सिके घीचिकऽ बैसि जाइछ ।

महिला : चन्दर बौआके गामस आयल ह । कहैअ बौआ नीके जकां है ।

पुरुष : ठीके रहतै की । हं, डर त हमरो होइछल । ई रामेसर एना ने

दुलार क क वीगाड़ि देने छलै जे सासु-ससुरलग नीक जकां बसतै कि नै हमरो डर लागल रहैअ ।

महिला : एह, से कहांदन सभ केओ बौआके बड़े मानैत छै । (फेर चन्दरस) चन्दर, हं विदागरी दा की कहलखुन समधी ?

चन्दर : नै मानैत छलखिन । कहैत छलखिन एहि बेर आम खूब फरल है । कयटोक छै । एत्त रहतै त मन भरि कऽ खएथिन ।

पुरुष : से त छैहे । एहि माने मे समधी ठकि उपर छथि ।

महिला : तखन ?

चन्दर : हम बड़ कहलिऐ त हारि पाछि कऽ अगिला मंगलके दिन देलखीन अछि ।

महिला : सुनलिऐ, बौआ मंगल दिन अओतै । अहां त पटना जाएव कहने रहिऐ । आब नै भेल । वेटीके छोडि क' केना जएबै ।

पुरुष : ठीक छै, नै जएबै ।

महिला : चन्दर, बौआ किछु कहबो कहलकौ ?

चन्दर : हँ, काकी । आब बेरमे लगमे बजा कऽ बहिन जोर दऽ कऽ वाजल छली-भैया, मायके कहि देबै हम आएब त मीत बाउके लेल दालिबला बगिया बना क' लेने अएबै ।

पुरुष : देखलिऐ, रधियाके माय । ई बेटी हमर है कि रामेसरके । जखन देखु मीतवाउ, मीतबाउ । सनेसो लै तै त मीतवाउ लेल । हम जेना कोइ नै छिऐ ।

मुंह लटका लैछ ।

महिला : हे से नै कहू हमर बेटीके । अहांके हमरोस बेसी मानैअ । ओ त मीतजीके कोरामे गुंहमुत कऽ कऽ जुआन भेल छै । अपनोस बेसी माया पौलक ओ । मीतजीके बगिया नीक लगै छै से बौआके बुझल छै । से.....।

भावुक भऽ जाइछ महिला ।

पुरुष : ठीक छै, हम ओहिना कहल अछि । हमरा आ मीत मे अन्तरे की छै । हमरा कहियो लागल जे ओकर वाप-दादा कहियो पहाड़स तराईमे आबि बसल रहै आ ओ वास्तवमे नेपाली बाज बला पहाडी अछि ।

महिला : दुत, मीतजी आब पहाडी केना रहल, ओत खांटी मधेशी अछि, अपन समांग जकां । मरन-हरन, शादी-विआह, नीक-वेजाय, भेल-गेलमे अपनो समांगस पहिने आंगन मे ठाढ रह' बला मीतजी एक्के घरक लोक भऽ गेल छथि ।

पुरुष : (किछु मोन पड़ैत) लाउ त मोबाइल । मीतके कनेक ई सुखद सूचना कऽ दिऔ जे ओकर बेटी अगिला मंगलके अबै छैक ।

पत्नि घरमे जा मोबाइल लबैअ । पुरुष - १ मोबाइलमे नम्वर लगा कानस लगबै छैक । ई क्रम दु-चारि बेर करैत अछि । भाव एहन जे फोन लागि नै रहल छैक ।

उह, हद भऽ गेल । ई मोबाइल त कखनो काल जानके जंजाले भऽ गेल बुझाइए । कहियो नेटवर्क नै, सम्पर्क नै त कखनो की(की बजैत रहैअ ओइमे के मौगिया । (पत्निस) हे, लिअ धरु एकरा । हम पैदले जा कऽ मीतके घरेमे ई शुभ समाचार देने अबैछी ।

महिला : हे, कनीक थम्हू । जखन जएबे करैछी त मीत अंगनामे खाली नै जाउ । हम अबैछी ।

पत्नि घरमे जाइत छथि । कनेक कालक बाद टिफिनमे किछु लेने अबैत छथि ।

ई, खीर छै । जोगा कऽ रखने छलिऐ । वहिनपाके दऽ देबै ।

पुरुष - १ एक बेर टिफिन पर आएक बेर पत्निक अनुहार पर नजरि फेंकैत अछि । ठोढ़मे मुस्कि आबि जाइत छैक । टिफिन लऽ जएबाक उपक्रम करैछ ।

अन्हार

दृश्य - २

मकान पूर्ववत् । अपरान्ह ४ वजेक समय । कुर्सि यथावत् राखल । मात्र स्थिति बदलल । पुरुष-१ थाकल-थाकल सन, माथ परक घाम पोछैत आंगनमे अबैत अछि । हाथमहक टिफिन चौकीपर धऽ कुर्सि पर धम्मस खसि पड़ैत अछि ।

आंगनमे किछु आवाज सुनि पत्नि घरसं वहराइछ । अस्त-व्यस्त पतिके देखि चिन्तित भऽ जाइछ ।

पत्नि : की भेल राधाके बाबू ! ई टिफिनो संगेमे अछि ?

पुरुष - १ : गुम्म अछि। आंखि मुनने पड़ल अछि।

पत्नि : सुनै नै छिऐ, की भेलै ? अहां एना किए कैने छी ?

पुरुष - १ : रधिआके माय, की कहू । हमर सभ किछु उजड़ि गेल ।

पत्नि : हे, भगवान ! की भेलै ?

पुरुष - १ : मीत हमरा सभके छोड़ि जा रहल है।

पत्नि : कतौ जएबो अएबो ने करौ। हमरा त जीउए उड़ा देने छली अहां।

पुरुष - १ : नै रधियाके माय, ई जाए-आब बला जएनाई नै है । एतस सभ किछु बेचि बाचि कऽ आनठाम जा रहल है।

पत्नि : (चौंकि) आन ठाम ! पुछलिऐ नै, कैला जाइ छथिन से।

पुरुष - १ : भेटैत तखन ने पुछितिऐ। हटौडाबाली आ मीत दुनू बजार मे गेल छल कोनो बेगरते। उत दुरे पर जानकी भेटल छल - उहे हुनकर मकान कीनि लेने छलै। सभ वात कहलक।

पत्नि : घरो वेचि देलखिन !

पुरुष - १ : से कौड़ी के भाओ ! की भेलै मीतके जे हमरो नै कहलक आ चुपेचापे भागल जा रहल है।

पत्नि : अहां किछु कहलिऐ नै !

पुरुष - १ : भेल जे नहिए कहिऐ किछु। कुछ वात होतै जे मीत विना खबरे जाए चाहै छथि। मुदा मन नै मानलक। जानकीके कहलिऐ जे कहि दिहो मीत आएल छलौ !

पत्नि : लगैअ। मीतजी अहांस भेंट कर अओताह ?!

पुरुष - १ : की कहु। पसे पलटि गेल छै। एक कौर अन्न विन पुछने मुंहमे नै धर' बला मीत एतेक भारी निर्णय केना असगरिए कऽ लेलखिन्ह।

पत्नि : नै, जरुर किछु भारी बात छै। एक बेर देखबै फेर...।

पुरुष - १ : (कनेक रोषस) इहे अहां जनानी सभके वलधिंगरो रहैअ। जखन वुझैछीऐ किछु बात छै आ मीत हमरास भेंट नै चाहैअ त फेर जाएके कोन माने !

पत्नि चुप्प भऽ जाइत छथि । आकासपर मेघ लाग लागल छै । कखनो-कखनो लौका सेहो चमकि जाइत अछि । कनेक कालक चुप्पी वाद ।

मुदा नै जानि कैला। हमरा लगैअ मीत हमरास जरुर भेटत। ई, हमर मनके वहम सेहो भऽ सकैअ।

पत्नि किछु बजैत नै अछि। चौकी पर सहटि कऽ बैसि रहैत अछि । तखने हहाइत-फुहाइत रामेश्वरक प्रवेश । पुरुष - १ मीतके देखियो कऽ अनदेखा कऽ दैछ। रामेश्वर आगांमे ठाढ़ भऽ जाइछ। तैयो पुरुष - १ गुम्म अछि । पत्नि ईशारास कुर्सि पर बैसबाक आग्रह करैत अछि । रामेश्वर नै मे माथ डोला दैत छैक ।

रामेश्वर : मीत, हमरा वुझल अछि अहां पीतायल छी। लेकिन हम की करु ! हम त धरती आ आकाशक विच त्रिशंकु जकां लटकल छी मीत। ने एम्हरे आवि सकैछी ने ओम्हरे जा सकैछी। अहांक पीत वाजिब अछि। लेकिन हमर मजवुरी....!

पुरुष-१ : (उठैत) हम मानलहुं अहांके मजबुरी छल । मुदा एतेक भारी निर्णय कऽ लेलहुं आ हमरा खबरि तक नै।

रामेश्वर : ई ठीके कठिन निर्णय छल । आ ई अहांस सल्लाहस होब बला छलैहो नै । इएहटा एहन निर्णय रहय जकरा हमरा अपने कर' पड़ल।

पुरुष-१ : की रहै मजवुरी जे मीतके मीतसं फराक राखि देलकै !

रामेश्वर : रहै मीत। एम्हर किछु दिनस जाहि तरहें पहाड़ी मूलके लोक सभके धम्की, चन्दा, अपहरण भऽ रहल छैक। जानस मारि देबाक चिट्ठी आ फोन आबि रहल छलैक ताहिमे हमर पत्नि आ वेटा अगुता गेल, डेरा गेलै। ओ सप्पत धऽ देलकै, मीत वाउके किछु नै कहक, चुपचाप चल एत्तस।

पुरुष - १ : हम मानै छी - एखन तराईमे संगठनके नामपर पाइ असूली के अभियान चलल छै। गोली(गठाके भण्डार छै। वैसले मौजमस्ती भेटै छै - कमएबाक काजे कोन ! पहिने मुक्तिके नाम पर आब मस्तीके नाम पर...। आइ पहाड़ी कहि क । काल्हि मधेशी, माड़बाड़ी, साहु-महाजन एकर कोप भाजन बनत । जकर कोनो लक्ष्य नै ओकर कोन भरोस ।

रामेश्वर : जिनगी एत्त विता देने छी । वाप-दादा एत्तहि जनमलाह, एत्तहि मरलाह । हम सभ पहाडी भऽ गेली..। ई धरती पर उवजैत सोनसन धानक बालीमे हमरा सभक कोनो मेहनत नै...।

पुरुष-१ : जत्त मानवीय सम्वेदना कठोर भऽ जाइछ, मात्र उगाही एक मात्र उद्देश्य होइछ, ओत्त जाति वा व्यक्ति गौन भऽ जाइछ। आइ खतरा एही वातके छै । एहने खतराके अपना लेल उपयोग कऽ राजनीतिके मजवूत करैत अछि नेता सभ....। समाज आ देशक हविगत एही दुआरे एहन छै । कत्त छै सम्विधान, कत्त छै शान्ति, कत्त गेलै आदमीके आदमी भऽकऽ जीवाक अधिकार !

रामेश्वर : मीत, अहीं कहु एहनमे हमकी करितहुं । उछन्नर कऽ देने छल । एक राति त हेटौडाबालीके उठा कऽ लऽ जएबाक धमकी तक दऽ देलकै। ओ डेरा गेलीह आ हमरा जाएके निर्णय कर' पड़ल ।

पुरुष - १ : ठीक छै, अहां मानसिक तनावमे जीलहुं । मुदा अहां त पहाडी नै छी मीत। ई त वुझाब पड़तै। अहीं हिम्मत हारि देबै त समाजमे बहुतो पुरान वासिन्दा सभ छथि, जे गहना छथिन समाजके, सभ उजड़ि जएतै। अहां नहि जाउ, रुकि जाउ।

रामेश्वर : नै, मीत नै। हम अहांसं चोरा कऽ भेंट आयल छी। जखन जानकी कहलक जे मीत आएल छल, हम विचलित भऽ गेलहु । सवुरके सभ वान्ह टुटि गेल आ तगेदाके वहन्ना बना एत्त आबि गेल छी। हेटैडा वाली त सप्पत धऽ देने छल अहांस नहि भेटबाक लेल।

पुरुष - १ : हम वुझै छी हुनक व्यथा।

रामेश्वर : ओ वजैत छलीह, जखने ई मीतस भेटतै, नरभस भऽ जएतै, सभ गड़बड़ भऽ जएतै।

पुरुष - १ : से त हम कहैछी, जाउ भौजीयो सभके लेने अबियौ हमरे ओत्त। एत्तहि रहु। देखै छीऐ, ककर मजाल छै अहांके छुबि लैए।

रामेश्वर : नै मीत, हमरा जाए दीअ। हटौडाबाली वस स्टैण्ड चलि गेल अछि। छातीपर पाथर राखि कऽ ई निर्णय कैने छी। इएहटा अहांक आग्रह अछि जे हम मानि नै सकब...।

पत्नि : अपन वेटी राधोके एक नजरि नै देखथिन्ह ! **रामेश्वर चलैत-चलैत रुकि जाइत अछि ।**

रामेश्वर : हमरा कमजोर करबाक प्रयास नै करथुन। वेटीस हमर माफी कहि देथिन। हम केना क ओकर मुह देखि सकबै। मीत, आब नै। बस छुटके समय भऽ गेलै। कहल सुनल माफ करब।

रामेश्वर तेजीस आगनसं नीकलि जाइत अछि। एम्हर पति-पत्निक आंखिमे नोर डबडबा जाइत छैक। मेघ गरज लगैछ। लौकाक संग पानि पड़ब प्रारंभ भऽ जाइछ।

अन्हार

दृश्य - ३

पुर्ववत पक्की घर । गर्मिक समय । इजोरिया राति । आंगनमे चौकी पर पुरुष-१ सुतल । प्रकाशक मद्धिम घेरा पुरुष-१ पर पड़ैत । फोंफ कटबाक स्वर । पृष्टभूमिमे एकटा गीतक बोल अभरैत छै-अपना किशोरी जीके चरण दबैबै हे, हम मिथिलेमे रहबै, सागपात मुरी मुरी दिवस गमएबै हे मिथिलेमे रहबै....। गीतक बोल बेर-बेर प्रतिध्वनित होइछ । पुरुष-१क कछमछी स्पष्ट देखल जा सकैछ । स्थिति एहन जेना कोनो सपना देखैत हो । पुरुष-१ के नीन्न उचटि जाइछ । जोरसं चिचिया उठैछ - 'मीत !' घामे पसीने नहा जाइछ । चारु भर तकैत अछि । उठि कऽ बेसब्रीस टहल लगैछ । घरस पत्नि धरफराइत आंगनमे अबैत छथि । पतिके व्यग्र भऽ टहलैत देखि लगमे जा पुछैत अछि ।

पत्नि : अएं, की भेल ! जोरसं किए चिचिअलहुं।

पुरुष - १ : की कहु रधियाके माय। पहिने पानि आनु। घेंटमे पानिक बुन्न जाएत तखने गरा खुजत।

पत्नि घरमे पैसैत छथि आ कनेक कालमेलोटामे पानि लेने बहराइत अछि। लोटा पुरुष - १ क आगां बढा दैत छैक । पुरुष(१ लोटा ल८ ठाढ़े ठाढ़ सौंसे लोटाक पानि पीबि जाइत अछि । खाली लोटा पत्नि दिश बढ़ा गमछासं मुंह पोछैत फेरसं चौकीपर बैसि जाइत अछि । पत्नि सेहो बगलमे बैसि जिज्ञाशास पुरुष-१क अनुहार दिश तकैत अछि ।

पुरुष - १ : (किछु आश्वस्त होइत) रधिया माय । मीत मोन पडि गेल । वुझायल जेना मीत एत्तहि कतौ पहिने जकां संगे गीत गबैत आबि रहल अछि ।

पत्नि -१ : (गंभीर भ८) उएह गीत ने जे अहां दुनू गोटे मीलि क८ बरोबरि गबैत रहैत छली-मिथिलेमे रहबै ।

पुरुष - १ : हं, रधिया माय, इएह गीत । केना बइमनमा हमरा जिनगी भरि संगे रहबाक वचन दैयो क८ संग छोड़ि देलक । वेटी-रोटी सभमे एक दोसरक साथ ।

पत्नि : हमसभ कहां आन वुझलिऐ हुनका । जतेक अहांके अधिकार एहिघरपर, बालबच्चा पर अछि, ततबे त हुनको रहैन कि ने ।

पुरुष - १ : सएह त । जखन रधिया इस्कूल जाएमे हनछीन करए त केना क८ अपने दुलारि, कन्हापर लादि क८ इस्कूल पहुंचबै । हम भले विजनीस, वेपारके लेल गामे-गाम बौआइ । मीत घरके सभ भार उठा लैक ।

(हिंचुक' लगैछ)

पत्नि : वात त ठीकें छै रधियाके बाबू । लेकिन जे हमरा सभके छोडि क' चलि गेल, से चलि गेल । कहां भेलै एतेक रोकैअ रुकि जाइ ।

पूरुष - १ : कएक पुश्ताक सम्बन्ध केना एक्के रातिमे मीत तोड़ि देलकै ।

पत्नि : हं, सेत भेलै ।

पुरुष - १ : मधेश आन्दोलनमे हमरे संगे मीत सडक पर उतरल रहय । जोर -जोरस नारा लगब'मे हमरा साथ दिअए ।

पत्नि : हम देखने नै रहिऐ कहुं ।

पुरुष - १ : मीतके दुख एहि बातके नै जे ओकरा पहड़िया कहै । ओकरा दुख

जे ओ आब पहड़िया केना भ८ गेल । कएक पुस्ता तराईमे विता देने रहै, एहि ठामके रीति रिवाजमे मीलि गेल । चौविसो घंटा घरमे मैथिली बजै छल, फेर पहड़िया केना भ८ गेल !

पत्नि : हेटौडा बाली त एहन निछक्क मैथिली बजै जे हमरो लाज भ जाए । केहन वहिनपा रहै हमर ।

पुरुष - १ : सएह देखूने । रधियाके विआहमे हम-अहां किछु वुझलिऐ । जेना पहिल सन्तानके विआह रहै, मन आउल-पाओल करैत । सभ मीते सम्हारलक ने ।

पत्नि : भतखईमे एक रत्ती दही कमि गेलै आ समधी मड़बा परसं उठि गेलखिन्ह त केना क८ रामेश्वर बाबू हाथ जोड़ि-जोड़ि क८ मनौने रहथिन्ह । अहां त नुका गेल रही....।

(दुनूक हल्लुक हंसी सुनि पड़ैछ)

पुरुष - १ : हं, आ रधियाके विदाई काल...। हमरा आंखिमे नोर त आएल रहै, लेकिन भोकासी पाड़ि क८ कनै मीत..। पालने-पोसने, दुलारने रहै ने...।

(पुनः आवाज फंसल जाइत छै)

पत्नि : हे, आब सुति रहु । जतेक मोन पड़त ततबे दुख हयत । फेर भोरे पटना सेहो जाएके है ने ।

पुरुष - १ : सुतके मन त हमरो होइअ । लेकिन मीतके विना एक्को रत्ती नीक नै लगैअ रधियाके माय । की करु !

पत्नि : कहुना मन जाति क८ सुति रहु । हुनका जाहीके छलनि, चलि गेलाह । जहियास गेलाह, अहांक हालत एहने अछि ।

पुरुष - १ : की गेलाह । औन-पौन दाममे घर-कराडी वेचि क८ राता-रात पड़ा गेलाह ।

पत्नि : छोडू, ओ एसकरे त नई ने पड़एलाह । बहुतो लोक एत्त सं हेटौडा, काठमाण्डू भागि गेल अछि । ओहिना कतौ एना छोड़ि क८ नहि जाइए ने ।

पुरुष - १ : हं सेत मीतो के बेर-बेर धमकी, अपहरण क८ लेबौ, धीआपूताके उठा लेबौ, चन्दा दे, इ दे, उ दे...। बड़ सतौने रहै कहांदन ।

पत्नि : तखन, की करितथिन्ह। अपनो त सएह ने कहै छलाह।

पुरुष १ : हे, एकटा बात छै। मीतके जाएके मन नै रहै। हटौडा वाली डेरा गेल रहै। लोक धमाधम घर वेचि कऽ जाए लगलै त ओहो जीद कऽ देलकै। तै स मीत हमरा छोडि कऽ चलि गेल..।

सुतबाक हेतु पुनः खाटपर ओंघरा जाइत अछि। पत्नि घरमे चल जाइत अछि। पुरुष १क फोंक काटब शुरु भऽ जाइछ।

अन्हार

दृश्य - ४

प्रकाश। मकानपूर्ववत। भिनसरबा। चिड़ैचुनुमनक चहचहाहट। आंगनमे मधुर लालिमा पसरल। पुरुष - १ एखनो धरि सुतले। पुनः गीतक बोल पृष्भूमिमे अभरैत छैक। अपना किशोरीजीके चरण दबएबै हम, मिथिलेमे रहबै...। फेरस पुरुष १ चौकि उठैत अछि। खाट पर बैसि चारुकात तकैत अछि। जोरसं पत्नि के सोर पाड़ैत छैक।

पुरुष - १ : हे सुनैछी।

पत्निक उत्तर नहि अवैछ।

(कनेक जोरसं) रधिआक माय, कत्त छी। जल्दी आउ !

पत्नि कनेक तेजीस आंगनमे प्रवेश करैछ। स्थितिक आकलन करबाक प्रयास करैछ।

हे, हम त फेर मीतके आवाज सुनलहुं। हम आब एक्को क्षण एत्त नै रहब।

पत्नि : कहलहुं नै, मनथीर कर' पड़त। आइ कतेक दिनस एहने ताल अछि।

पुरुष - १ : की थीर करब। जखने आंखि लगैए, मीतक आबाज माथमे घनक' लगैए - हम मिथिलेमे रहब। की खाक रहब। सभ किछु छोडि कऽ त चलि गेलहुं।

पत्नि : (किछु अकानैत) आबाज त एखनो आबि रहल अछि।

पुरुष - १ : (चौंकि) अए, ठीके ई त मीतके आवाज अछि। अहुं सुनलिऐ नै, ई केना भऽ सकैछै। (किछु सोचि) जं ई नै भऽ सकैछै त हम एखन जागल छी। जागलमे कोन सपना।

पुरुष-१ व्याकुल भऽ जाइछ।

रधिआके माय। हमर मीत घुरि आएल लगैए।

पत्नि : अहां राति सुति नै सकल छी आ हिक मीतेपर टंगा गेल है। से अनको गायल गीतके मीतके स्वर वुझ' लागल छी।

पुरुष - १ : नै, नै, ई मीते के स्वर छल।

पत्नि : हम पानि आनि दैत छी। कुरा करु, गछुली पोखरि भऽ आउ। मन ठंढा जाएत तखन पटनो जएबाक अछि।

पत्नी घरमे पैस' चाहैत अछि कि उएह स्वर पुनः अभरैत छैक - हम मिथिलेमे रहबै। पत्नि उनटे पयर घुरि जाइत अछि। कखनो अपन घरबलाके आ कखनो खुजल दरबज्जादिश ताक' लगैत अछि। दरबज्जास हाथमे सुटकेस लेने रामेश्वरक प्रवेश होइछ। दुनू पति-पत्नि आश्चर्य आ हर्ष विभोर नेत्रें रामेश्वरके देखैत छैक। रामेश्वर सुटकेस राखि वांहि पसारि पुरुष-१ के छातीसं सटा हिंचुक' लगैछ। दुनूक हिंचुकब स्पष्ट सुनाई पड़ैछ। पत्नि आंखिमे आएल नोरके आंचरसं पोछैत घरमे चलजाइत अछि आ हाथमे भरल पानि लोटा लेने अबैत अछि।

पत्नि : भेलै, आबो त गाला छोडू। पयर धोब' दिऔन।

दुनू किछु क्षणक बाद फराक होइत अछि।

रामेश्वर : (भरल आंखिए) मीत, हम घुरि अएलहुं।

पुरुष - १ : हमरा विश्वास छल, हमर मीत हमरा धोखा नै देत। ओ जरुर घूरत। रधियाक माय, देखलिऐ, हम कही ने !

रामेश्वर : हमही नहि ज्योतिके माइयो छथि। ककरो आंखिमे नीन्न कहां होइ। दिन राति राधा, वहिनपा...।

पत्नि : अए, कहा छथिन्ह वहिनपा।

रामेश्वर : संकोचे वाहर ठाढ़ छथि। कहैत छलीह हमरे जीदे अहांके मीत छोड़ पड़ल। की कहैत हयताह।

पुरुष - १ : रधिआक माय, जाउ जल्दी हुनका लबियौन।

पत्नी झटकारि क आगनस बहराइत अछि।

हुनका नै वूझल छै - ई घर, आंगन हमर सभवाल-वच्चा हुनक ऋणी छन्हि। संकोच कथीके। जेहन समय रहै-केओ विचलित भ' सकैत छल।

(रामेश्वरस) आउ मीत, बैसु एत्त।

रामेश्वर : (वैसैत) एखन बैसबे करब। रहबाक जोगाडो त करबाक अछि।

पुरुष - १ : जोगाड़ होइत रहतै। ई घर अहींक अछि। हम दू परानी। गामक दोहटा। किछु दिन गामो पर रहि सकैछी। मीत, अहां घूरि अइलिऐ हमरा लेल सभ किछु भेटि गेल अछि।

रामेश्वर : हं, हमर जेठका बेटा कहैत छल, बाबूजी जाइ त छी। फेर कतौ धम्की, त्रास, चन्दा अथवा दुरव्यवहार करत त। हम कहलिऐ-बाउ, अपन मायक कोरमे जिनगी वितएबाक बचन हम खएने छी। हमर धरतीक सम्वन्ध ककरो धम्की, त्रास बन्दुकसं नै टुटि सकैत छै। केओ अपन घर-आंगन स कतौ पड़एतै। हम ठीके हड़बरा गेल रही मीत। हम किशोरीजीके सेवास वंचित हयबाक पाप माथपर उठा लेने रही। (भावुक भ' जाइछ)

तावत पत्नि ज्योतिक मायके पांजरमे पंजियौने आंगनमे प्रवेश करैछ। हाथ जोड़ि पुरुष - १ के नमस्कार करैछ। पुरुष-१ उठि क' अहलादपूर्वक खटिआपर बैसबैत छैक।

पुरुष - १ : सांच बात छै - संकमणक किछु समयमे परिवर्तनक गलत अर्थ लगा किछु गोटे अपना लेल तकर उपयोग कएलक अछि। लड़ाई व्यक्ति स नहि, नेपालक शासकीय सत्तास छै जे एक्केटा नेपालमे नेपालीक पहिचानके वांटिक' देखैत रहल। चोट ओत्त हयबाक चाहैत छलै। जे से, आब अहां दुनू हाथमुंह धोउ, फ्रेश होउ। हमहुं फ्रेश होइछी। आ आब दुनू मीत मिल क' फेर सं दरबज्जा पर जमैत छी - अपना किशोरीजीके चरण दबएबै हे, मिथिलेमे रहबै, साग पात मुरि मुरि समय गमएबै हे मिथिलेमे रहबै...... ।

'दुनू गोटे ई गीत गबैत गबैत मंचक आगां आबि जाइछ। मंच प' अन्हार भ' जाइछ।

पटाक्षेप

□□□

जट-जटिन

लोकनाट्य

मंच पर प्रकाशक एउटा गोल घेरा डांड़मे नगाड़ा बन्हने नट पर पडैत छैक। ओ नगाड़ा के सुरतालमे बजबैत रहैत अछि। दोसर प्रकाशक घेरा दहिन कात प्रवेश करैत नटी पर पडैत अछि। ओकरा संग घेरा नट लग धरि अवैत अछि। आव दुनू के उपर प्रकाशक धेरा छै।

नट : (नटी के देखि प्रसन्न होइत)
अहा,केहन सयोग अछि ई,प्रिय अहांके देखल,

नटिन : (नृत्याभिमूख मुद्रा प्रदर्शित करैत)
जट जटाधर व्यग्र बनल हो, पार्वती कोना बैसल।

नट : धन्य प्रिय अहां संग पुरै छी सदिखन हमर छी अंग

नटिन : जनम-जनम धरि एहिना प्रियतम छोडब अहां के ने संग।

नगाडा पर फेरस चोट पाडैत नटक हाथ चलैत अछि। रुकलाक वाद।

नटिन : रंगमंच पर किए उपस्थित मनमे की फुरल अछि,
आइ ककर उद्घाटन करबै, दर्शक खूब जूटल अछि।

नट : मध्यकाल के प्रेमी युगल के खिस्सा कहब महान।
जकरा नामे पानि बरसै इन्द्रहुक झुकै कमान।

नटिन : *(आश्चर्यक भाव व्यक्त करैत)*
नाम की थिक प्रेमी युगल के जनिक कीर्त्ति एहन अपार,

नट : जटा जटिनकेर गाथा स प्रिय होइछ जगत उद्धार ।

नटिन : ई त महिला मात्र करै छै,नाचि नाचिकऽबेंग कुटै छै,

नंगटिनी आंगन घैल फैकै छै,गारि सुनै छै,पानि मगै छै ।

नट : एह,अहां त ज्ञानी छीहे, साज बाज ओरिआउ नटिन,

कुटु बेंग उखरि मे ध,आ शुभारंभ करु जट जटिन ।

उखरिमे बेंग कुटबाक उपकम ।तकराबाद महिलासभ दू दलमे बंटि जाइछ ।जट बला समूहक महिला सभ माथमे आ डांरमे गमछा बन्हने रहैछ ।दुनू दल परम्परगत शैलीमे एक दोसरके गरामे बांहि धएने आगा पाछा झुकैत चलैत गीतक पहिल मुखरा गबैत अछि । तकराबाद नव शैलीमे जाइत अछि ।

***गीत १ :* महिला समूह**

हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता ।
पानी बिनू पडल अकाल हो राम ।
चौर सुखले, चांचर सुखलै
खेती बारी झारी सुखलै
सूखि गेलै बाबाके जिराते हो राम ।
सूखि गेलै भइया के जिराते हो राम ॥
धोबियाके अंगनामे छापर छुपर पनियाँ
चमराके आंगनमे छापर-छुपर पनियाँ
ओहिमे नहाइ पुजारी बभने हो राम ।
धोतियो ने भीजलै जनौओ ने भीजलै -२
रचि रचि तिलक लगावै हो राम - २
भीजले तीतले हवेलिया ढुकलै - २
बहुओ लेलक लुलुआइये हो राम - २
रांडी मौगिया हरवा जोतै छै - २
पानी विनू पड़लै अकाले हो राम - २
दयो नहि लगइ छ हो इन्नर लोक
मयो नहि लगइ छ हे इन्नर लोक
पानी विनू पड़ल अकाले हो राम ।
हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता - २
पानी विनु पडल अकाले हो राम - २
निरसू के धीया-पूता मांड ले कनइ छै
खुद्दी ले कनइ छै, अन्न ले कनइ छै
पानी बिनू पड़ल अकाले हो राम ।

गीत १ समाप्त भेलाक बाद मंच पर अन्हार । प्रकाश अएला पर महिला सभ समूह मे नचैत गबैत ।

***गीत २ :* महिला समूह**

एगो छलै जट, एगो जटिनियाँ।
दुनूमे हो गेलइ परेमे हो राम ।
दुनूके विआह केना रचैवै बसेबै
हो गेलै माइ बापके विरोधे हो राम ।

नगाडा बजबैत एक दिशसं नटक प्रवेश । दोसर दिशस नचैत नटिनक प्रवेश । वीच मे आबि ठमकि जाइछ । नगाडा पर जोरस लकडी बजारि नट गबैत अछि ।

नट : एक्कै देश, एक्कै परगन्ना जट आ जटिन,

जट गामक सुधुआ मनसा दोसर तेहने नटीन ।

नटी : (नृत्य रोकैत)

की बजलहुं अहां फेरसं बाजु चुगली परोक्षे पीठ,

अहां पुरुष के इएह ऐब अछि सदिखन नारी पर दीठ ।

रुसि जएबाक अभिनय

नट : (मनबैत) जटक हयत विआह, प्रशन्न छी, हमर ने अहित मनसाय,

आयल वरियाती साज वाज देखि जटिनक माय पछताय ।

***गीत ३ :* समूह**

जटक पक्ष: हम अनलियै आजन-बाजन, आब करु वियाह, - २

सांवरि गेरुली, कऽ दियौ जटाके बियाह -२

जटिन पक्ष: आगि लागो आजन-बाजन, नहि करबौ वियाह, -२

साँवरि गेरुली, मोर गौरी रहि जइती कुमारि -२

जटक पक्ष: बज्जर खसौ हाथी घोडा, बज्जर खसौ बाजार - २

सांवरी गेरुली नहि करवौ जटिनसँ वियाह

सांवरी गेरुली रहि जयतौ गौरी कुमारि ।

जटिनक पक्ष: कहाँ रे पयबै, कहाँ रे पयबै, डलवाके साज - २

सांवरी गेरुली मोर जटिन रहतै कुमारि - २

अन्हारक वाद प्रकाश । प्रकाशक धेरा नट पर ।

नट : भेल विआह जटिन सासुर चललीह,सभ कें आंखि नोरायल,

बाबा देहरीक शान ने भेटलै लगले जटिन अकुलायल।

गीत ४

जट : लबिकऽ चलिहें गे जटिन लविकऽ चलिहें गे ।

जइसे लबे काँच करचिया वइसे लविकऽ चलिहें गे ॥

जटिन : नहिये लबबौ रे जटा, नहिये लबवौ रे ।

हम तऽ बाबाके दुलारि धिया ऐंठिके चलबौ रे ।

जट : लविकऽ चलिहें गे जटिन लविकऽ चलिहें गे ।

जइसे लबइ बेंतके छड़िया, वइसे लविकऽ चलिहें गे ॥

जटिन : ऐंठिकें चलबै रे जटा एंठिक चलबौ रे ।

हम त बाबाके दुलारि धीया, तनिकऽ चलबौ रे ॥

जट : डइनियाँ देखतौ, गुनमा फेकतौ, मारिये देतौ गे ।

आगे बाबाके समपतिया जटिन, के भोगतौ गे ॥

अन्हार/प्रकाश । खाट पर जट जटिन सुतल ।

गीत ५

रामा रहे लागलै जटवा-जटिनियाँ हो ना ।

रामा कहियो काल होबे खन खनियाँ हो ना ॥

रामा एक दिन भोरुका कहनियाँ हो ना ।

रामा लड़इ लगलै जटवा(जटिनियाँ हो ना ॥

पुनः अहार । प्रकाश । खाट पर जट सुतल । जटिन उठल मुदा आंचर जटवाक हाथ मे ।

गीत ५ **(दोसर भाग)**

जटिन : भोर भेलइ रे जटा भिनसरवा भेलइ रे

कोइली बोललै रे जटा कोइली बोललै रे

जटवा छाड़ि देही अंचरवा

हम त अँगना बहारबै रे ॥

जट : मैया वहारतै गे जटिनियाँ, बहिनियाँ बोहारतै गे ।

जटिनी आजुके रोहिनियाँ हम तऽ पलंगवे गमैबे गे ॥......

जट : हमे तोरा पुछियौ गे जटिनीक

दिल से गे, जटिन परेम से गे ।

झुमका कहाँ हेरइले गे ?

जटिन : सारी राति रे जटवा, तोहरे बिछौनमा रे

जटवा तोहरे लगीचवा रे !

जटवा भिनुसरवामे तोहरे मैया चौरौलकौ रे ।....

जटिन : टिकवा जब-जब मंगलियौ रे जटा, टिकवा काहे ने लौले रे ॥

अरे वाली उमरिया रे जटबा, टिकवा काहे ने लौले रे ॥

जट : टिकवा जब-जब अनलियौ गे जटिन, पौतीमेकऽ धएले गे ।

तोहर वाली उमरिया गे जटिन, टिकवा काहे न पेन्हले गे ॥

जटिन : हँसुली जबःजब मंगलियौ रे जटा, हँसुली काहे ने लौलें रे।
हमर वाली समैया रे जटबा, हँसुली काहे न लौले रे।

जट : हँसुली जब-जब अनलियौ गे जटिन, तक्खापरकऽ धएले गे
तोहर वाली समैया गे जटिन, हँसुली काहे न पेन्हले गे।

अन्हार। प्रकाश नट पर।

नट : जट जटिन के वीच मे भैया खटपट बझल बेजोड
बाबा के दुलारी धीआ, मनबय जट पुरजोड।

गीत ६

जटिन : धनमा कुटइते जटवा, मारलक मुसरवेके मार।
सेहो विरोगवे रामा जाइ छियै नैहरवा

जट : निम्मन-निम्मन टिकवा जे लैलिये जटिन ले
सेहो जटिनिया छोड़ि नैहरबा तों जाइ छे।

जट : चीनमा छिटलियौ गे जटिनियां चीनमा छिटलियौ ।
तू जाइ छै नैहरवा चीनमा के कटतै गे ?

जटिन : मैयो कटतौ रे जटवा बहिनियां कटतौ रे।
अबरी रे समइया हम त नैहरे गमैबै रे॥

जट : घिउरा फड़लौ गे जटिन, झिंगुनी फड़लौ गे,
तू चल जेबही नैहरवा, घिउरा के बेचतौ गे ?

जटिन : मैयो बेचतौ रे जटवा, बहिनियां बेचतौ रे।
अबरी रे समइया सखी संग झूमर खेलबै रे॥

अन्हार। पुनःप्रकाश नट पर पडैत।

नट : लाख मनौलक जिद्दी जटिन, नैहर डेग बढौलक,
नदीक धारमे पारक चिन्ता मलहवा के गोहरौलक।

गीत ७

जटिन : भैया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार
थारी देबै एवा-खेवा लोटा देबौ इनाम
भैया मलहवा रे उतारि दही झिमनापुरके घाट

मलाह : नहि हम लेबौ एवा-खेवा, नहि लेबौ इनाम।
बहिनी बटोहिनी गे, खोजिले गे दोसर घटवार।

जटिन : खसी देबौ एवा-खेवा, पाठी देबौ इनाम।
भइया मलहवा रे, उतारि दही झिमनापुरके घाट।

मलाह : नहि लेबौ हम एवा-खेवा, नहि लेबौ इनाम।
बहिनी बटोहनी गे, खोजि लेही दोसर घटवार।

जटिन : बड़ दुखछल छी, नैहरा जाइ छी
जटा से खाइके मार।
कल जोड़ैछी, गोर पड़ैछी, हमरा करि दिए पार।
भइया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार।

मलाह : तोरा देखि कऽ माया लगै,
जिया फाटइ हमार।
जे कइलें से नकि नइ कइलें,
चलें करि दियौ पार।

जटिन : भइया मलहवा रे, नइया लगादे नदियाके पार।
बहिनी बटोहनी गे, चलें करि दियौ पार।

अन्हार। पुनःप्रकाश नट पर पडैत।

नट : नटिन वियोगे छटपट जटवा, सभ किछु सुन्न लगैछे,
अपने घर छै काट छुटल, पल पल मन पडै छै।

गीत ८

जट : हाथी पर के हौदा बिकाय गेल गे जटिन, तोरे विनु
तोरे बिनु हमहुँ वेकल भेलौं गे जटिन, तोरे बिनु
तोरे बिनु महल उदास भेल गे जटिन, तोरे बिनु
तोरे बिनु अंगना मे दुभिया जनमि गेल, गे जटिन,
सेजिया पर मकड़ा बिआय गेल गे जटिन, तोरे बिनु

अन्हार/पुनः प्रकाश । नट पर पडैत ।

नट : **रुसि क भागलि जटिन प्रिय,जट वेकल बहुरायल,**
एम्हर खोजए, ओम्हर खोजए, नाना भेष बनाएल ।
नटी-इहे होइछै मनसाके बानी,अपने करम पछताबे ।
घरबाली पर हुकुम चलाबे,लक्ष्मीके ठोकराबे ।
नट-ठीक कहै छी नटी हमर,अहां सदृश कत्त पाएब,
जटबा छै अबोध प्रिय,अहां घर छोडि नै जाएब ।

गीत ९

जट : सुन मोर जोगिया, सुन मोर भाइ
इहो नगरमे जटिन मोर आइल ?
सुनमोर भइया, सुन गे दाइ,
यही नगरमे जटिन मोर आइल ?

मोसाफिर : सुनमोर जटवा, सुन मोर भाइ,
इहे नगरमे जटिन नहि आइल ।

अन्हार । प्रकाश

गीत १०

जट : दही लेब ? दही लेब ? मिठगर दही लेब ?

गामक स्त्री : तोर केकर औंटल दूधवा ?
तोर केकर पौरल दहिया,
तोहर सड़ल गन्हाय छौ दहिया
तोहर खट्टा महकौ दहिया ।

जट : सास-ससुरकें औंटल दूधवा
माय, सांची दूधके दहिया
माय, बड मीठ लागै दहिया,

ग्रामीण स्त्री : अगे नहि लेबौ, नहि लेबौ
तोहर कोय ने पुछै छौ दहिया ।

सिपाही : हमहूँ त छियै गुवालिन, मालिकके सिपाही
मारि डण्टा, फोड़ि के कोहा, खाय लेव दहि-दूधवा ।

जट : इहो मत जानिहे सिपाही असगर गुवालिन
मारि कोहा तोड़व थुथना,
राति रहौं कुंजवन, दिन बेचौं दहिया,
घेघा सिपाहीके नइ देब दहिया
कोय ले गे गहिकी बेची दहिया ।

अन्हार प्रकाश

गीत ११

जट : ससुरे भैसुरे मोर जाल बुनै ना
अकसर बलमुआ मोरा माछ मरैना ।
माछ ले हे, माछ ले हे, गहिकी बेटी,
माछ ले हे, माछ ले हे ॥

ग्रामीण स्त्री : आहे कौने मछरिया केर गोढिन हे ?

जट : आहे रेहुआ मछरिया केर गोढिन हे ।

ग्रामीण स्त्री : आहे गहुम के कै खूटे माछ देवय हे ?

जट : आहे, गेहुमा के तीन खूटे माछ देवय हे ।

ग्रामीण स्त्री : तोर मछरी बनबै नइ जानियौ
धुए नइ जानियौ,
खबैयाके खियावै नइ जानियौ

धियापुता परबौधै नइ जानियौ
गोढिनियां गे।

अन्हार । पुनः प्रकाश नटपर ।

नट : खोजि खोजिकऽ थाकल जटवा जटिन विनु मुरझायल,
तखने नजरि पर अएलै जटिनिया, असली रुप मे आयल ।

नटी : की बुझलिऐ जटिन ओकरा हपसि क धरतै ना ।
मनमे गरल दरद छै नटबा, दुर दुर करतै ना ।

गीत १२

जटिन : दूर दूर रे जटा। दूर रहिहें रे जटा
सड़ल चाउर रे जटा।
राख छाउर रे जटा।
सड़ल तीमन रे जटा।
दूर रहिहें रे जटा। दूर रहिहें रे जटा।

जट : दूर दूर गे जटिन। दूर रहिहें गे जटिन।
सड़ल चाउर गे जटिन।
राख छाउर गे जटिन।
बसिया रोटी गे जटिन।
सड़ल तीमन गे जटिन। दूर रहिहें गे जटिन।
चोटिया गुहइते चलि अबिहें गे जटिन।
सेजिया सजैबते चलि अबिहें गे जटिन

जटिन : जुलफी सम्हारैत चल अविहें रे जटा।
धोतिया पेन्हैत चल अबिहें रे जटा।

अन्हार । पुनः प्रकाश नट नटी पर
नगाडाक धुन पर कनेक काल दुनू नचैत

नट : कहैछै जे एहिना होइछै सांइ बौह के झगडा
बीच मे पडि कऽ गामक लोक अनेरे बनैए लवडा ।

नटी : अपनो घर त सएह हाल अछि,अनका कोन उपदेश
जटिनके दुलरुवा जटबा,आब चलल परदेश ।

गीत १३

जट : मोरंग मोरंग सुनियै गे जटिन,
मोरंग हमरा जाये दही गे जटिन।
मोरंग से हँसुली लऽ अयवौ गे जटिन
तोहरे पहिराए हम देखब गे जटिन।

जटिन : मोरंग मोरंग सुनियौ हो जटा
मोरंग देस जनु जाहु हो जटा
मोरंग के पनियां कुपनियां छै हो जटा
लागि जयतौ कोढ करेज हो जटा।
उलटियो ने आवे देतौ हो जटा
पलटियो ने आबे देतौ हो जटा
रहि जाही रे जटा नैना के हजूर।

जट : तोहरे ले लेवौ जटिन मोरंग से टिकवा
ओही मे झमकाइ तोरा देखव से जटिन
मोरंग हमरा जाय दही गे जटिन।
मोरंग हमरा जाय दही गे जटिन।

जटिन : अते जे कमैले जटा की भेलौ ना
सुनु मोर जटवा,
जटिनके मंगवा उदास लागे ना

जट : टिकवा जब जब लौलियौ गे जटिन
टिकवा काहे ने पेन्हले गे
जटनी गे सभामे ललचौले गे

टिकवा विनु ।

जटिन : जाहो ते जाहो रे जटवा, देस रे विदेस,
मोरंग क टिकवा लेने आवहु हो रा

अन्हार । पुनः प्रकाश नट पर ।

नट : **मान मनौबल कऽ कऽ जटवा गेलै मोरंग कमाय,**
एम्हर बेटा भेलै वेमार,जटिनियां वैद्यसं पुछए उपाय ।

गीत १४

जटिन : रघुदासके अँगा-टोपी, रघुदासकें अंगा-टोपी
तोहरे देवौ रे बैदा, तोहरे देवौ रे वैदा
रघुदास के दियौ न जिआय ।

वैद : रघुदासके अंगा-टोपी, रघुदासके अंगा-टोपी
हमे की करबै गे दिदिया, हमे की करबै गे दिदिया
रघुदास तँ सडले गेन्हाय ।

जटिन : रघुदास के हाथके बलिया, रघुदासके हाथ के बलिया
तोहरे देवौ रे वैदा, तोहरे देवौ रे वैदा
रघुदास के दियौ ने जिआय ।

वैद : रघुदास के हाथ के बलिया, रघुदासके हाथ के बलिया,
हमे की करबै गे दिदिया, हमे की करबै गे दिदिया
रघुदास त सड़ले गेन्हाय ।

अन्हार । पुनः प्रकाश नट पर ।

नट : **बेटवा भेलै चंगा, मनमे जटवा बसलै ना,**
जटवा के वियोगे जटिनियां अहुरिया काटै ना ।

नटी : **चललै पिया उदेश जटिनियां,दर दर भटकै ना,हो रामा,दर.....**
कोने पापे पिअबा बिछुडलै कि दुनियां बिजुबन लागै ना,हो रामा,दर....।

गीत १४ क (थपल गेल)

जटिन : हे रे सोनरबा भाय, कही दही जटबाके उदेश
जहिया से गेलै निरदैया, नै कोनो संदेश
पल पल काटे राति अन्हरिया,दिनो लगे भयाओन
नै चाही मंगटीका कंगना,पिअबा अपन सोहाओन ।
हे रे.........।

सोनार : हे गे जटिनियां दाय,छोड जटके आस,
गरबा जोखि जोखि हंसुली पेन्हैबौ,चल हमरे साथ ।

जटिन : हे रे सोनरबा भाय,रे अगिया लगैबौ तोरे हंसुलिया
बजर खसैबौ तोरे साथ ।
रे मोर पटा पुरबे नोकरिया
रहबै पटे के आस ।
बरह बरस हम आंचर बान्हि रहबै
रहबै जटे के आस ।
रे तोरास सुन्नर हमरो जटबा
बटिया चलैत लचि जाय
रे तोरास सुन्नर हमरो बलमुआ
चन सुरुज छपि जाए ।

थाकि हारि क जटिन अपन घर आबि जाइत अछि ।ओसारा पर ओगठि जटक स्मरण करैत हिंचुकि हिंचुकि कानए लगैछ ।

गीत १५

जटिन : जाहि बाटे पियवा गेलै, दुभिया जनमि गेलै

बटिया जोहइते वीजूवन लागल रे की । आहे मइया ।

पियवा मोरंग गेलै, हमरा से कही गेलै, आहे दिदिया ।

फूल लागल कंगना लेने अइथिन हो राम ।

मांगे के टिकबा लेने अइथिन हो राम ।

रचि रचि जटिनके पेन्हयथिन हो राम ।

जट बिनु लागे दुनियाँ अन्हारे हो राम

बेटा सेहो घरस बाहर आबि माय संगे हिंचुक लगैछ । तखने दहिन कातस माथपर मोटरी लेने जटक प्रबेश । लगमे आबि घरबाली आ बेटाके एकटक देख लगैछ ।प्रकाशक घेरा दुनू पर फूट फूट पडैत छैक । दुनू चरित्र स्थीर भ जाइछ । प्रकाशक घेराक संग नट नटिनक प्रबेश ।

(नट नगाडा के सुर तालमे बजबैछ । नटिन सुरताल पर नाच लगैछ । नट के चारु कात गोल घेरामे नटिनक नृत्य) ।

नटी : वारह बरिस पर पिअबा अएलै दुअरिया हे

जटिन के खातिर ।

त्यागी देलकै मोंरंग नगरिया हे ।

जटिन के खातिर ।

नट : चलियौ ने आब नटिन अपन एकचरिया हे ।

जटिन के खातिर ।

चमक दियौ मिलन के इजोरिया हे

जटिन के खातिर ।

दुनु नचैत नचैत मंचस बाहर चलि जाइछ ।आब स्थीर चरित्र चलायमान भ उठैछ । ओम्हर प्रकाशक घेरामे जटिन अकानैत जटक लग अबैछ । खुशी सं आंखि छल छला जाइछ । पयर पर झूकि प्रणाम करैछ । माथ परक मोटरी, छाता लऽ घर दिश बढि जाइछ । जट बेटा के छातीस सटा लैछ । जटिन पानि लऽ अबैत अछि, जट पयर पखारैछ । दुनू एक दोसराके आगां ठाढ भऽ नोरायल आंखिए एक दोसराके देखैत अछि ।

गीत नं.५ क एक टुकडीक पुनरावृति होइछ ।

गीत ५ के पुनरावृति

जटिन : टिकवा जब-जब मंगलियौ रे जटा, टिकवा काहे ने लौले रे ॥

अरे वाली उमरिया रे जटबा, टिकवा काहे ने लौले रे ॥

जट : टिकवा जब-जब अनलियौ गे जटिन, पौतीमेकऽ धएले गे ।

तोहर वाली उमरिया गे जटिन, टिकवा काहे न पेन्हले गे ॥

जट जेवीसं लाल डिव्वा निकालैत अछि । ओकरा खोलि मंगटिका बहार कऽ जटिन कें पहिरा दैछ । दुनू नृत्य मुद्रा मे आवि जाइछ ।

गीत १६

आरे बाली उमेरिया रे जटबा
टिकबा हम पहिरलौं रे
टिकबा हम पहिरलौं रे रे जटबा
टिकबा हम पहिरलौं रे
आरे बाली उमेरिया रे जटबा
टिकबा हम पहिरलौं रे

नचैत नचैत जटिन,जटक बांहिमे आबि जाइत अछि । दुनू प्रिज भऽ जाइछ।

अन्हार

□□□

सूली पर इजोत

(मंचपर अन्हार। प्रकाशक घेरा मंचपर प्रवेश करैत एकटा अधवयसू पर पड़ैत अछि। पएजामा, कुर्ता, काँखतर झोड़ा लटकल। मुदा, चिंतित सन। पृष्टभूमिमे संगीतक ध्वनि मंचक बीचमे अबैत। ओ अधवयसू ठमकि जाइत अछि। किछु गुनधुन करैत लगैत अछि। मुदा, एना जे किछु सोचि रहल हो आ' तकरा माथ झटकि खारिज कए दैत हो। कनेक काल ई क्रम चलैत रहैत अछि।

अधवयसू मंचक आगू भाग दिश ससरि जाइछ। हावो-भाव एना जे ओ किछु बाजय चाहैत हो, लोकक़ँ किछु सुनबय चाहैत हो।)

अधवयसू : *(दर्शक दीर्घा दिस देखि)* बड़ बौआएलहुँ रने-बने। कहाँ भेटल जीवन हमरा। कहाँदन जीवन कुरूप होइछ, पाखण्ड होइछ, धोखा होइछ। ठकैत अछि लोक, जँ सएह तँ किए मारिकाटि, युद्ध-सन्धि, छीना झपटी ! कहु किए ई छीना झपटी ? जीबाक लेल ने ! *(स्वर तेज भए जाइछ)*

पृष्टभूमिमे एकटा आवाज -

अहाँ बाजी, भूकी अथवा चिचिआ कए संसार माथ पर उठाली कोनो फर्क नै पडतै, अहाँ इन्कलाब लाबि नहि सकैछी।

अधवयसू : *(चौंकि)* के अछि ? ककर हिम्मत भेलैए जे हमर पुरुषार्थकेँ ललकारैत अछि।

ओएह अवाज -

गति वैह हैत जे भेल रहै कहियो

जीविते सूलीपर चढा देल गेल कोनो ईशाकेँ !

मनुक्खकेँ मनुक्खेटा भ' कऽ रहबाक हेतु

कहब, अपराध भ' गेल अछि।

तेँ हम विश्वस्त छी -

अहाँ कोनो तरहक बदलाओ लाबि नहि सकैछी ?

अधवयसू : *(विचलित होइत)* प्रश्न उठैछ -

तखन जड़तामे जीवाक अर्थ कोन ?

स्वर पूर्ववत् -

जिनगीक तेहने शब्दक अर्थ देबाक परिणति थिक

इन्कलाब - एकटा बदलाओ, एकटा नव बाटक अनुसन्धान।

मुदा सामाजिक जड़ताकेँ तोड़बाक हेतु बढ़ैत

किछु जोड़ा पैरक धमधमाहटि

कानमे तूर ठूसि मस्त निन्नमे सूतल

किंवा आराम करैत एहि युगकेँ

कोनो असरि नहि पहुँचा सकैछै।

अधवयसू : हम मानैत छी -

कोनो नवीनताक पहिल किरिनकेँ

जाड़ मासक भोर जकाँ

छातीसँ सटौने गर्माहटक अनुभूतिक

अपन फूट आनन्द होइछ,

आ तएँ मुट्ठीभरि किरिनक धाहीक बलपर

गर्म दिनक कल्पना सोनितमे

प्रवाह अनैत छैक

आ इन्कलाबक नारा कोनो नव क्रान्तिकेँ

सूत्र-पातक हेतु पृष्टभूमि बनि कए ठाढ भए जाइछ।

पृष्टभूमि स्वर -

बरु इएह सूत्रपात करबाक सूत्र
अहाँक चिचिऔनीकेँ अर्थ दैत अछि
अहाँक मनुष्यताक रक्षा करैत अछि।
नहि तँ, कनेक सोचिऔ ?
हरि सकबै गाममे जुआन बेटीक पीड़ा भोगैत
कोनो बापक दर्द ?
घरखर्चीक जोगाड़मे घरवालीक सौदा करैत पतिक मजबूरी ?
सत्य तँ ई थिक बन्धु !
बेनगन समाजक किरदानी
मान्यता प्राप्त कए चुकल अछि
बालात्कार, हत्या किंवा चोरी डकैती
संस्थागत भए गेल अछि।
तखन अहाँ ककरा लेल चिचिआएब ?
जाति, धर्म, भाषा, भेषक नामपर
खण्ड, खण्ड भए अपन सतीत्वक सौदा करैत
कोनो नगर कन्याक हेतु, से
ककरा पक्षमे अवाज उठएबाक अछि ?
भ्रष्टाचार, घूस, अत्याचार किंवा
मानव अधिकारक खुलेआम होइत उल्लंघन हेतु ?
वेरोजगारी, सोर्स अथवा घर बैसल
दरमाहा उठएबामे चसकल हाकिम सभक हेतु ?
ककरा हेतु ?
की अहाँकेँ लगैए-सूली चढि मसीहा बनि जाए।
नहि बन्धु नहि !
अहाँकेँ सूलीपर चढा आत्महत्या प्रमाणित कए देल जाएत।

अधवयसू : तखन ?
पृष्टभूमिक स्वर -
मुट्‌ठी भरि किरिनक बलपर
विराट अन्हारसँ लडबाक हेतु
अनुगुंजित अहँक इन्कलाबक नारा
अन्हारमे भेतिआ कए दम तोडि देत !
आ' ओ मुट्‌ठीभरि किरिन बेताल जकाँ
सूली पर जा टंगा जाएत।
आइ जरुरी छै ओहन इन्कलाबक
जे सूली पर टांगल मुट्‌ठीभरि इजोतकेँ उतारि
सगरो संसारमे छिडिआ दैक,
खूजि जाइक लोकक आँखि
देखि सकैक अन्हारमे ताण्डव नाच करैत अपन छायाकेँ
बूझि सकैक जिनगीक अर्थ
छुटिआ सकै,-मनुष्यता आ' नृशंसताक भेद।

अधवयसू : हम लाएब जिनगीकेँ। हम जरूर लाएब !
पृष्टभूमिक स्वर -
तें एखन मात्र आँखि चाही
आ' चाही हिम्मत आ' विश्वास
लोकमे जिनगी बाँटि सकबाक ऊहि
आ' तकरा लेल उतारय पड़त
सूली पर टांगल इजोतकेँ।
पृष्टभूमिमे "उतार पडत सूली पर टांगल इजोतकेँ" बेर-बेर प्रतिध्वनि होइछ।
संगीतक झंकार बढ़ैत चल जाइछ आ' एकाएक बन्द भए जाइछ।
संगीत बन्न होइते मंचपर इजोत पसरि जाइछ।

अधवयस् : हँ, हम लाएब ग' इजोतकें। जे जीवन एतेक सुन्दर आ' आकर्षक हो तकरा पएबाले किछु कएल जा सकैछ। हम लाएब, जरुर लाएब !

(अधवयस् जखन चलए लगैछ। मंचपर फेरसँ अन्हार होबय लगैत छैक। संगीत फेर सँ शुरु होइछ, मुदा डेराओन। अधवयसूक। डेग ठमकि जाइछ। प्रकाशक गोल घेरामे ओकर चेहरा पर वेचेनी स्पष्ट देखि पड़ैछ।

अधवयस् : *(आश्चर्यसँ)* अएं, आब की भेल ?

एकटा प्रकाशक घेरा दोसर कोनमे पड़ैत छैक। एकटा मुखौटाधारी ठाढ़ अछि। पैघ-पैघ आँखि, लपलपाइत जीह। विभत्स पहिरन। अधवयस् एकटक ओमहर भय आ' जिज्ञाशासँ देखैत अछि। हिम्मत कए ओकरा पूछैत छैक – रे, तों के छें ?

मुखौटाक मुद्रा आर भयानक भए जाइछ।

'बाज ने, के छें तों ? हमरा जल्दी अछि आ' तों बाट छेकि ठाढ़ भ' गेलें। की छौ तोरा मन मे ?

मुखौटाबाला बजैत अछि – हम जीवन छी।

अधवयस् : कत्तक जीवन, घर कत्त छौ आ एत्त राकस जकाँ आगाँमे ठाढ़ किए छें ?

मुखौटावला : कत्तक जीवन, हम सभक जीवन छी। जीबैत लोकक जिनगी !

अधवयस् : *(एक बेर रुप रंग निहारैत)* माने.....।

मुखौटावला : *(बातके लोकैत)* हँ, हमही छी तों, तों सभ। सभक आत्मामे वास कएनिहार जीवन छी हम। *(अधवयस् गुम्म भए जाइछ। ओकर मुख मुद्रा एना भए रहल छै जेना ओकरा मुखौटाक बात पर विश्वास नहि भए रहल हो।)*

हमरा बूझल अछि-तों गुनधुन कए रहल छें। हम जे कहैत छी ओ

सांच थिक अथवा मिथ्या। रे बूड़िबक हम यथार्थ छी, सत्य छी-इएह रुप छै जीवनक।

अधवयस् : नहि, ई नहि भ' सकैछ। एहन विद्रूप रुप जीवनक नहि भ' सकैछ।

मुखौटाबला : तँ भाए, खोजैत रह-सुहनगर आ' ललितगर जीवन। कहिओ ने भेटतौ।

अधवयस् : हमरा नहि ठक। तो कोनो मायावी लगैत छेँ। हमर उद्देश्कें छेकबाक हेतु भ्रम सृजन कए रहल छें। हमर यात्राकें भंग करए चाहैत छें।

मुखौटाबाला : *(जोरसँ ठहक्का मारैत)* जो, तों सभदिन बुड़िबके रहि गेलें। तएँ ने आइधरि कतौ तोरा ठौर नहि भेटलौ। तों सहज, सुन्दर आ' आकर्षक जीवनक खोजमे रहलें आ स्वयंकें बेर-बेर मारैत रहलें। जो, फेरसँ मर।

अधवयस् : जो, जो बुझलियौ जए बेर हम जिनगीक लग पहुँचैत छी, एहिना भोतिअएबाक प्रयास कएल जाइछ। हमरा मोनपर जे छाप पड़ल अछि, तों हटा नहि सकै छें – किन्नहु नहि।

अधबयस् दूनू हाथ कानपर राखि आँखि मूनि चिचिआ उठैछ-किन्नहु नहि। ताबत प्रकाशक गोल घेरा गायब भए जाइछ। आ' पूर्ण प्रकाश मंच पर छिड़िआ जाइछ। मंचपर मात्र अधवयस् अपनाकें पबैत अछि-एसकर।

अधवयस् : (दीर्घ साँस लैत) ओह, कोना क' भरमा देने छल मखौटा। जीवन कतौ एतेक विद्रूप होइक।

देह सीहरा देने छल चण्डलबा। जे देखल,
सरिपहुँ विकृत छल, विखण्डन छल, भ्रमजाल
छल। जीवन तँ जीबाक लालसा उत्पन्न करैछ।
ओकरा ताकय तँ पड़त। से कत्त ताकल
जाए-कोम्हर अछि हमर जिनगी-हमर इजोत!

मंचपर एकटा ४०-४५ वर्षक स्वेतवस्त्रधारी युवकक प्रवेश होइछ। हाथमे दीप लेने। पहिरन स्वेत धोती, स्वेत कुर्ता आ स्वेत चादर अधवयसकेँ कनेक विचित्र सन लगैत छै ओ व्यक्ति। पृष्टभूमिमे संगीतक शांत रससँ पूर्ण ध्वनि आबि रहल छैक।

अधवयस् : *(आगाँ बढ़ि)* श्रीमान् अपने कत्तसँ आबि रहल छी?

पुरुष –१ : हम मृत्यु भुवनसँ बाहरक लोक नहि छी।

अधवयस् : *(ओकर उत्तरसँ कनेक खौंझाइत)* से तँ हमहुँ देखिए रहल छी। मुदा कोनो ठेकान तँ हैत ने!

पुरुष – १ : किएने, खूब अछि। हम आत्मा छी।

अधवयस् : (फेरसँ आश्चर्य चकित होइत) आत्मा?

पुरुष –१ : हँ यौ, हम आत्मा छी।

अधवयस् : तखन ई दीप बारि की ताकि रहल छी?

पुरुष – १ : इजोत!

संगीतक एकटा झंकार। अधवयस् हतप्रभ सन भए जाइछ। अवाक् मुहबौने। अहाँ, एना आश्चर्यमे किए पड़ि गेलहुँ, की हमरा बात पर विश्वास नहि भेल अछि?

अधवयस् : *(सम्हरि)* नहि, से बात नहि छैक। हम एहि लेल सोचमे पडि गेलहुँ-अहूँ के इजोते चाही!

पुरुष – १ : हँ, यौ। देखू ने कत्त ने कत्त हेरा गेल अछि। हम तकरे खोजमे वर्षहुसँ भटकि रहल छी। *(कनेक चुप्पी)* आ अहाँ?

अधवयस् : हमहु तकरे खोजमे छी।

आब चौंकबाक वारी पुरुष-पहिलक छलैक

पुरुष – १ : अहूँ कें?

अधवयस् : हँ, हम कैक वर्षसँ जीवन खोजि रहल छी। हमरा नहि बूझल छल जीवन आ' इजोत एक्के वस्तु छैक। तें कनेक बेसी भटकय पडल अछि।

पुरुष – १ : तँ की आब बूझि गेलिऐ जीवन कत्त अछि, से?

अधवयस् : हँ, जखन ई बूझि गेलहुँ जे इजोते जीवन छै तँ इहो बात आब फरिछा गेल अछि।

पुरुष – १ : की फरिछा गेल?

अधवयस् : (दर्शनिक मुद्रामे) इजोत सूली पर टंगायल छैक।

पुरुष –१ : सूली पर

अधवयस् : हँ, सूली पर

पुरुष – १ : सूली कत्त छै?

अधवयस् : सएह ने बूझल अछि।

पुरुष – १ : तखन, एतेक बुझियो क' बेकार भ' गेल ने!

अधवयस् : नहि बेकार किए हैत। जा धरि इजोत नहि, ता धरि धुकधुकी नहि। ओकरा खोजय तँ पडतै।

पुरुष – १ : कत्त खोजब?

अधवयस् : चाहे जत्त खोजय पडैक। हँ, बरु ताबत स्थिर सँ सोची, थाकिओ गेल छी। आऊ अइ चबूतरा पर कनेक बैसल जाए।

दुनू गोटे सहटि गाछतरक चबूतरापर बैसैत अछि।

अधवयस् : भाए, जीवन, इजोत आ' आत्माक कोन सम्बन्ध?

पुरुष – १ : साफ सम्बन्ध छैक। इजोते जीवन छैक, आत्माक धुकधुकी छैक।

हमर भटकबाक मुक्तिए ताही जीवनमे अछि। हमरा नव जीवन तखने भेटत।

अधवयस् : तखन ई दीपकक कोन प्रयोजन ?

पुरुष – १ : जत' सभतरि अन्हारक साम्राज्य हो, अपनो बाट देखाइत नहि हो, ओत्त कोनो वस्तुकें तकबाक हेतु प्रकाश तँ चाही, से ई दीप हमरा बाट देखबैत अछि-लक्ष्य धरि पहुँचबाक हेतु।

अधवयस् : मुदा, हम तँ बड सहज बुझने छलिऐ जीवनकेँ पएबाक बाट।

पुरुष – १ : तें ने अहाँ वर्षहुसँ भोतिआ रहल छी, ने स्वयं कतौ ठौर ध' सकलौं आ' ने अपन सखा-सन्तानकें।

अधवयस् : *(आश्चर्यसँ)* ई बात अहाँकें कोना बूझल अछि ?

पुरुष – १ : मनुक्खक उदास चेहरा देखि हम ओकर व्यथा – कथा बूझि लैत छी।

अधवयस् : तखन तँ आरो बात.....।

पुरुष – १ : हँ, प्रत्येक सुखान्त क्षण आगाँमे अबितो अहाँ लेल अबूह बनैत गेल अछि। खण्ड-खण्डमे प्राप्त अहाँक सुख-जीवनक यथार्थमे दम तोडि रहल अछि आ' तें अहाँ भटकि रहल छी इजोतक लेल।

अधवयसूक आँखि डबडबा जाइत छैक। ओ गमछासँ आँखिमे भरि आएल नोरक बुन्नकें पोछैत अछि। "दुर मरदे ! तों तँ कमजोर मनुक्ख जकाँ हारि गेल लगैत छह जखन इजोतक पता तोरा बुझल छह तँ अवश्य खोजि निकालबह ने! अधवयस् कृतज्ञता भरल आँखिसँ पुरुष-१ दिश तकैत अछि। संगीत कारुणिक भए गेल रहैछ। ओ पुरुष-१क हाथ पकड़ि उठैत अछि। पीठ पर हाथ धए आगाँ बढबाक उपकम करैत अछि कि पुरुष-२ क प्रवेश होइत अछि। देखिते ई दूनू ठमकि जाइछ पुरुष – २ ठेंठ धोती, गोलगला, माथमे गमछा बन्हने कान्ह पर हर-पालो, हाथमे बढका पैना। धडफडाइत ओही बाटे जाइत। ओकरो नजरि दुनू गोटे पर पडि जाइत छैक। ओहो ठमकि जाइछ।

अधवयस् : *(टोकैत)* भाए साहेब ! कनेक सूनितहुँ तँ.....।

पुरुष – २ : *(बाट कटैत)* बाट छोडू। हम जल्दीमे छी।

अधवयस् : एतेक जल्दी जएबाक प्रयोजन की ? अपने के छी ?

पुरुष – २ : *(अगुता कए)* हम कृषक छी। आ' अन्हारसँ औनायल, इजोतक हेतु भागल जा रहल छी। दूनू गाटे अवाक् रहि जाइछ। एक्के बेर दूनूक मुहसँ बहराइत छैक-इजोतक हेतु !

पुरुष – २ : हँ यौ ! मुदा अहाँ सभ एना चौकलहुँ किए ?

पुरुष – १ : तकर साफ कारण अछि – हमहूँ सभ इजोतेक खोजमे छी।

पुरुष – २ : हमरा कोनो आश्चर्य नहि भेल। जखन सौंसे विश्वमे अन्हारक साम्राज्य हो, मुखौटाक ताण्डव नृत्य होइत हो, इजोत खोजनिहारक कमी नहि अछि। मुदा, अहाँ दूनू बुत्ते इजोत ताकल नहि हैत। दूनू कनेक उदास भए जाइछ।

एक गोटे छी – सुन्दर आ आकर्षक जीवनक अनुसन्धाता। तकर खोजमे लागल छी। दोसर डिबिआ ल' इजोत तकै छी। दुनू दिन कटैत, वर्ष बितबैत अपनाकें मारैत। बूझल अछि – इजोत कत्त छैक ? दुनूमे उत्साहक संचार होइछ

एक्के संग : बूझल अछि !

पुरुष – २ : *(आश्चर्य)* बूझल अछि, अहाँ सभकें ?

अधवयस् : हँ, हमरा बूझल अछि।

पुरुष – २ : कत्त अछि ?

दूनू एक दोसराक मुह ताकय लगैछ। भाव एहन सन जे कही कि नहि।

कहू-कहू निश्चिन्त रहू, हम अहाँ सभ सँ पहिने दौडि कए ओत्त नहि पहुँचब।

अधवयस् : सूली पर टाँगल अछि इजोत।

पुरुष – २ : *(जोर सँ ठहाका मारि हँसैत अछि)* तँ की अहाँक बाँहिमे ताकत नहि अछि जे ओत्तसँ उतारि लए जाएब ?

अधवयस् : *(आश्चर्य सँ)* हमर कथन पर अहाँके कोनो आश्चर्य नहि। की हम गलत कहलहुँ अछि ?

पुरुष – २ : नहि, अहाँ सत्य कहैत छी ।

पुरुष – १ : एकर माने अहाँ जनैत छी जे इजोत कत्त छैक ?

पुरुष – २ : नीक जकाँ, अपन सभ समानक संग ओतए

हम लाब' चललहुँ अछि । अहाँ सभ जकाँ हवामे खोजय नहि ।

अधवयसू : ओह !

पुरुष – २ : हँ, एकटा बात आर बूझि लिअ ! हमरा इहो बूझल अछि, ओ सूली कत्त छैक ।

दूनू : *(फेर आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नतासँ कुदैत)* कत्त छै, सेहो बूझल अछि ?

पुरुष – २ : हँ, यौ । तें ने भागल जा रहल छी । कतौ फेर ने कोनो चण्डलबा ओत्तहु सँ ओकरा हरि लैक ।

पुरुष – १ : के अछि एहन ?

पुरुष – २ : अन्हारक राजा करिया मसान । हरने अछि इजोतकेँ । सूलीपर एखने बन्हने मात्र छैक । ओकर योजना खतरनाक छै ।

अधवयसू : की छै ओकर योजना ?

पुरुष – २ : सूली पर ठोकल इजोतके हाथ-पैरमे काँटी ठोकि टाँकि देतैक आ नीचा उतारबाक सभ संभावना समाप्त कए देतै ।

अधवयसू : धरती पर जे छै, से ?

पुरुष – २ : ओत्त ओकरे नामक मुखौटा सभ अछि । विद्रूप, विभत्स !

अधवयसू : *(आश्चर्यसँ)* मुखौटा सभ ! अर्थात् इएह जीवन छै एतुक्का !

(ओकरा आगाँ पहिलुका मुखौटाबाला दृश्य नाचि उठैछ । प्रकाशकेँ गुम्म कएँ, पुनः ताहि दृश्यके देखाओल जा सकैछ । फलैश बैक जकाँ)

पुरुष – २ : ओ सभ भ्रम थिक । असली तँ वर्षहु सँ सूली पर टंगाएल अछि । हम ओकरा उतारय चललहुँ अछि ।

पुरुष – १ : ओकरा उतारबै कोना ?

पुरुष – २ : ई हर-पालो देखैत छिऐ । आ' ई पैना ?

पुरुष – १ : हँ, देखै छिऐ । मुदा एकरा सभकेँ इजोतक उतारनाइसँ कोन मतलब ?

पुरुष – २ : ई सभ मेहनत, बुद्धि आ लगनशीलताक सम्पति अछि । एकरे प्रयोग सँ हम उतारबै इजोतकेँ ।

अधवयसू : नहि बुझलिऐ किछु ।

पुरुष – २ : बुझबो कोना करबै । जिनगी प्राप्त करबाक लेल ओकर विद्रूपतासँ पहिने लडय पडत । सएह जोगाड़ अहाँ सभकेँ संग नहि अछि ।

अधवयसू : हम आओर नर्भस भेल जा रहल छी ।

पुरुष – २ : हँ सुनू । हर आ पालो सिढ़ीक दुनू ठाठ हैत । बडका पैना पौदान । आ पालो मे जे बान्हल अछि ताहि जौर सँ पौदान बान्हल जाएत । ऐना क' चहरि पहुँचि जाएब इजोत धरि ।

दूनू मुध भए पुरुष – २ क इलम सुनैत अछि ।

दूनू : *(एक्के संग)* की हमहूँ सभ चलि सकैत छी ?

पुरुष – २ : लगैए, अहूँ सभ आब इजोत धरि पहुँचि सकबाक हिम्मति जुटा लेने छी । चलू ।

तीनू आगाँ बढ़ैत अछि आ एक दू डेग चललापर फिज भए जाइछ ।

क्रमशः अन्हार मंचपर पसरि जाइत ।

□□□

आ बौधु बाजि उठल

पात्र–स्थिति

१.	बौधु-(उमेर) ३५ वर्ष	-	चाहक दोकानदार
२.	पुरुष- १ (उमेर ४५ वर्ष)	-	गामक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व
३.	पुरुष - २ (उमेर ४५ वर्ष)	-	गा.वि.स.क अध्यक्ष
४.	पुरुष - ३ (उमेर ४० वर्ष)	-	गामक कुटिल व्यक्तित्व
५.	पुरुष - ४ (उमेर ५० वर्ष)	-	गामक भलमानस व्यक्तित्व
६.	रुपचन्द (उमेर ३६ वर्ष)	-	गामक कुटिल व्यक्तितव
७.	छोटे (उमेर १० वर्ष)	-	बौधुक बेटा
८.	महिला (उमेर ३० वर्ष)	-	बौधुक पत्नी
९	गोराइत (उमेर ४० वर्ष)	-	गा.वि.स.क पिएन

दृश्य - १

(गामक चौक। चौक पर एकटा चाहक दोकान। तीन कातसँ बेंचसभ धयल। दूटा खुरसी, कठघराक एकचारीक भीतर राखल। बौधु भगत चाहक पानि गरम करैत। बेंच पर एक-दू गोटे चाहक चुस्की लैत। ताबत पुरुष १ आ' पुरुष २ क प्रवेश।)

पुरुष १ : की रे बौधुआ ! चाह-ताह छौ कि ?

बौधु : जी मालिक ! बैसल जाओ ! *(बेरा-बेरी भीतरमे धयल खुरसी बाहर आनि लगा दैछ। दुनू चाह पीब'बला पीबिक' चलि जाइछ।)*

पुरुष २ : बौधु ! की छै गामके हाल-चाल ?

बौधु : *(केतलीसँ दुध ढारैत)* हजुर ! अपने गामक परधान छिऐ। सब बात बुझ्फते छिऐ। हम की जनबै हजुर !

पुरुष १ : तैयो तोरा दोकान पर तँ सब रंगके लोक अबैछौ ने। बजैत होतौ बात सब।

बौधु : मालिक, अइअ त' समय काट' बला सभ रहै छै। ओकर बात पर धीआन देल जाए त' सब काम चौपट भ' जएतै।

(दुनूके चाह बढबैछ।)

पुरुष २ : *(चाह लैत)* ठीके कहै हे गोधिआँ। अहुँ धीआपुताबला बात पुछै छिऐ। रे अइठाम त' सब रंगके लोक अबै है। सबके बारेमे सब रंग बजै है। एना जे सबके बात ई कह' लगौ त' एकर रोजी रोटी चलतै ?

बौधु : *(लजाइत सन)* ई त' अपने सभके कृपा है सरकार !

(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश)

पुरुष ३ : *(दुनूके देखैत)* एह, दुनू मालिक एक्केठाम !

पुरुष १ : की बात छौ। बड हकासल-पिआसल बुझाइ छेँ ?

पुरुष ३ : बाते ओएह है, हजुर। आइ कयक दिनसँ पछोड धएने छी। छौ-पाँच टुटबे ने करै है।

पुरुष १ : आब की टुटतौ ? कहि देने छियौ। तोरा नै होतौ। पहिने भागेसरके कहल जा चुकल छै। ओकरा होतै।

पुरुष ३ : ई त अन्याय होतै। दिन-राति खटै छी हम। चुनाव होइ कि पंचैती। गाममें चीत भरै छी हम आ डिलरशीप लेब' बेरमें भागेसरके भेटतै ! की प्रधान जी ?

पुरुष २ : हम की कहियौ ? गोधिआँ जे कहतौ सेहे होतौ।

पुरुष ३ : त' महाजन ! हमरा नहिएँ होतै।

पुरुष १ : तों बराबरि भोजके बेरमें कुम्हर रोपैत अएले ह। तोरा कहि देलियौ नै होतौ। मूड खराब नै कर। *(पुरुष २ सँ)* चलु गोधिआँ।

(दुनूक प्रस्थान)

पुरुष ३ : देखलही बौधु ! बडका सबके ताल ।

बौधु : हम की देखियौ ।

पुरुष ३ : केनाक' हमरा निरैस देलक । अच्छा ठीक है । फेर अबै है चुनाव । हमरो नाम हरिश्चन्दर है ।

अन्हार

दृश्य २

(बौधुक चाहक दोकान । भिनसरक समय । बाट ध' गौंआसभ अपन-अपन काज करैत जाइत । चाह बनबैत बौधु । एकटा सात-आठ वर्षक बच्चा एम्हर-ओम्हर क सहयोग करैत ।)

बौधु : *(बच्चासँ)* रे छोटे । देखही त' चीनी हौ कि नै ?

छोटे : ठीक है ।

बौधु : कनीक गिलास सबके नीक नाँहित धोले ।

(छौंडा गिलाससभके गरम पानीसँ बगलमे धोअ' लगैत अछि । ताबत पुरुष ३क प्रवेश । बेंचपर बैसि जाइत अछि ।) (पुरुष ३ सँ) की हौ हरिश्चन्दर आइ भोरे भोर केना दोकान पर ?

पुरुष ३ : त' कह ने नै आब' ला । नै अएबौ ।

बौधु : *(नेहोरा करैत)* राम, राम ! गहिंकी त' भगवान् होइ है । भोरक पहिलका गहिंकी त' आओर लक्षनमान !

पुरुष ३ : अच्छा बौधु ! बनाले तोहूँ । जकर हाथ कमजोर होइ-है, सब ओकरे पर लागल रहै है ।

बौधु : छोड' भाइ । चाह बनबियौ ?

पुरुष ३ : ई बात तोरा शुरुएमे बुझक नै चाही ?

बौधु : तौं हमर पहिलके गहिंकी छा, से......।

पुरुष ३ : हाँ, हाँ बुझलियौ । ई चाह उधारी नै रहतै ।

(बौधु चाह छान' लगैछ । ओहि बाटे जाइत पुरुष ४ के हाँक पाड़ि बजा लैछ पुरुष ३) हौ रामधन ! आबह, एक कप भ' जाइ ।

पुरुष ४ : हौ, हमरा जल्दी हबे । प्रधान निकलि जाएत ।

पुरुष ३ : हौ बुझिलियौ । अखुन तोरै पर ढरल हौ परधान । जे जेना दूहि ला ।

पुरुष ४ : *(बेंच पर बैसैत)* देखह हरिश्चन्दर । इहे त खुबी है अयोधी चौधरी मे । "ने माधोके लेना ने उधोके देना ।" तैस आइ भरि गाममे सब मानै है ।

पुरुष ३ : *(बौधुसँ)* एकटा चाह आरो बना दही । (पुरुष ४ सँ) हँ, तीँ सब कैला नै कहबहो । हमरा सबके लेल त'....।

पुरुष ४ : नै, ई हमरे बात नै । आइ गाममे एक्कोटा मुद्दा-मामिला अड्डा-अदालतमे है ?

पुरुष ३ : से त' कम है ।

पुरुष ४ : गाममे शान्ति है, लोक अपन-अपन काम करैअ' । ई शान्ति, प्रेम, ककरा खातिर छै ? इहे अजोधीके खातिर की ने ?

पुरुष ३ : इहे तोहर गेंगिऐ रहै छह । हौ गाममे ओतेक विकास नहियों भेलै त' ककरो हानियो त' नहिए कैलकै । सबके समान दृष्टिसँ देखै है । की हौ बौधु ?

बौधु : *(गिलास बढबैत)* जी, अपने कहिते छिऐ त' ।

पुरुष ४ : देखिहो, अगिलो चुनावमे उहे होतै प्रधान ।

पुरुष ३ : आब हद भ' गेलौ । हौ फेरु प्रधानके बात नै कर' । गाम प्रधान होब'बला सँ सुन्न नै भ' गेल है ।

पुरुष ४ : *(कनेक रोषसँ)* देखह बौधु ! ई केहन आगि लगब'बला बात बजैअ' । हौ के है अयोधीके विरोधमे टिक'बला ?

पुरुष ३ : *(उठैत)* देखह रामधन । समय आब' दहक । देखबे करबहक की !

(दुन् कपक पाइ बौधुके दैत एक कात विदा भ' जाइछ । पुरुष ४ ओकरा जाइत एकटक देखैत रहैछ ।)

पुरुष ४ : बौधु ! हम ई की सुनै छी । एकरा कल्ला नै अलगै छलै । से लगैए ई कोनो अन्हेर करत ।

बौधु : भगवान् बचबथुन अइ गाम के।

(अन्हार)

दृश्य ३

(बौधुक चाहक दोकान। अपराह्नक समय। छोटे आ' ओकर माय दोकानपर। महिलाक उमेर ३० वर्षसँ उपर नहि। नीक देहयष्टि।

बाट ध'क' पुरुष ३ जाइत। दोकान पर बौधुके नहि देखि दोकान दिस सहटि जाइत अछि। ओकरा देखि महिला घोघ कने तानि लैछ।)

पुरुष ३ : *(बेंचके कनेक अपना दिश घीचैत)* की रे छोटे। बाप नै हौ ?

छोटे : बजार गेल है।

पुरुष ३ : कैला रै। ओकरा बुझल नै है गाममे बड़का पंचायत है। कय गामके पंच सब जुटतै चाह त' खुबे विकेतै।

छोटे : ताहीला त चाहपती, चीनी लाब' गेल है। कनी खैनी, गुटका आ' बिस्कुट सिकरेट सेहो लौतै।

पुरुष ३ : एह, तब त' अपनो फैदे है। चाहके संग-संग बिस्कुट। (कनी बिलमि) हँ, एकटा चाह बनाब' कही मायके।

(महिला चाह बनब' लगैछ। स्टोबमे हवा दैत काल बुझाइछै जेना तेल कम हो। छोटेके बजा क' किछु कहै छै। छोटे डिब्बा आ' पाइ ल' क' दोकान दिस जाइत अछि।)

(कनेक सहटि क') हे रघुनाथपुरीवाली। साउस मानै छह की ? कहाँदन राति बड झगड़ा कैलको। *(महिला किछु ने बजैछ। गिलास धोऐत रहैछ।)* नै, कुछो होअ' त बाज। आइए पंचैतीमे राखि देबै। बौधु शुद्ध बुद्धु हओ। किछु ने बजतौ।

महिला : *(गर जाँति)* सब ठीके है।

पुरुष ३ : डरे कहै छह त' निडर भ'क' कह'। हम ठाढ छियो किने। बुढियाके केस ध' क' पंचायतमे ल' अएवै।

महिला : बस करथुन। हमर घरके बात है। हमहीं सब समेट लेबै।

पुरुष ३ : सेहे। हम सब कथीला छिऐ। मौका पड़तै त' तोरा खातिर देखल जएतै।

महिला : *(बेटा गेल बाट दिस ताकि)* मोचरुवा, मरि गेलै कत्त ?

पुरुष ३ : कैला धीआपुताके गारि पढैत छहो। अबिते होतै की ? *(कनेक बिलमि)* रघुनाथपुरवाली, हे कनीक सलाई दा त, बीड़ी धड़वै छी।

(महिला संकोच सँ आगां बढैत अछि आ' पुरुष ३ क हाथ मे सलाई दैत छैक। पुरुष ३ सलाई ल'क' बीड़ी धरबैत अछि। आ सलाई दैत काल महिलाक हाथ दबा दैत छैक। महिला झटकिक' हाथ अलग क' लैत अछि।)

महिला : *(रोषसँ)* केकरो बहु-बेटीके एना नै करके चाही।

पुरुष ३ : गहिंकी सँगे एना रोषसँ बातो ने करके चाही कीने।

महिला : मार बढनी एहन गहिंकी के। अबै है छोटे के बाप त' हम कहै छिऐ।

पुरुष ३ : जा, जा, बौधुआ हमरा की क' लेत। अड्डा-खाना हमही धांगी आ' दोसरमे चौक परक सार्वजनिक जमीनमे ई दोकान। एक्के इशारा पर उठि जएतौ।

(महिला कनेक डेराइत अछि। ताबत् छोटे अबैछै। महिला तीन चारि चमेटा लगबै छै।)

महिला : जुअनढाहा, कत्त' मरि गेल छलेह'। जत' जाएत खेलमे लागि जाएत।

छोटे : दोकान पर भीड़ रहै। हम अपने ल' लितिऐ। दीतै तब ने अबितिऐ।

(स्टोबमे टीप लगा तेल ढारैछ। हबर-हबर हवा द' चाह बनबैछ। एम्हर पुरुष ३ बीड़ी सोटैत रहैछ। ताबत् गा.वि.स.क पिएन रीझन मंडलक प्रवेश।)

रीझन : रघुनाथपुरवाली एक गिलास हमरो दा।

(आ' दोसर बेंच पर बैसि जाइत अछि।)

पुरुष ३ : हं, हं रीझनाके बिस्कुटो दही रे छोटे। परधाने आ' एकरे त चलती है। जगहके भाडामे चाह बिस्कुट। की रे रीझन ?

रीझन : देखू हरिश्चन्दर जी ! हम सब अपन टेंटके पाइसँ चाह पीबै छी। खैराती नै।

पुरुष ३ : तैयो, तोरा सबपर त रघुनाथपुरवाली मेहरबान छौहे – जतेक कचर।

(पुरुष ३ उठैत अछि आ एक दिस विदा भ' जाइछ।)

रीझन : एह, केहन-केहन लोक है गाममे।

महिला : सेहे देखथुन। जे मनमे अबै है बजै है।

(चाह बनाक' रीझनके दैत अछि।)

कहाँदुन बजै है, ई, जे आब दोसर के जीतैतै परधानमे। बाप रे, गामके भूजि देतै।

रीझन : *(चुस्की लैत)* रे, के कहैछौ रघुनाथपुरवाली ! जहिया तक परधान आ रामअसीस बाबू एक है, कोनो माइके लाल किछो नै क' सकतै।

(चाह समाप्त करैत अछि। पाइ दैत छैक आ ओत' सँ विदा भ' जाइत अछि। महिला आ' छोटे चाहक सामग्री सभ ठीक कर' लगैत अछि।)

अन्हार

दृश्य ४

(बौधुक चाहक दोकान। दोकानमे गुटका, खैनीसभ टाँगल। टेबुल पर पाउरोटी। कठघरामे बिस्कुट, सिकरेट, बीड़ीसभ ताहियाक' धएल।

भिनसर ८-९ क अमल। किछु गोटे चाह पीबैत। ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश। एक नजरि दोकान पर दैत अछि। एक गोटेके बैसल देखि प्रसन्न भ' ओम्हर सहटि जाइछ।)

पुरुष ३ : अरे रुपचन भाइ। तोरा त' भरिगाम खोजि लेलियौ, एत' छे।

रुपचन्द : बड़ी काल भेल। चाहो पीली, हम जाइ छी।

पुरुष ३ : नै अन्हेर नै कर नै। तोरासँ बतिआएके है।

(चारू भर चकुआइत अछि। चाह पीब'बला उठि क' चलि जाइछ।)

हँ, आब फैलसँ बतिआएब। बौधु, कनीक करगर दू कप बना।

(बौधु मुँह बिजुका चाह बनब' लगैछ।)

त' भाइ हम सब आब गाममे नै रहु।

रुपचन्द : की भेलौ से ?

पुरुष ३ : रे खाधिके डिलरशीप लेब चाहली – प्रधान नै देलक। सडकमे माटि पर'ला उपभोक्ता बनलै, तैमे नै रखलक। मासटरीमें एकगोटेक घुसिआब' चाहलिऐ नै भेल। आब हम सब खेतके दुबही चिबाउ।

रुपचन्द : ई त ठीक छै भाइ। जहिआसँ रामअसीस आ अयोधी मिललैअ, हमरा तोरा सनके गुंजाइश गाममे नै हौ।

पुरुष ३ : त' हम हिम्मत हारि जाउ।

रुपचन्द : तोरा सन लोक हिम्मत केना हारत। लेकिन दूनू के.....।

पुरुष ४ : की दुनूके-दुनूके रटैछे। कोनो जोगाड त' सोच' पडतै।

(ताबत् बौधु चाह दुनू के हाथमे दैत छैक।)

रुपचन्द : दुनू राम-सुग्रीवके मित्रता है बौआ। टस सँ मस नै होतौ।

पुरुष ३ : *(किछु सोचैत)* बात तँ कठिन छै। मुदा, कलयुगमे राम-सुग्रीवके दोस्ती कतेक दिन ?

रुपचन्द : *(साश्चर्य)* माने ?

पुरुष ३ : माने साफ हौ। दुनूके बीच फूट आन' पडतौ। गंगा-जमुना अलग होतौ तबही काम बनतौ। की बौधु ?

बौधु : *(रोषसँ)* एह, हमरा कोनो मतलब हय। अहाँसब बड़कालोकक बड़का बात।

पुरुष ३ : ई जमीन जे खैरातमे पौने छेँ– साँच बजिते छीन लेतौ ने।

बौधु : हमरा सबके बीचमे नै पाए, जे कर' के हो अपन करु। हम किछु कहै छी !

रुपचन्द : किछु कहबे त' जएबो करबे की ? खिआल रखिहे (पुरुष ३ सँ) त' भाइ, की पलान हौ।

पुरुष ३ : अगिला चुनावमे सोच' पड़तौ ।

(ताबत् रामअसीसक प्रवेश । ओकरा देखि दुनू कनेक सकपकाइत अछि । फेर ठीकसँ बैसि जाइछ । बौधु भीत्तर सँ खुरसी निकालि बाहरमे लगा दैत छैक ।)

बौधु : बैठल जाओ मालिक ।

पुरुष ३ आ रुपचन्द : *(एक्केसँग)* परनाम मालिक ।

पुरुष १ : परनाम ! की बात है हरिश्चन्दर । आइ बैठार जमल है ।

पुरुष ३ : जी ओहिना । अहींके बारेमें सोचैं छी हम सब ।

पुरुष १ : तोरो सबके नीक बात फुराइ हौ ?

पुरुष ३ : एह, मालिक, हमसव एतेक त' अबूझ नै ने छी ।

(रुपचन्दके इशारा करैछ । रुपचन्द जेबी स खैनी आ चून बहार क' लगब लगैछ । ओम्हर बौधु चाह बना पुरुष १ के बढा दैत छैक ।)

पुरुष १ : की सोचै छलें ?

पुरुष ३ : इहे जे अइबेर अहींके परधानमे खडा होब' के चाही ।

पुरुष १ : *(रोषसँ)* गलत बात छै । गोधिआं छैहे त' हमरा बारेमे ई केना सोचि लेलही ?

रुपचन्द : अजोधीबाबू अइ बेर त' भेबे कैलखिन्ह । दोसरबेर अपनेके द' देथिन्ह त' कोन अपराध भ' जएतै ।

पुरुष ३ : आ' अपन-पराय के चिन्हके मौका भेटै है ।

पुरुष १ : नै, ई नै भ' सकै है । गोधिआं नीक जकाँ चलबै है । आ रायो सल्लाह त हमरे लै छै ।

पुरुष ३ : आ भोटो त' अहींके जाइहै किने ! कतेक है अयोधीबाबूके । १५-२० घर, सय डेढ सय भोट । हजार भोटसँ जितै है - के देहै भोट ?

रुपचन्द : आ' पाँचलाखके जे रुपैआ अबैहै - तैस अपन सहयोगीके पाल' के मौको त भेटै है ।

पुरुष १ : रुपैया त गामेके विकासमे जाइहै ने ।

पुरुष ३ : लेकिन पाइ जाइ है अपन आदमीके हाथे । अजोधीबाबूके भाइ, भतिजा, सार बनल है ठीकदार, ओहे उपभोक्तामे, ओहे इसकुलमे, ओहे बोरिंगमे आ' ओहे चाउर बाँटमे ।

रुपचन्द : है एक्कोटा खांटी अपनेके आदमी ?

पुरुष १ : ओहो त' हमरे आदमी है किने ।

पुरुष ३ : इहे भलमनसाहतके त' फैदा उठौने है अजोधीबाबू । काम अपन आ नाम अहाँके ।

पुरुष १ : देख, ई फुटानीबला बात नै बाज । उ जे करै, ठीके करै है ।

पुरुष ३ : त' बिलटाओल जाए अपन बाल-बच्चाके । अपन सहयोगी सबके । कैला हमहुँ सब सोचब ककरो लेल *(रुपचन्दसँ)* चल रुपचन्द ! अइ गामके इहे रीति है । जकरा लेल कनैछी तकरा आँखिमे लोरे ने ।

(दुनू उठैत अछि । ओम्हर बौधुक मुँह बनैत-बिगडैत छैक । मोनमें जेना कोनो बात औंना रहल होइ, बाज' नै चाहैअ । पुरुष १ सेहो उठैत अछि । जेबीसँ पाइ निकालि बौधुके दैत छैक आ' गुम्मसुम्म चल जाइत अछि । ओकरा जाइते पुरुष ३ आ रुपचन्द जोर सँ ठठाक' हँसि दैछ ।)

अन्हार

दृश्य ५

(बौधुक चाहक दोकान । अपरान्ह ३-४ क समय । गा.वि.स. अध्यक्ष पुरुष २ क प्रवेश । बौधु हरबराक' खुरसी बहार करैछ । कान्ह पर धयल गामछासँ ओकरा पोछैत छैक आ कनेक आगाँ बढि अध्यक्षके बैसबाक इशारा करैछ । अध्यक्ष बैसैत छथि । बौधु स्टोबमे हवा भरैत अछि । केतली चढा दैत छैक । छोटेके गिलास साफ करबाक लेल कहैत छैक ।)

पुरुष २ : बौधु, केहन चलै छौ दोकान ?

बौधु : पेट भरैछी मालिक ।

पुरुष २ : आइ तोरो दोकानके चर्चा उठल रहौ पंचैतीमे।

बौधु : *(हाथ बारैत)* जी ?

पुरुष २ : हँ, एक गोटे उठौने रहौ – ई जमीन तोरा किए देल गेल छौ से। *(बौधु चुप्प रहैत अछि, चाह बनब' लगैछ।)* सार कतेक कपटी लोक भ' गेलै आइ-काल्हि।

बौधु : अपनेक आशामे छिऐ ने मालिक।

पुरुष २ : रे जा धरि हम छी, के छुतौ तोरा। देख लेबै हम। खाली आइ कनीक गोधिआँ नै रहै।

(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश।)

पुरुष ३ : *(पुरुष २ सँ)* परनाम मालिक !

पुरुष २ : की रे, आइ ककरा माथ हाथ देलही।

पुरुष ३ : जी केकरा देबै। (कनेक बिलमि) आइ त' मुनरा साफ बाँचि गेल मालिक।

पुरुष २ : सेहे त'। तोरे सबके चलती भ' गेलौ।

पुरुष ३ : जी ?

पुरुष २ : जेना ओ पबितराके पुतहुके हाथ-पात कैलकै, हम एतेक सस्ता नै पट' दितिऐ।

(पुरुष ३ मात्र माथ डोलबैत अछि।)

कह त' चौरी-चांचर भरि गामके बौह-बेटी खेत-पथार जाइ है। एना हात-पात करतै।

पुरुष ३ : तैयो त....।

पुरुष २ : सेहे त' कहलियौ, बँचि गेलौ। गोधिआँ नै आयल रहे तैस। (ताबत चाह हाथमे दैछ बौधु।)

पुरुष ३ : *(चारूभर चकुआइत)* मालिक आब गोधिआँ अएबो ने करत।

पुरुष २ : *(हाथ रोकि)* की माने ?

पुरुष ३ : मुनराके माथ पर ककर हाथ छै बूझल हय ?

पुरुष २ : *(किछु ने बुझल सन)* रे तों एना हर फेर कैला करै छे। साफ बता ने।

पुरुष ३ : मालिक, रामअसीस बाबू सेहो अगिला चुनावमे खडा होत। से आब ओ आदमी बनब' लागल है।

(पुरुष २, एक्के बेर चिहुँकि क' ठाढ भ' जाइछ। पुरुष ३ दिश एना क' देख लगैछ जेना ओकरा काँचे चिबा जाएत। पुरुष ३ सकपका जाइत अछि। फेर पुरुष २, आगाँ बढि रहल लगैछ।)

बौधु : (हाथ जोडैत) मालिक, थीर भ'क' बैसल जाओ ने। सब ठीक भ' जएतै।

पुरुष ३ : बैसियौ मालिक। जे साँच बात रहे से कहि देली।

(पुरुष ३ जाए लगैत अछि।)

पुरुष २ : *(पुनः खुरसी पर बैसैत)* रे हरिश्चन्दर ! रे ई की बजले ?

पुरुष ३ : आँखि बइठे मालिक। रामअसीस मालिक आदमी बनब'मे लागि गेल है। गाममे एक कान दू कान भ' गेल है।

पुरुष २ : हम छिऐ त' ओहे है किने।

पुरुष ३ : ई त' अहाँ बुझै छिऐ ने। ओहो बुझे तब ने।

पुरुष २ : उ नै बुइझतै त' हमरा लेल राति दिन एक क' दितै ?

पुरुष ३ : भ' सकैअ बुझने होय जे हमरे बले जितैअ गोधिआँ त' हमहीं कैला नै.....।

पुरुष २ : नै तोँ फोड' चाहै छेँ। ई नै भ' सकैछै।

पुरुष ३ : हम त देखलिऐ राति खतवे टोलमे घुमैत। हुनका दरबज्जा पर लोकके अबरजाही सेहो बैढ गेल है।

(पुरुष ३ गुम्म अछि। किछु सोचबाक मुद्रामे देखल जाइछ। ताबत रुपचन्दक प्रवेश।)

हे देखियौ, रुपचन्द सेहो आबि गेल। की रे रामअसीस मालिकके कोनो खबरि ?

रुपचन्द : मालिक ! हम त' अखनु अपना आँखिसँ गछुलीमें मुनराके रामअसीस मालिकसँ कनफुसकी करैत देखलिऐ अ' ।

(पुरुष २ उद्विग्नतासँ छटपटाइछ, टहलब बन्द नै होइछ। ताबत् बौधु एकटा चाह ल' क' फेर पुरुष २ के दैत छैक।)

बौधु : *(चाह बढबैत)* मालिक, शांत भेल जाओ । लेल जाओ चाह ।

(पुरुष २ गुम्हरिक' बौधु पर तकैत अछि। आ छोटे चाह ल'क' घूरि जाइछ। पुरुष २ तेजीसँ प्रस्थान क' जाइछ।)

पुरुष ३ : रुपचन्द । आइ बौधुके चाहसँ जी नै भरतै । चल भट्ठी दिस ।

(दुनूके हँसैत प्रस्थान। बौधु माथपर हाथ ध' ठामहि टूलपर बैसि जाइछ।)

अन्हार

दृश्य ६

(बौधुक दोकान । ७-८ बजे भिनसरक समय । बौधु चाहक दोकानके सरिअबैत । तावत पुरुष ४ क प्रवेश ।)

पुरुष ४ : बौधु, आब अइ गाममे रहब मुश्किल भ' गेलौ ।

(बौधु हाथ रोकि जिज्ञासासँ देख लगैछ ।)

जे कहियो नई सुनने रहिऐ से बात सब होब' लागल है ।

बौधु : की भेलै काका ।

पुरुष ४ : की होतै रे । अधकारी टोल आ चौधरी टोलमे कराम कराम भ' रहल है ।

(बौधुके मुँह खुजले के खुजले रहि जाइछ ।)

अनर्थ भ' जएतै बौधु ।

बौधु : रामअसीस मालिक आ अयोधी मालिक कत' है ?

पुरुष ४ : सेहे त' लोकके अचरज लगै है। अपन-अपन टोलके सम्हार' बला सब कत' है ?

बौधु : माने दुनू गोधिआं नै है ?

पुरुष ४ : रे रहौ कि नै रहौ । बिना दुनूके जानकारीके ई होतै ?

बौधु : आखिर आगि लगाइए देलकै चण्डलवा सभ ।

पुरुष ४ : के लगा देलकै रे !

बौधु : *(जेना सम्हरि गेल हो)* नै आखिर कोइ त' दुनू भर लगौने-बझौने होतै किने ।

पुरुष ४ : से हे। अन्हेर भ' गेलै आब। गाममे बेटी-पुतहु सुरक्षित नै रहत। खेत पथार लूटि लेतै दिन देखारे। दुनूके फोरनिहार सेहे चाहैत होत ।

(बौधुसँ) ला, एकटा चाह ।

(बौधु चाह छान' लगैछ। मुदा ओकर ध्यान कतौं दूर छै। चाह टेबुल पर छिडिआए लगैछ। ई देखि ओकर बेटा छोटे टोकि दैछ।)

छोटे : बाउ हौ ! चाह हेराइ छौ ।

बौधु : *(चेहाक')* अएँ ! *(फेर सम्हरि क' चाह छानि पुरुष ४ के दैछ।)* आब हमरा सन सनके के देखतै ?

(आ लुद द' स्टूल पर बैसि जाइछ। गुमसुम। जाधरि पुरुष ४ चाह पीबैछ ओ एक शब्द नै बजैछ। अनुहारक व्यथासँ ओकर पीड़ाके बूझल जा सकैछ। ओकर बेटा छोटे, बापक रूप देखि सकदम्म भेल एक कात बैसल अछि। पुरुष ४ चाह पीबि गिलास नीचाँ ध' दैछ। आ' जेबीसँ पाई निकालि बौधुके दैछ। बौधु यंत्रमानव जकाँ पाइ ल' टिनहा बक्सामे ध' पुनः यंत्रस्थ भ' जाइछ।

बौधु : *(कनेक कालक बाद)* रे छोटे ।

छोटे : जी !

बौधु : समट सभ । आइ दोकान बन्द रहतै ।

(छोटे किछु नहि बुझि कनेक काल जेना अकबक ठाढ रहैछ ।)

सुनलही नै, दोकान बन्द रहतै। धर गिलास सभ ।

(आ अपनो स्टोवके बन्द क' दैछ। ताबत् महिला हाथमें डेकची भरि दूध लेने अबैछै। दोकानक अवस्था देखि ओ ठामहि डेकची ल' ठाढ भ' जाइछ।)

महिला : *(कनेक काल स्थिति गमि)* रे छोटे, की भेलौ रे ? *(छोटे किछु ने बजैछ।)* मर, एना कैला कैने है। सब चीज बुझाएल है।

बौधु : *(गंभीर होइत)* आइ दोकान ने खुजतै, दूध लेने जाओ घरे।

महिला : *(दूधके कठघरामे रखैत)* से कथीला ! की भेलैअ ? कोइ कुछो कहलकैअ की ?

बौधु : नै, हमरा कोइ कुछो नै कहलक। ओहिना, आइ नै काम कर' के मन होइअ'।

महिला : मर, धीयापुता की खएतै ?

बौधु : एकदिन नै कमएने धीयापुता मरि नै जएतै।

महिला : दुत् मरो दुश्मनके धीयापुता। भोरे-भोर एना कैला बजै है ?

बौधु : देख रघुनाथपुरवाली। आब हमरा सबके रोजी रोटी एत्त' नै चलतौ।

महिला : अएँ, कैला ?

बौधु : सुनलही नै, चौधरी टोल आ' अधकारी टोलमे मारि बजर' बला है।

महिला : गे दाई गे दाई ! मुंहझौंसा आगि लगाइए देलक।

बौधु : से हे त' मुख बात है रघुनाथपुरबाली। हम जनै छिऐ, लेकिन नै बाजि सकै छिऐ।

(महिला आश्चर्यसँ पति दिस तकैछ।)

हँ छोटेके माए, हम जनै छिऐ अइ आगि लगब' बलाके। पेटके खातिर चुप छी।

महिला : पेटसँ अइ बातके की मतलब ?

बौधु : मतलब है, खूब मतलब है। देखौ, अइ जग' सब किसिमके लोक अबै है। रंग-विरही बात बजै है। आ हम पेटके खातिर सब बातके घोटने रहै छी।

(महिला चुप अछि। गौरसँ सुनैत रहैत अछि।)

दोकान सार्वजनिक होइ है। कोनो बात बाजि दू त' कोइ नै आएत। कहत बात आउट करैअ'। इहे कहौ की की करू हम।

(बौधुके छटपटाहट देखि पत्नी सेहो विचलित भ' जाइछ।)

महिला : यदि एकरा किछु बजने दुनू टोलमे मारि पीट रोकल जा सकै है। त' आब चुप नइँ रहौक।

बौधु : माने, एकर बिचार है बाल-बच्चाके विलटा दू। पेट पर लात मारि दू।

महिला : जै गाछक जरिएमे घून लागल जाइत हो, तकर फलके आशा क'क' की ?

बौधु : माने ?

महिला : जे अजोधी मालिक पर सान रहै, तकरे पर ई सब वार है त' आब पेट पर ओहुना लात लगबे करतै।

(बौधु उठि क' टहल लगैछ।)

हम त' कहै छिऐ, बात सल्ट' बला है त' नइँ चुकौ।

बौधु : *(विश्वासपूर्वक)* ठीक छै। देखल जएतै।

अन्हार

दृश्य ७

(बौधुक चाहक दोकान। दोकान पर महिला आ' छोटे। सभ चीज यथावत्। पुरुष ४ क प्रवेश।)

पुरुष ४ : *(बौधुके हल्ला करैत)* बौधु, रे बौधु !

(महिला छोटेके इशारा करैछ।)

छोटे : नै है बाउ !

पुरुष ४ : *(लग जा)* कत्त गेलौ ?

छोटे : बड़का मालिक ओत्त' !

पुरुष ४ : बापरे, ई छौंडा आगिमे पाक' कैला गेलैअ'। कनिआँ, नै रोकलहो ?

महिला : ई नै जइते त' आरो अन्हेर भ' जइतै कका।

पुरुष ४ : *(आश्चर्यसँ)* की बात रहै से ?

महिला : दुनू मालिकके बीचमे आगि लगब' बलाके नाम कह' गेलैअ'।

पुरुष ४ : त' सब छार-भार एकरे पर पड़तै।

महिला : गामके इज्जत आ सुख-शान्तिस उपर हमरा सबके सुख नै है कका। गामे नइँ रहत त हमसब कत्त रहब !

(हिचुक' लगैछ ।)

पुरुष ४ : *(आँखि भरि जाइछ)* तों किए कनै छह। जै गाममे बौधुसन बेटा आ तोरा सन पुतहु रहतै, गामके किछो नै होतै। आब हमरो विश्वास भ' गेल।

(ताबत पुरुष ३ क प्रवेश। ठोढ पर कुटिल मुस्कान। ओकरा देखि महिला मुँह बिजुका लैछ ।)

पुरुष ३ : *(अपनेसँ एकटा बेंचके ससारि बैसैत)* की हो गेनाई ! टोलमे आगि लागल छौ आ तों एम्हर मजा लैछ।

(पुरुष ४ दाँत पीसि क' रहि जाइत अछि ।)

जैबा, छोडएबहो झगडा। प्रधानके हनुमान छहो तो सब की ने !

पुरुष ४ : रे रावणो बेसी दिन नै बाँचि सकल।

पुरुष ३ : तकरा लेल रामोके जनम' पड़तै किने हो *(ठठाक' हँसि दैछ)*। बेचारा गोधिआं *(छोटेसँ)* ला रे छोटे, एक कडक चाह।

पुरुष ४ : हँसिले, कहिओ तोरो सबपर जमाना हँसतौ।

पुरुष ३ : ई जमाना हँस' लाइक रहतै तखन ने हँसत हो। (फेर ठहाका)

(ताबत हाहायल-फुहायल रुपचन्दक प्रवेश ।)

रुपचन्द : भाइ, तोरे तकैत अबै छियौ। गजब भ' गेलौ।

पुरुष ३ : की भेलौ ?

रुपचन्द : बात उनटि गेलै। दुन गोधिआँके हमरा सबके चालि बुझ' में आबि गेलै।

झगडा शान्त भ' गेल है। आ' लोक सभ तोरा-हमरा तकैत एम्हरे आबि रहल हौ।

(पुरुष ३ नर्भस भ' जाइछ। उठिक' ठाढ भ' जाइछ। अनुहार पर डर पसरल देखल जा सकैछ। कनेक काल अकमकाइत अछि, फेर एक दिस भाग' लगैछ ।)

महिला : चाह नै पीथिन ?

(दुनू भागि जाइछ। पुरुष ४ क हँसी ।)

अन्हारक संग एकटा अन्तराल

(पृष्ठभूमिमे मार सारके, वा जाइ हौ, पकड ! खल्ला घीँचले ! अगिलेसबा सभ ! बाजत दिन भरि झुठ, नाम हरिशचन्दर ! *(पुनः मंच पर प्रकाश। दृश्य पूर्ववत्। पुरुष ४ बैसल। चाहक चुस्की लैत। महिला, छोटेक अनुहार पर प्रसन्नता। ताबत् एक कातसँ रामअसीस आ' बौधु अबैछ। बौधु पुरुष ३ के पकडने रहैछ। दोसर दिससँ अजोधी आ गोराइत अबैछ। गोराइत रुपचन्दके पकडने रहैछ। दुनू गोटे मंचक बीचमे आबि दोकानक बगलमे ठोंठ पकडि दुनू के धकेलि दैछ ।)*

बौधु : बोल सार ! ई खेल के कयने रहे !

पुरुष ३ : हम, हमहीं गाम भार' चाहै छली। दुनूके फोड़' चाहै छली। हमरा माफी देल जाओ प्रधानजी ! गलती भ' गेल।

गोराइत : आ' तोरा की होतौ रुपचन ?

रुपचन्द : दुहाइ माइ-बाप ! बचाओल जाए।

पुरुष २ : गोधिआं, आइ दण्डक निर्धारण अहाँ करबै। कहू की दण्ड देल जाए एहि दुनू चण्डालके ?

पुरुष १ : नै गोधिआँ, वास्तवमे दण्ड देबाक अधिकारी आइ बौधु हय। जँ बौधु आइ अपन मुँह नै खोलैत त' गाममे अन्हेर भ' जइतै।

पुरुष २ : बौधु !

बौधु : मालिक।

पुरुष २ : बाज ! एहि सार सबके की कएल जाए ?

बौधु : छोट मुँह नमहर बात। हम त' अनकर ऐंठ धो क' गुजर कर' बला लोक छी मालिक। दण्ड देबके आँट कत्तसँ करबै।

पुरुष १ : लेकिन प्रधान कहै छौ। बल्कि सौंसे गाम तोरा संग छौ बौधु। बाज निडर भ' क'।

(बौधु गुम्म अछि। जेना किछु सोचि रहल हो। कनेक कालक बाद कल जोड़ि पुरुष २ क आगाँ ठाढ भ' जाइछ।)

बौधु : मालिक, जँ हमरा सन लोकके अपने सब एतेक इज्जत देलियैअ' त हमर दूटा बात मानि लेल जाओ।

पुरुष २ : बाज ने, की कह' चाहै छे ?

बौधु : सरकार ! एहि दुनू पापी के माफ क' दिऔ !

पुरुष १ आ पुरुष २ : *(दुनू एक्केबेर)* माफ !

बौधु : हँ, मालिक। आ दुनूके समितिके काममे सेहो लगा दियौ। पेट भरल रहतै त' मनो स्वछ रहतै। इहो एकरा सबके दण्ड है।

(पुरुष ३ आ रुपचन्द आश्चर्यसँ भरल आँखिए बौधुके देखैत अछि।)

पुरुष २ : *(आँखि डबडबा)* बौधु, हमरा सबके ई गर्व ने होबाक चाही जे तोहूँ अही गामक सन्तान छेँ !

बौधु : *(भरल आँखिए)* मालिक ई त' अपने बडका लोकक बडप्पन है। हम त' चरणके धूल छिऐ सरकार।

(सभक आँखिमे प्रेम आ प्रसन्नताक नोर भरल छैक।)

अन्हार/पटाक्षेप

□□□